● वर्ष-3
● अंक-105
रायपुर, रविवार
10 दिसंबर 2023
● पृष्ठ-8
● मूल्य-3 रु.
samacharpacheesa@gmail.com

।। संगच्छध्वम् संवदध्वम् ।।

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-6›› सही कैरियर का चुनाव कैसे करें....

सोशल मीडिया पर नहीं जीते जाते चुनाव कांग्रेस पर कटाक्ष करते हुए मोदी बोले

'माई-बाप' सरकार नहीं चला रहे, बल्कि माता-पिता की सेवा करने वाली सरकार

नई दिल्ली। पीएम मोदी ने विकसित भारत संकल्प यात्रा के लाभार्थियों के साथ बातचीत के बाद अपनी टिप्पणी में कहा कि चुनाव जीतने से पहले लोगों का दिल जीतना जरूरी है और लोगों की बुद्धिमत्ता को कम आंकना उचित नहीं है। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि कुछ राजनीतिक दल यह नहीं समझते हैं कि झूठी घोषणाएं करने से कुछ हासिल नहीं होगा। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार और देश की जनता के बीच अब एक सीधा रिश्ता है, एक भावनात्मक रिश्ता है। हमारी सरकार कोई माई-बाप सरकार नहीं है; बल्कि, यह माताओं और पिताओं की सेवा करता है। जिस प्रकार एक बच्चा अपने माता-पिता की सेवा करता है, उसी प्रकार यह मोदी आपकी सेवा करने का काम करता है।

गरीबों, वंचितों की परवाह

प्रधानमंत्री ने कहा, ''मोदी गरीबों, वंचितों की परवाह करता है, जिनकी किसी को परवाह नहीं थी। जिनके लिए कार्यालयों के दरवाजे बंद कर दिए गए थे, मोदी न केवल उनकी देखभाल करता है, बल्कि वह उनकी पूजा करता है। मेरे लिए हर गरीब वीआईपी है, हर मां, बेटी, बहन वीआईपी है, हर किसान वीआईपी है, हर युवा वीआईपी है।'' उन्होंने साफ तौर पर कहा कि हमारी सरकार माई-बाप सरकार नहीं है, बल्कि माता-पिता की सेवा करने वाली सरकार है। जिस तरह एक बच्चा अपने माता-पिता की सेवा करता है, उसी तरह यह मोदी आपकी सेवा के लिए काम करता है।

चुनाव सड़कों पर जीते जाते हैं

उन्होंने मतदाताओं को धन्यवाद देते हुए कहा कि हाल के विधानसभा चुनाव परिणामों ने प्रदर्शित किया है कि मोदी की गारंटी उन लोगों को पसंद आती है जो इस पर विश्वास करते हैं। उन्होंने कहा कि लोगों का मानना है कि मोदी की गारंटी का मतलब सभी वादों को पूरा करने की गारंटी है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि हालाँकि, सवाल यह है कि देश उन लोगों पर भरोसा क्यों नहीं करता जो हमारा विरोध करते हैं। कुछ राजनीतिक दल यह समझने में विफल रहते हैं कि झूठी घोषणाएँ करने से कुछ हासिल नहीं होगा। चुनाव सड़कों पर जीते जाते हैं, सोशल मीडिया पर नहीं। उन्होंने कहा कि चुनाव जीतने से पहले लोगों का दिल जीतना जरूरी है।

मोदी की गारंटी

प्रधानमंत्री ने कहा कि देश में हाल में हुए विधानसभा चुनावों के परिणामों की आज भी बहुत चर्चा हो रही है। उन्होंने कहा, ''इन चुनाव के नतीजों ने साफ कर दिया है कि मोदी की गारंटी में ही दम है। मैं सभी मतदाताओं का आभारी हूं, जिन्होंने मोदी की गारंटी पर भरोसा किया।'' 'विकसित भारत संकल्प यात्रा को जरूरतमंदों तक पहुंचने का बहुत बड़ा माध्यम बताते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि बहुत ही कम समय में अब तक सवा करोड़ से अधिक लोग 'मोदी की गारंटी' वाली गाड़ी तक पहुंचे हैं और उसका स्वागत किया है, उससे जुड़ने की कोशिश की है और उसे सफल बनाने का काम किया है।

2025 के अंत तक 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था होगा भारत: शाह

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को कहा कि भारत 2025 के अंत तक 5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था बन जाएगा। अमित शाह आज उत्तराखंड दौरे पर थे जहां उन्होंने देहरादून के वन अनुसंधान संस्थान में उत्तराखंड वैश्विक निवेशक शिखर सम्मेलन के समापन सत्र को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व के कारण भारत ने पिछले दशक में हर मोर्चे पर तेजी से प्रगति की है। उन्होंने कहा कि अटल जी ने उत्तराखंड को बनाया था, मोदी जी उत्तराखंड को संवारा है और आज मोदी जी नेतृत्व में उत्तराखंड आगे बढ़ रहा है।

शाह ने कहा कि आज भ्रष्टाचार विरोधी दिवस है और दो दिन पहले ही एक पार्टी के सांसद के घर पर इतने सारे नोटों की अर्चभित करने वाली तस्वीरें देखीं। बैंक में काम करने वालों के अलावा किसी ने भी अपने जीवन में इतने नोट नहीं देखे

होंगे। उन्होंने कहा कि मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा की सरकारों ने पारदर्शिता के साथ विकास के सूत्र को जमीन पर उतारा है। मोदी जी ने जिस कठोरता के साथ भ्रष्टाचार के खिलाफ काम किया है, मैं विश्वास से कह सकता हूँ कि कोई कितना भी बड़ा व्यक्ति हो किसी भी भ्रष्टाचारी को छोड़ा नहीं जायेगा।

गृह मंत्री ने कहा कि 6 सालों में 30 से ज्यादा पॉलिसी बनाकर उत्तराखंड ने अपने को पॉलिसी ड्रिवेन स्टेट बनाने का काम किया है, यहाँ आपको अच्छे डेस्टिनेशन के साथ-साथ भ्रष्टाचार मुक्त शासन भी मिलेगा जो इन्वेस्टमेंट

मोदी के नेतृत्व में देश तेजी से कर रहा प्रगति

के लिए बहुत जरुरी है। उन्होंने कहा कि आजादी के 75 साल में देश ने इतनी बड़ी छलांग पहले कभी नहीं लगाई थी। शाह ने कहा कि आज दुनिया भारत की ओर आशा भरी नजरों से देख रही है। 2014 से 2023 के बीच भारत दुनिया की 11वीं अर्थव्यवस्था से उठकर पांचवीं अर्थव्यवस्था बन गया है। आजादी के 75 साल के दौरान देश ने पहले कभी इतनी बड़ी छलांग नहीं लगाई थी। शाह ने इन सबका श्रेय मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व और अपने दृष्टिकोण को वास्तविकता में बदलने की उनकी क्षमता को दिया।

गृह मंत्री ने कहा कि पीएम मोदी जलवायु परिवर्तन के खिलाफ आंदोलन का नेतृत्व कर रहे हैं, आतंकवाद मुक्त दुनिया के लिए एक अंतरराष्ट्रीय अभियान का नेतृत्व कर रहे हैं और अपने मेक इन इंडिया कार्यक्रम के माध्यम से दुनिया की धीमी जीडीपी को बढ़ावा देने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि जी-20 दिल्ली घोषणापत्र कूटनीतिक मोर्चे पर भारत की एक बड़ी उपलब्धि है, जिसे दुनिया आने वाले दशकों तक याद रखेगी। शाह ने आगे कहा कि पिछले दस साल में देश की प्रति व्यक्ति आय दोगुनी हो गई है। उन्होंने आगे कहा कि इस दौरान देशभर में साढ़े 13 करोड़ लोग गरीबी से बाहर आये हैं।

खजाने को लेकर राहुल पर भाजपा का तंज, कहा- मोहब्बत की दुकान से भ्रष्टाचार

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग के प्रभारी अमित मालवीय ने शनिवार को झारखंड, बंगाल और ओडिशा में अपने सांसद धीरज साहू के परिसरों पर आयकर छापे को लेकर कांग्रेस पार्टी और उसके नेता राहुल गांधी पर निशाना साधा। एक्स पर अमित मालवीय ने लिखा कि राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा दरअसल भारत के चोरों को जोड़ने की यात्रा थी। कांग्रेस भ्रष्टाचार की दुकान है। झारखंड में कांग्रेस के राज्यसभा सांसद धीरज साहू के ठिकानों से करीब 300 करोड़ रुपये की बरामदगी इसका जीता जागता सबूत है। एक अन्य पोस्ट में उन्होंने लिखा कि आज अंतरराष्ट्रीय भ्रष्टाचार दिवस है और आज ही भ्रष्टाचार की दुकान की मालकिन का जन्मदिन दिन भी। यह महज संयोग है!

कपिल के बयान पर हिमंत का पलटवार, कहा- जिन्हें इतिहास का ज्ञान नहीं, उन्हें नहीं बोलना चाहिए

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट में नागरिकता अधिनियम 1955 के 6ए को चुनौती देने वाली याचिकाओं की एक श्रृंखला पर सुनवाई के दौरान वरिष्ठ वकील कपिल सिब्बल ने यह टिप्पणी की कि असम कभी म्यांमार का हिस्सा था, जिसके बाद उनकी आलोचना हुई। भारत के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) डीवाई चंद्रचूड़ के नेतृत्व वाली न्यायाधीशों की पीठ ने 5 दिसंबर, 2023 को नागरिकता अधिनियम को चुनौती देने वाली याचिकाओं की 6ए खंड पर सुनवाई शुरू की। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को केंद्र सरकार को 25 मार्च 1971 के बाद असम और पूर्वोत्तर राज्यों में अवैध प्रवासियों के प्रवेश पर विस्तृत डेटा प्रदान करने का निर्देश दिया। उत्तरदाताओं की ओर से अपनी दलीलें शुरू करते हुए, वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने गुरुवार को पीठ को बताया आबादी का प्रवासन इतिहास में अंतर्निहित है और इसे मैप नहीं किया जा सकता है। असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई के दौरान असम को म्यांमार का हिस्सा कहने पर वकील कपिल सिब्बल पर पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि जिन्हें असम के इतिहास की जानकारी नहीं, उन्हें नहीं बोलना चाहिए। असम कभी भी म्यांमार का हिस्सा नहीं था। थोड़ी देर के लिए झड़पें हुईं। बस यही रिश्ता था। अन्यथा, मैंने ऐसा कोई डेटा नहीं देखा है जिसमें कहा गया हो कि असम म्यांमार का हिस्सा था

यहां विराजमान होंगे रामलला... ऐसा है अयोध्या राम मंदिर का गर्भगृह

अयोध्या। उत्तर प्रदेश के अयोध्या में राम मंदिर पर काम जोरों पर चल रहा है, श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने शनिवार को गर्भगृह की तस्वीरें शेयर की हैं। गर्भगृह भी लगभग तैयार हो गया है। यह वही स्थान है, जहां राम लला की मूर्ति स्थापित की जाएगी। चंपत राय ने (ट्विटर) पर लिखा कि, श्री राम लला का गर्भगृह लगभग तैयार है। हाल ही में लाइटिंग-फिटिंग का काम भी पूरा हो गया है। आपके साथ कुछ तस्वीरें साझा कर रहा हूं, अयोध्या में राम मंदिर अगले साल 22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा के लिए तैयार हो जाएगा। श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा (अभिषेक समारोह) में शामिल होने के लिए लगभग 6,000 लोगों को पत्र भेजेगा।

प्रमुख समाचार

नई दिल्ली में होने जा रहा जीपीएआई शिखर सम्मेलन

नई दिल्ली। भारत 12 दिसंबर से 14 दिसंबर तक ग्लोबल पार्टनरशिप ऑन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (जीपीएआई) शिखर सम्मेलन की मेजबानी करेगा। जीपीएआई 28 देशों और यूरोपीय संघ का एक मंच है जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता या एआई की चुनौतियों और अवसरों को समझने और इसके जिम्मेदार विकास को बढ़ावा देने के लिए मिलकर काम कर रहा है। शिखर सम्मेलन में आकर्षक सत्र शामिल होंगे, जिनमें अविस्मरणीय एआई एक्सपो भी शामिल है। 150 से अधिक स्टार्टअप आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में अपने नवीनतम नवाचार प्रस्तुत करेंगे। यह बैठक नई दिल्ली के भारत मंडपम में होगी। पीएम मोदी ने लिंक्डइन पर एक पोस्ट में कहा में आप सभी को एक आकर्षक कार्यक्रम में आमंत्रित करना चाहता हूं जो एआई और नवाचार में प्रगति का जश्न मनाता है- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस समिट 2023 पर वैश्विक साझेदारी! शिखर सम्मेलन 12 दिसंबर को शुरू होगा। मुझे विश्वास है कि आप इस जीवंत मंच का हिस्सा बनना पसंद करेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि भारत का दृष्टिकोण मानवता की भलाई की दिशा में एआई के उपयोग को आगे बढ़ाते हुए अनुकूल वातावरण बनाना है।

महुआ के निष्कासन से दुखी हुए भाजपा सांसद दुबे

नई दिल्ली। महुआ मोइत्रा के खिलाफ कैश फॉर क्वेश्चन का आरोप लगाने वाले बीजेपी के लोकसभा सांसद निशिकांत दुबे ने शनिवार को कहा कि यह दुखद दिन था क्योंकि एक सांसद को भ्रष्टाचार और राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दे पर निष्कासित कर दिया गया। महुआ मोइत्रा को उन आरोपों के लिए लोकसभा से निष्कासित किए जाने के एक दिन बाद भाजपा सांसद ने कहा, इसमें खुश होने की क्या बात है? यह एक दुखद दिन था। महुआ मोइत्रा के निष्कासन के बाद भाजपा सांसद की यह पहली प्रतिक्रिया थी। लगातार इस मुद्दे को उठाने वाले निशिकांत दुबे ने शुक्रवार को इस पर टिप्पणी करने से इनकार कर दिया। शनिवार को भी उन्होंने कहा कि वह इस मुद्दे पर कोई टिप्पणी नहीं करना चाहते। महीनों तक, निशिकांत दुबे और महुआ मोइत्रा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स, जिसे पहले ट्विटर के नाम से जाना जाता था, पर आमने-सामने थे। जहां मोइत्रा ने दुबे पर उनकी डिग्री को नुकसान पहुंचाने का आरोप लगाया, वहीं लोकसभा की आचार समिति द्वारा महुआ मोइत्रा के खिलाफ आरोपों की जांच शुरू करने के बाद भी तीखे हमले जारी रहे। लेकिन 8 दिसंबर को, जिस दिन महुआ मोइत्रा ने अपनी लोकसभा सदस्यता खो दी, निशिकांत दुबे ने कोई ट्वीट नहीं किया।

मुंह में घुसी मधुमक्खी व्यक्ति की दर्दनाक मौत

भोपाल। 22 वर्षीय एक व्यक्ति की पानी पीते समय गलती से मधुमक्खी निगलने और उसके बाद जीभ और भोजन नली में मधुमक्खी के काट लेने से मौत हो गई। पुलिस ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। पुलिस निरीक्षक नरेंद्र कुलस्ते ने बताया कि बुधवार रात जिला मुख्यालय से लगभग 40 किलोमीटर दूर बैरसिया इलाके में मजदूर हिरेंद्र सिंह ने अपने घर में एक गिलास पानी पीते समय गलती से मधुमक्खी को निगल लिया। कुलस्ते ने बताया कि हिरेंद्र सिंह ने सांस लेने में तकलीफ और बेचैनी की शिकायत की क्योंकि उनकी भोजन नली में सूजन थी और उसे सरकारी अस्पताल ले जाया गया। उनके अनुसार जब उनकी हालत में सुधार नहीं हुआ तो उन्हें एक निजी अस्पताल ले जाया गया, जहां बृहस्पतिवार देर रात करीब एक बजे उनकी मौत हो गई। उन्होंने बताया कि इलाज के दौरान पीड़ित व्यक्ति ने उल्टी कर मृत मधुमक्खी को निकाल दिया। पुलिस ने बताया कि बैरसिया के मानपुरा चक गांव का रहने वाला मृतक हिरेंद्र सिंह (22) खेत में मजदूरी करता था। अंधेरा होने के कारण वह यह नहीं देख सका कि पानी के गिलास में मधुमक्खी है और उसने पानी पी लिया। जब उसने उसे निगला तो मधुमक्खी जीवित थी।

धारा 370 पर सुको का फैसला सोमवार को

नई दिल्ली। अनुच्छेद 370 मामले पर उच्चतम न्यायालय का फैसला आने से पहले तमाम तरह की राजनीतिक सुगबुगाहट शुरू हो गयी है। इस बीच पुलिस प्रशासन ने सुरक्षा व्यवस्था को चाक चौबंद करने के लिए कदम उठाने शुरू कर दिये हैं। अदालत के संभावित फैसले के आलोक में कोई शांति बिगाड़ने नहीं पाये इसके लिए पुलिस प्रशासन पूरी तरह सतर्कता बरत रहा है। इस बीच, अदालत के फैसले से पहले ''कानून एवं व्यवस्था'' मुद्दे पर चर्चा करने के लिए पुलिस और प्रशासन के शीर्ष अधिकारियों ने शुक्रवार को श्रीनगर में एक बड़ी बैठक भी की। जम्मू-कश्मीर पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि किसी भी उपद्रव या सोशल मीडिया के दुरुपयोग में लिप्त पाए जाने वाले किसी भी व्यक्ति के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी। पुलिस प्रवक्ता ने कहा कि जम्मू-कश्मीर के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (कानून एवं व्यवस्था) विजय कुमार ने पीसीआर कश्मीर में पहली बार कश्मीर डिवीजन के सभी जिला मजिस्ट्रेट और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षकों की एक संयुक्त बैठक की अध्यक्षता की।

नवनिर्वाचित विधायकों के साथ जेपी नड्डा की वर्चुअल मीटिंग

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) के प्रमुख जेपी नड्डा राज्य में सरकार गठन से पहले राजस्थान में नवनिर्वाचित विधायकों के साथ एक आभासी बैठक कर रहे हैं। राज्य में नए मुख्यमंत्री पर सस्पेंस अभी भी जारी है। 30-30 विधायकों के बैच में नड्डा बीजेपी नेताओं से बात कर रहे हैं। यह कदम भाजपा द्वारा उन तीन राज्यों के लिए पर्यवेक्षकों की नियुक्ति के बाद आया है, जिनमें उसने मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान सहित हाल ही में संपन्न विधानसभा चुनावों में जीत हासिल की है। नड्डा की यह बैठक इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि राजस्थान में जिस तरह से वसुंधरा राजे ने शुरू में अपनी ताकत दिखाई उससे पार्टी के भीतर टेंशन बढ़ गई थी। भाजपा किसी भी प्रकार के संभावित विरोध को कम करने की कोशिश में है। बीजेपी ने राजस्थान में राजनाथ सिंह, विनोद तावड़े और सरोज पांडे को पर्यवेक्षक नियुक्त किया है। मध्य प्रदेश के लिए बीजेपी ने मनोहर लाल खट्टर, के लक्ष्मण और आशा लाकड़ा को जिम्मेदारी सौंपी है। छत्तीसगढ़ में बीजेपी ने अर्जुन मुंडा, सर्बानंद सोनोवाल और दुष्यंत कुमार गौतम को नियुक्त किया है। चूंकि भाजपा ने अभी तक तीन राज्यों के लिए अपने मुख्यमंत्रियों की घोषणा नहीं की है।

मोदी विरोधी हताश होकर कर रहे नॉर्थ-साउथ की बात

अवधेश कुमार

विधानसभा चुनाव के नतीजों के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जैसे ही लोकसभा चुनावों की हैट्रिक को तय बताया, विपक्ष ने उत्तर और दक्षिण भारत में पैदा हुई खाई का मुद्दा उठाना शुरू कर दिया। इसका जवाब देते हुए प्रधानमंत्री ने ट्वीट किया कि वह अपने अहंकार और अज्ञानता की खुशफहमी में रह सकता है, लेकिन लोगों को विपक्ष के विभाजनकारी अजेंडा से सावधान रहना चाहिए।

जैसे को तैसा- इमोजी से लैस इस ट्वीट में प्रधानमंत्री का हमलावर अंदाज वैसी ही अभिव्यक्ति है, जैसी लंबे समय से विरोधी उनके लिए व्यक्त करते रहे हैं। मसलन, राहुल गांधी ने उन्हें पनौती और गृह मंत्री को पॉकेटमार गैंग का सदस्य बताया था। क्रिकेट वर्ल्ड कप में भारत की हार के बाद प्रधानमंत्री के खिलाड़ियों से मिलने पर कांग्रेस के मीडिया विभाग के प्रमुख जयराम रमेश ने उन्हें ड्रामा मास्टर तक बता डाला था।

हताशा की झलक- फिर भी मौजूदा रवैया डरावना है क्योंकि इसमें दक्षिण को बाकी भारत से अलग बताया जा रहा है। भाजपा का विरोध करने के लिए इस सीमा तक जाने का अर्थ है कि विरोधी हताश हैं। हालांकि, भाजपा के लिए दक्षिण बेशक एक चुनौती है। तमिलनाडु, केरल और आंध्र प्रदेश में वह बड़ी सफलता की संभावना नहीं जगा पाई है। कुछ समय पहले कर्नाटक विधानसभा चुनाव वह हार गई थी। वहीं, तेलंगाना में उसका प्रदर्शन कांग्रेस और बीआरएस के मुकाबले काफी कमजोर रहा।

सीटों का गणित- इस दूसरे पहलू भी हैं। जिन पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव हुए, उनकी कुल 83 लोकसभा सीटों में 65 सीटें भाजपा के पास हैं, जिनमें तेलंगाना की चार हैं। ताजा विधानसभा चुनाव परिणामों के आधार पर विपक्ष का आकलन है कि राजस्थान में भाजपा की सीटें 14, छत्तीसगढ़ में 8 और मध्य प्रदेश में 25 रह जाएंगी, जबकि तेलंगाना में उसे एक भी सीट नहीं मिलेगी। यानी भाजपा को कुल 46 और कांग्रेस को 22 सीटें मिलेंगी। पिछली बार कांग्रेस को इनमें से केवल 6 सीटें मिली थीं।

सामूहिक मनोविज्ञान- लेकिन मोदी के नाम पर विधानसभा में बहुमत देने वाले मतदाता लोकसभा चुनाव में भाजपा को हरा देंगे, ऐसी कल्पना वही कर सकते हैं, जिन्हें मतदाताओं के सामूहिक मनोविज्ञान में आए बदलाव का एहसास नहीं है। तेलंगाना में पिछले विधानसभा चुनाव में भाजपा को एक सीट और 6.98% मत मिले थे। लोकसभा चुनाव में उसे 19% मत और चार लोकसभा सीटें मिलीं। इस विधानसभा चुनाव में उसे 13.9% मत मिले हैं। लोकसभा चुनाव में वह पिछले आंकड़े तक नहीं पहुंचेगी, ऐसी कल्पना बेमानी है।

ध्रुवीकरण का माहौल- मुस्लिम मतों का ध्रुवीकरण कांग्रेस के पक्ष में हुआ है। उसकी प्रतिक्रिया लोकसभा चुनाव में होगी और भाजपा का प्रदर्शन बेहतर होगा। कर्नाटक में पिछले लोकसभा चुनाव में भाजपा को 51.38% मत और 25 सीटें मिली थीं तो कांग्रेस को केवल एक। ध्यान रहे, 2018 विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने 78 और जनता दल सेक्युलर ने 39 सीटें जीती थीं। भाजपा को 104 सीटें मिली थीं। 2023 के विधानसभा चुनाव में भाजपा की सीटें घटीं, लेकिन मत समान रहा। कांग्रेस के मतों में अवश्य 5% की बढ़ोतरी हुई। यहां भी मुस्लिम वोटर जेडीएस से खिसककर कांग्रेस में गए। कर्नाटक में जेडीएस अब भाजपा के साथ आ चुकी है।

मोदी मैजिक कायम- हालिया चुनावों ने बता दिया है कि मोदी की लोकप्रियता अभी भी जबरदस्त है। इसकी पहली वजह यह है कि संघ और भाजपा के काम करने के कारण पूरे भारत में हिंदुत्व और उससे प्रेरित राष्ट्रवाद का भाव मजबूत हो चुका है। दूसरी यह कि हिंदुत्व और सनातन का विरोध करने और भाजपा सरकारों के कार्यों को सांप्रदायिक करार देने की प्रतिक्रिया में अतिरिक्त समर्थन उभरता है।

कमजोर पड़े वादे- यह स्थिति अभी ज्यादा उबाल पर है, क्योंकि तमिलनाडु में सनातन विरोधी वक्तव्य सहित हिंदू धर्म पुस्तकों और देवताओं के विरुद्ध बयानों के कारण बड़े वर्ग में विरोधी प्रतिक्रिया है। कांग्रेस के जातीय जनगणना, पुरानी पेंशन योजना और महिलाओं सहित अलग-अलग समूहों के खाते में मोटी राशि देने के वादे भी इसके सामने कमजोर पड़ गए हैं। चूंकि विरोधी इसे अभी भी स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं, इसलिए वे अपने अजेंडे से बाहर नहीं आएंगे। ऐसे में मतदाता उन सभी जगहों पर इस अजेंडा को ठुकराएंगे, जहां भाजपा का जनाधार होगा।

दूर होता असंतोष- भाजपा की सरकारों के अंदर समर्थकों और कार्यकर्ताओं की अनदेखी के कारण उसे अंदरूनी असंतोष और सत्ता विरोधी रुझान का सामना करना पड़ता है। कर्नाटक और हिमाचल प्रदेश में पार्टी अगर विद्रोहियों को संभालती या फिर आंतरिक सत्ता विरोधी रुझान को कार्यकर्ताओं और समर्थकों के बीच जाकर दूर करने की सही कोशिश करती, तो परिणाम वह नहीं आता। मध्य प्रदेश में उसकी कोशिश सफल रही। नरेंद्र मोदी के नाम पर पार्टी और संघ परिवार के अंदर नाराजगी नहीं है।

बिखरता विपक्ष- दूसरी तरफ विपक्ष की दशा क्या है? भाजपा के विरुद्ध इंडिया गठबंधन की ओर से संगठित उम्मीदवार देने की योजना विफल होती दिख रही है। इंडिया गठबंधन की पहले की तीन बैठकों में शामिल दलों के अंदर कांग्रेस के विरुद्ध नाराजगी है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने 6 नवंबर को बैठक बुलाई, लेकिन यह प्रयास असफल हो गया। यह इस बात का प्रमाण है कि इंडिया गठबंधन के अंदर सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है। अब मतदाता राष्ट्र का नेतृत्व देने के पहले इतना तो सोचेंगे ही कि सामने कौन व्यक्ति और कैसा संगठन है।

छत्तीसगढ़ के नारायणपुर में नक्सलियों ने की भाजपा नेता की हत्या

■ मंदिर से लौटते समय टंगिया से किया हमला

नारायणपुर। छत्तीसगढ़ में नक्सलियों ने एक बार फिर भाजपा नेता की हत्या कर दी। नारायणपुर के छोटेडोंगर में मंदिर में पूजा करने गए भाजपा नेता पर नक्सलियों ने टंगिया से हमला कर दिया। जिससे मौके पर ही भाजपा नेता कोमल मांडी की मौत हो गई। इससे पहले नक्सलियों ने चुनाव प्रचार के दौरान भाजपा जिला उपाध्यक्ष सागर साहू और रतन दुबे की हत्या की थी। लगातार हो रही हत्याओं से क्षेत्र में दहशत का माहौल है।

जनपद सदस्य का पति और भाजपा नेता कोमल मांझी सुबह लगभग 10 ।30 गांव में स्थित शीतला मंदिर में दर्शन के लिए जा रहा था। इसी दौरान नक्सलियों की स्माल एक्शन टीम ने उसका रास्ता रोका और टंगिया मारकर उसकी हत्या कर दी। बताया जा रहा है कि नक्सलियों ने कोमल मांझी को कई बार जान से मारने की धमकी दी थी। जिसके बाद पुलिस ने कोमल मांझी को सुरक्षा मुहैया कराई। लेकिन मांझी ने सुरक्षा लेने से इंकार कर दिया था। इस घटना से पूरे क्षेत्र में भय का माहौल है।

चश्मदीद जितेंद्र सलाम ने कहा सुबह 8 बजे शीतला मंदिर आए थे। वहां पूजा किए। साढ़े 9 बजे पूजा कर वापस जा रहे थे। इसी दौरान तीन नक्सली आए और उन्हें मार दिया। नक्सलियों के पास सिर्फ टंगिया था।

भाजपा नेता की हत्या के बाद नक्सलियों ने मौके पर एक पर्चा भी छोड़ा है। जिसमें उन्होंने लिखा है %% ग्राम छोटेडोंगर के मुण्डाटिकरा का रहने वाला कोमलसिंह प्रसाद आमदाई खदान का असली दलाल है। उसने करोड़ों रुपया खाया है। उसे हमने मौत की सजा दिया है। खदान दलाली सरकार और साम्राज्यवादियों के एजेंट मत बनो, उसकी मौत पक्की है।सुधर जाओ, मजदूरों, दलालों। हम कई बार अपील कर रहे हैं। आमदई से गद्दारी न करो। पिछले कुछ दिनों में माओवादियों द्वारा दिनदहाड़े हत्या का तीसरा मामला है। इसके पहले भाजपा जिला उपाध्यक्ष सागर साहू और रतन दुबे की भी नक्सलियों ने हत्या की है।

नक्सलियों के निशाने पर क्यों हैं बीजेपी नेता?

कांकेर। छत्तीसगढ़ में एक बार फिर से नक्सलियों ने खूनी खेल खेला है। नारायणपुर में एक शख्स को नक्सलियों ने कुल्हाड़ी से काटकर मौत के घाट उतार दिया। इस घटना के बाद से लोग दहशत में हैं। जिस शख्स की हत्या हुई। उसकी शिनाख्त कोमल मांझी के तौर पर हुई है। नक्सलियों ने हत्या के बाद वारदात स्थल पर एक हाथ से लिखा हुआ नोट छोड़ा, जिसमें मृतक के बारे में लिखा है कि, कोमल मांझी आमदई घाटी लौह अयस्क खदान के लिए एजेंट के तौर पर काम करता था, और वो काफी रुपया कमाता था। ये नक्सलियों का आरोप है।

हाल के दिनों में नक्सली वारदातों को देखकर कहा जा रहा है कि, ज्यादातर बीजेपी नेता को ही इनलोगों ने टारगेट किया है। चुनाव के बाद या चुनाव से पहले के आंकड़ों को देखने पर पता चलता है कि, जिन लोगों की नक्सलियों ने हत्या की है। वे कहीं न कहीं और किसी न किसी रूप से बीजेपी से जुड़े थे।

5 फरवरी 2023 को नक्सलियों ने नीलकंठ ककेम की हत्या कर दी। ककेम आवापल्ली बीजापुर में मंडल प्रमुख थे। 10 फरवरी 2023 को सागर साहू की हत्या हुई। वे नारायणपुर में बीजेपी के उपाध्यक्ष थे। रामधर अलामी को नक्सलियों ने 11 फरवरी 2023 को मार दिया। अलामी दंतेवाड़ा में बीजेपी से जुड़े थे। 29 मार्च 2023 को नारायणपुर में बीजेपी नेता रामजी डोडी की हत्या हुई। अर्जुन काका को नक्सलियों ने 21 जून 2023 को मौत के घाट उतार दिया। वे बीजापुर में एसटी मोर्चा के जिलाध्यक्ष थे। 20 अक्टूबर 2023 को मोहला मानपुर में बीजेपी कार्यकर्ता बिरजू तारम को नक्सलियों ने मार दिया। 4 नवंबर 2023 को नारायणपुर में बीजेपी जिला उपाध्यक्ष की हत्या कर दी गई।

ऐसा भी कहा जाता है कि, बीजेपी नेताओं को टारगेट करने के पीछे एक बड़ी वजह है। वो ये कि, बीजेपी सरकार में नक्सलियों के खिलाफ जो कार्रवाई हुई। उससे वे लोग नाराज हैं। हालांकि इसकी पुष्टि नहीं की जा सकती। क्योंकि नक्सली कभी भी किसी को भी कोई भी इल्जाम लगाकर मौत के घाट उतार देते हैं।

सुकमा में एक साथ 20 नक्सलियों का सरेंडर

सुकमा। छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित जिले सुकमा में नक्सली मोर्चे पर तैनात सुरक्षाबलों के जवानों को बड़ी सफलता मिली है। छत्तीसगढ़ सरकार की पुनर्वास नीति और जिले में चलाए जा रहे पूना नर्कोम अभियान से प्रभावित होकर शनिवार को सुकमा पुलिस के सामने पांच महिला सहित 20 नक्सलियों ने आत्मसमर्पण किया है। इस बारे में सुकमा के एएसपी ने जानकारी दी। सुकमा एडिशनल एसपी रजत कुमार ने बताया कि, नक्सलियों की खोखली विचारधारा से तंग आकर जगरगुंडा क्षेत्र में सक्रिय रह चुके पांच महिला सहित 20 नक्सलियों ने शनिवार को सुकमा पुलिस के सामने सरेंडर किया है। ये सभी मुख्यधारा में जुड़ गए हैं। इन सभी आत्मसर्पित नक्सलियों को जल्द ही पुनर्वास नीति के तहत अन्य सुविधाएं दी जाएगी। फिलहाल इन सभी समर्पित नक्सलियों को 10-10 हजार रुपए की प्रोत्साहन राशि दी गई है।

इन नक्सलियों ने किया आत्मसमर्पण- उड़का लखमा-मिलिशिया डिप्टी कमांडर, बुधराम-डीएकेएमएस सदस्य, नरसिंग-डीएकेएमएस सदस्य, टांगरु कुंजाम-डीएकेएमएस सदस्य, सोढ़ी रत्ती- मिलिशिया सदस्य, तेलाम अर्जुन- मिलिशिया सदस्य, मड़कम सुरेश- मिलिशिया सदस्य, कुंजाम नन्दा - मिलिशिया सदस्य, सोढ़ी समर - मिलिशिया सदस्य, काको चिल्को - मिलिशिया सदस्य, सोढ़ी मंगो - मिलिशिया सदस्य, सोढ़ी एंकी - केएएमएस उपाध्यक्ष, अजय टेलाम- सीएनएम सदस्य, कट्टम फूलो- सीएनएम सदस्य, कट्टम अर्जुन- मिलिशिया सदस्य, कट्टम सोमे- मिलिशिया सदस्य, सोढ़ी हड़मा- मिलिशिया सदस्य, माड़वी लखमू- मिलिशिया सदस्य, जगतराम - मिलिशिया सदस्य।

बता दें कि सुकमा जिले में सक्रिय नक्सलियों को मुख्यधारा में लाने के लिए पुलिस की ओर से जिले में पुना नार्कोम अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत सुरक्षाबल के जवान अंदरूनी इलाकों में बैनर पोस्टर लगाकर सभी नक्सलियों से आत्म समर्पण करने की अपील की जाती है। यही कारण है कि जवानों का यह अभियान एक सफल रूप ले लिया और जगरगुंडा क्षेत्र में सक्रिय रहने वाले माओवादियों ने आज पुलिस के सामने आत्मसमर्पण किया है।

सोनहत वन परिक्षेत्र में घटिया सड़क निर्माण का आरोप

बिना इंजीनियर ठेकेदार के ही बन रही सड़क

कोरिया। वनपरिक्षेत्र सोनहत में ग्राम अमहर से चंदहा तक की पांच किमी सड़क विवादों में घिरती जा रही है। इस सड़क निर्माण को लेकर ग्रामीणों ने मोर्चा खोला है।ग्रामीणों का आरोप है कि सड़क निर्माण से पहले ही 60 फीसदी से ज्यादा की राशि निकाल ली गई है।जैसे ही इस मामले ने तूल पकड़ना शुरु किया।वैसे ही वन विभाग ने आनन फानन में सड़क निर्माण का काम शुरु किया।लेकिन इस निर्माण कार्य में जिस तरह से अनियमितता बरती जा रही है,उसने एक बार फिर ग्रामीणों को गुस्से में डालने का काम किया है।

ठेकेदार पर धमकाने का आरोप

ग्रामीणों की माने तो जब उन्होंने सड़क निर्माण में हो रही अनियमितता के खिलाफ आवाज उठाई तो ठेकेदार और विभाग के कर्मचारी उन्हें धमकाने लगे।ग्रामीणों के मुताबिक ठेकेदार सड़क निर्माण में काम उच्च गुणवत्ता का होना चाहिए।लेकिन अमहर से लेकर चंदहा तक जो सड़क बनाई जा रही है।उसमें जंगल से ही मिट्टी और पत्थर निकालकर सड़क बनाई जा रही है।

सड़क निर्माण में घोर लापरवाही

वन विभाग सारे नियम को दरकिनार कर जंगल में खुदाई कर पत्थर और मिट्टी को जेसीबी की सहायता से फैलाकर सड़क बना रहा है। सड़क पर ना रोड रोलर चलाया जा रहा है और ना ही कंपैक्टर। सड़क निर्माण के दौरान साइट पर इंजीनियर भी मौजूद नहीं रहते।वहीं जिस ठेकेदार के अंडर ये काम हो रहा है वो भी मौके पर नहीं रहता है। जेसीबी चला रहे कर्मचारी से जब काम की जानकारी ली गई और ठेकेदार के बारे में पूछा गया तो उसने भी भंवरलाल का नाम लिया।वहीं वनविभाग के अंडर में काम कर रहे कर्मचारी की माने तो वो स्थानीय नहीं है।राजस्थान से आकर सड़क निर्माण का काम कर रहे हैं। आपको बता दें कि ये वही भंवरलाल हैं, जिसकी पैठ वन विभाग के निचले स्तर से लेकर मंत्रालय तक बनी हुई है। कई बार इसका नाम वन विभाग के एसडीओ अखिलेश मिश्रा के साथ भी जुड़े होने की चर्चा सामने आई है।

बस्तर में धान खरीदी केंद्र में गड़बड़ी पर हुआ एक्शन

जगदलपुर। बस्तर सहित पूरे छत्तीसगढ़ में 1 नंवबर से समर्थन मूल्य पर धान की खरीदी जारी है। लगातार बस्तर के किसान धान खरीदी केंद्रों का रुख कर रहे हैं। साथ ही बस्तर के अलग अलग स्थानों में धान खरीदी को लेकर उपार्जन केंद्र बनाए गए हैं। लेकिन कुछ उपार्जन केंद्रों में अव्यवस्था भी बनी हुई है। ऐसे ही अव्यवस्था बरतने वाले धान खरीदी केंद्रों के 2 प्रबंधक को बस्तर कलेक्टर विजय दयाराम ने निलंबित किया है। बस्तर कलेक्टर विजय दयाराम खरीदी केंद्रों का दौरा कर रहे हैं। मूली खरीदी केंद्र और सोनारपाल खरीदी केंद्र में काफी व्यवस्था देखने को मिली। किसानों से लिए गए धान को रखने के लिए बारदाने का प्रबंध नहीं किया गया था। जिससे खरीदी के बाद धान खुले में ही पड़ा हुआ था। मौसम में हो रहे लगातार बदलाव के कारण खुले में रखा धान भीगने की पूरी संभावना थी। जिसे देखकर कलेक्टर ने नाराजगी जताई और दोनों खरीदी केंद्रों के लैप्स प्रबंधकों और खरीदी प्रभारी को निलंबित कर दिया। बस्तर कलेक्टर ने खरीदी केंद्रों में नमी स्थलों पर मूरम और डस्ट से समतलीकरण कर खरीदी कार्य को सुचारू रूप से संचालित करने का निर्देश दिया है। साथ ही निरीक्षण के दौरान सीमावर्ती क्षेत्रों में विशेष सतर्कता के साथ नियमानुसार धान की खरीदी करने का भी आदेश दिया। खरीदी केंद्रों में किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं करने की बात भी बस्तर कलेक्टर ने कही थी। कलेक्टर दयाराम ने खरीदी केंद्रों में बारदाने की उपलब्धता, पुराने बारदाने की स्थिति, भंडारण, बायोमेट्रिक मशीन का प्रयोग, किसानों का आधार लिंकिंग, किसानों द्वारा किए गए नॉमिनेशन की स्थिति, व्यवस्थित स्टेकिंग कार्य, टोकन आधार पर खरीदी, बफर लिमिट की स्थिति का भी निरीक्षण किया।

सिकंदराबाद व विजयवाड़ा रेल मण्डल में तीसरी रेलवे लाइन का कार्य का असर यातायात पर

बिलासपुर। दक्षिण मध्य रेलवे, सिकंदराबाद रेल मण्डल के काजीपेट जं-कोंडापल्ली सेक्शन एवं विजयवाड़ा रेल मण्डल के विजयवाड़ा –गोधरा जं के बीच तीसरी रेलवे लाइन का कार्य जाएगा, इस लिए नॉन इंटरलॉकिंग कार्य के लिए कुछ गाडियों का परिचालन प्रभावित रहेंगे की घोषणा की गयी थी, इस में कुछ संशोधन किया गया है । इस कार्य के फलस्वरुप दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे होकर चलने वाली कुछ गाडियों का परिचालन प्रभावित रहेगा।

17 दिसम्बर को तिरुनेलवेली से चलने वाली गाड़ी संख्या 22620 तिरुनेलवेली-बिलासपुर एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग काटपाडी जंक्शन-पाकाला जंक्शन-धर्मवरम जंक्शन-रेणिगुंटा जंक्शन-गुंतकल जंक्शन–सुलेहल्ली-सिकंदराबाद-काजीपेट-बल्हारशाह होकर रवाना होगी एवं इस गाड़ी का ठहराव दुर्ग-राजनांदगाँव-गोंदिया-वडसा-नागभीड़-बल्हारशाह-सिरपुर कागजनगर-वारंगल स्टेशनों में दिया जायेगा ।

18 दिसम्बर को बिलासपुर चलने वाली गाड़ी संख्या 22815 बिलासपुर-एर्णाकुलम एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग बल्हारशाह-काजीपेट-सिकंदराबाद-सुलेहल्ली-गुंतकल जंक्शन-रेणिगुंटा जंक्शन-धर्मवरम जंक्शन-पाकाला जंक्शन-काटपाडी जंक्शन होकर रवाना होगी एवं इस गाड़ी का ठहराव वारंगल-विजयवाड़ा- रेणिगुंटा जंक्शन स्टेशनों में दिया जायेगा ।

10 एवं 17 दिसम्बर को बिलासपुर से चलने वाली गाड़ी संख्या 12851 बिलासपुर-चेन्नई सेंट्रल एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग बिलासपुरङ्कारायपुर-लखोली- विजयनगरम-दुव्वाडा-विजयवाड़ा होकर रवाना होगी एवं इस गाड़ी का ठहराव दुर्ग-राजनांदगाँव-गोंदिया-वडसा-नागभीड़-बल्हारशाह-सिरपुर कागजनगर-वारंगल स्टेशनों में दिया जायेगा।

18 दिसम्बर को चेन्नई से चलने वाली गाड़ी संख्या 12852 चेन्नई-बिलासपुर सेंट्रल एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग विजयवाड़ा-दुव्वाडा-विजयनगरम-बिलासपुर होकर रवाना होगी एवं इस गाड़ी का ठहराव वारंगल- सिरपुर कागजनगर- बल्हारशाह-नागभीड़-वडसा- गोंदिया-राजनांदगाँव-दुर्ग स्टेशनों में दिया जायेगा ।

छत्तीसगढ़ प्रमुख समाचार

बृहस्पति सिंह की गद्दारी से रामानुजगंज में हारी कांग्रेस

रामानुजगंज। हार को लेकर कांग्रेस में सियासी घमासान जारी है। रामानुजगंज सीट से हारे हुए कांग्रेस प्रत्याशी अजय तिर्की ने हार का कारण पार्टी भितरघात को बताया है। अजय तिर्की ने कहा कि बृहस्पति सिंह ने भाजपा से मिलकर पार्टी को हराने का काम रामानुजगंज में किया। बृहस्पति सिंह ने पार्टी के खिलाफ जाकर काम तो किया ही बीजेपी प्रत्याशी के लिए प्रचार भी किया। डॉ अजय तिर्की ने बृहस्पति सिंह को पार्टी से निकालने की मांग करते हुए कहा कि उनका मानसिक संतुलन भी बिगड़ गया है। बृहस्पति सिंह ने जिन शब्दों का इस्तेमाल कुमारी शैलजा और टीएस सिंहदेव के लिए किया उसको ध्यान में रखते हुए सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए। मीडिया से बातचीत में डॉ अजय तिर्की ने आरोप लगाया कि चुनाव से एक दिन पहले बृहस्पति सिंह ने घूम घूमकर कांग्रेस कार्यकर्ताओं को धमकाया और उनसे बीजेपी को वोट दिलवाया। पार्टी के खिलाफ चुनाव प्रचार के दौरान जमकर बयानबाजी की। कांग्रेस कार्यकर्ताओं को बीजेपी को वोट देने के लिए भी प्रोत्साहित किया।

एनएमडीसी स्टील प्लांट से शातिर तरीके से लोहे की चोरी

जगदलपुर। जिले के नगरनार स्थित एनएमडीसी स्टील प्लांट से लोहा चोरी का मामला सामने आया है। प्लांट में शातिर तरीके से प्लान कर चोरी की वारदात को अंजाम दिया जा रहा था। सुरक्षा में लगे केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के जवानों ने लोहा चोरी करते हुए एक ही नंबर के दो ट्रकों को पकड़ा है। उसके बाद मामले की सूचना नगरनार थाने में दी। सीआईएसएफ के जवानों को चोरी का शक तब हुआ जब माल वाहक ट्रक में लोहा ओवरलोड प्राप्त हुआ। इसके बाद सीआईएसएफ के जवानों ने ट्रक को कब्जे में ले लिया। इस बीच दोनों ट्रक के चालक मौके से फरार हो गए। एनएमडीसी के सुरक्षा अधिकारियों ने घटना को लेकर नगरनार थाने में एफआईआर दर्ज कराई। मौके पर पंहुची पुलिस ने चोरी में उपयोग हो रहे वाहनों को जब्त कर लिया है। सीएसपी विकास कुमार ने बताया की मामले की जांच शुरू कर दी गई है। वाहन मालिकों से पूछताछ के साथ ही यह लोहा कहा ले जाया जा रहा था इसकी भी जांच की जा रही है।

क्राइम ब्रांच का फर्जी अधिकारी बनकर करता था अवैध वसूली

कोरबा। क्राइम ब्रांच का फर्जी अधिकारी बन लोगों को डरा धमका कर वसूली करने के आरोपी को कोरबा पुलिस ने गिरफ्तार किया है। आरोपी बिलासपुर निवासी कई लोगों को अपना शिकार बना चुका है। वह डरा धमकाकर लोगों से अवैध वसूली करता था। जानकारी के मुताबिक, आरोपी मृत्युंजय मिश्रा ने फर्जी क्राइम ब्रांच जवान बनाकर कई जगहों पर अवैध वसूल की। कटघोरा में शुक्रवार की शाम उसने एक व्यक्ति को धमकाते चमकते हुए एक हजार रुपये की मांग की थी, उसके डर से पीड़ित ने पांच सौ रुपये उसे दे दिये। लेकिन वह पांच सौ रुपये और मांग रहा था, नहीं होने पर जेल भेजने की धमकी दे रहा था। जिसके बाद पीड़ित ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने जांच करते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर लिया।

खतरे में है कटघोरा नपा कांग्रेस अध्यक्ष की कुर्सी

कोरबा। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सत्ता छिनने के बाद नगरीय निकायों में सत्ता परिवर्तन की सुगबुगाहट शुरू हो गई है। फिलहाल कोरबा जिले में नगर निगम और दीपका नगर पालिका परिषद, कटघोरा नगर पालिका परिषद, पाली नगर पंचायत और छुरी नगर पंचायत में कांग्रेस की सत्ता है। लेकिन प्रदेश में भाजपा की सत्ता होने के कारण बीजेपी पार्षद अविश्वास प्रस्ताव लाने की तैयारी में हैं। उनको उम्मीद है निर्दलीय पार्षद के साथ सत्ता में रहना चाहेंगे। इसलिए उनको साधना कठिन नहीं है। इसके साथ ही असंतुष्ट कांग्रेस पार्षदों को भी पाले में लाया जा सकता है। बता दें कि कुछ महीने पहले कटघोरा नगर पालिका में कांग्रेस के नगर पालिका अध्यक्ष के खिलाफ पार्षदों ने मोर्चा खोला था। लेकिन मामला शांत हो गया था। यहां 15 पार्षद हैं। जिसमें कांग्रेस के 7 और बीजेपी के 7 पार्षद हैं। वहीं एक निर्दलीय पार्षद है। अब फिर से कटघोरा नगर पालिका में अध्यक्ष रतन मित्तल के खिलाफ बीजेपी पार्षदों का दल 22 दिसम्बर को अविश्वास प्रस्ताव लाने जा रहा है।

विभिन्न एक्सप्रेस गाड़ियों में अतिरिक्त कोच की सुविधा

बिलासपुर। रेलवे प्रशासन द्वारा यात्रियों की बेहतर यात्रा सुविधा व अधिकाधिक यात्रियों को कंफर्म बर्थ उपलब्ध कराने हेतु दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे से होकर चलने वाली विभिन्न एक्सप्रेस गाड़ियों में एक-एक अतिरिक्त कोच की सुविधा अस्थायी रूप से उपलब्ध कराई जा रही है ? इस सुविधा की उपलब्धता से इन गाड़ियों में यात्रा करने वाले अधिकाधिक यात्री लाभान्वित होंगे।

गाड़ी संख्या 22894/22893 हावड़ा-साईनगर शिर्डी-हावड़ा एक्सप्रेस में एक अतिरिक्त स्लीपर कोच की सुविधा हावड़ा से 14 दिसम्बर को तथा साईनगर शिर्डी से 16 दिसम्बर को उपलब्ध रहेगी। गाड़ी संख्या 12222/12221 हावड़ा-पुणे-हावड़ा दुरंतो एक्सप्रेस में एक अतिरिक्त एसी-03 कोच की सुविधा हावड़ा से 14 दिसम्बर को तथा पुणे से 16 दिसम्बर को उपलब्ध रहेगी। गाड़ी संख्या 12262/12261 हावड़ा-सीएसएमटी-हावड़ा दुरंतो एक्सप्रेस में एक अतिरिक्त एसी-3 कोच की सुविधा हावड़ा से 12 व 15 दिसम्बर को तथा सीएसएमटी से 14 व 17 दिसम्बर को उपलब्ध रहेगी।

शिक्षकों पर लगे गंभीर आरोप, 25 बच्चियों पर डाला खौलता तेल

कोंडागांव। कोंडागांव जिले से हैरान करने वाली खबर सामने आई है। जिले में स्कूल के शिक्षकों ने 25 बच्चियों के हाथ को गर्म तेल से जला दिया है। इस मामले की जानकारी के बाद तीन शिक्षकों को निलंबित कर दिया गया है। वहीं, स्कूल की प्रधानाध्यापिका की ओर से जानकारी दी गई है कि बच्चों द्वारा ही एक दूसरे का हाथ जलाया है। हालांकि बच्चों ने अपने परिजनों को शिक्षकों की मौजूदगी में हाथ जलाने की बात कही है।

ये पूरा मामला कोंडागांव जिले के माकड़ी ब्लॉक का है। ग्राम पंचायत केरावाही के शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला केरावाही में एक बच्ची की गलती की सजा 25 बच्चियों को भुगतना पड़ा। बताया जा रहा है कि 7 दिसंबर को शाला लगने के बाद किसी बच्चे ने शौचालय के आसपास शौच करके गंदा कर दिया था। इसे देखने के बाद पूछताछ की गई। हालांकि किसी बच्चे ने स्वीकार नहीं किया तो स्कूल मॉनिटर ने 25 लड़कियों के हथेली पर खौलता हुआ गरम तेल डाल दिया। इससे कुछ बच्चों के हथेली पर फफोले निकल आए।

इधर, मामले की जानकारी के बाद परिजनों का गुस्सा फूट पड़ा। परिजनों ने इसकी शिकायत अधिकारियों से की। परिजनों का आरोप है कि, मासूम बच्चों को शिक्षकों द्वारा जलाया गया है। बच्चों के हाथ में फफोले पड़ गए हैं। सभी बच्चों को गर्म तेल से जलाया गया है। जांच करके दोषियों पर उचित कार्रवाई की जानी चाहिए। स्कूल में हमारे बच्चे सुरक्षित नहीं है।

प्रधान अध्यापिका ने कहा बच्चे टॉयलेट गंदा करके रखते थे, जिससे सब परेशान थे। कई बार समझाइश देने के बावजूद बच्चों ने वही हरकत की। इसलिए साथी बच्चों द्वारा उन्हें दंड दिया गया।

इस विषय पर माकड़ी बीईओ राजू साहू से ने कहा कि,सूचना मिलते ही तुरंत खंड शिक्षा कार्यालय के अधिकारियों के साथ हम स्कूल पहुंचे। दोषियों पर कार्रवाई की जा रही है।

जिला शिक्षा अधिकारी मधुलिका तिवारी ने कहा जांच टीम के प्रतिवेदन के आधार पर शाला के स्वीपर डमरूमा को बर्खास्त कर दिया गया है। जोहरी मरकाम, पूनम ठाकुर, मिताली वर्मा को निलंबन कार्रवाई के लिए जेडी कार्यालय जगदलपुर की ओर पत्र प्रेषित किया गया है।

बता दें कि पूरे मामले की जानकारी के बाद जिला स्तर और ब्लॉक स्तर के अधिकारी स्कूल पहुंचे। साथ में बाल संरक्षण इकाई और चाइल्डलाइन के कर्मचारी भी स्कूल पहुंचे। बच्चों को स्कूल में ही उपचार कराकर बच्चों के साथ उनके परिजनों का बयान दर्ज किया गया।मामले की जानकारी के बाद तत्काल प्रभाव से तीन शिक्षकों को निलंबित कर दिया गया है। निलंबित शिक्षक मौके पर मौजूद थे।

कोरिया में जंगल से गांव में घुसे हाथियों का आतंक, गुस्से में गांववाले

कोरिया। खड़गवां के गांव में हाथियों की मौजूदगी से ग्रामीणों में दहशत जारी है। ग्रामीणों की शिकायत है कि वन विभाग को सूचना देने के बाद भी कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है। हाथियों के झुंड से बिछड़े एक हाथी ने कई घरों को अबतक नुकसान पहुंचाया है। खेतों में लगी फसलों को भी रौंद दिया है। गांव के सरपंच पति का कहना है कि सूचना देने के बाद भी वन विभाग के बीट कर्मचारी मौके पर नहीं पहुंचते। जब गांव के लोग वन विभाग से इसकी शिकायत करते हैं तो वो शिकायत को भी अनसुना कर देते हैं।

ग्राम पंचायत फुनगा के लोगों का कहना है कि बीते कई दिनों से एक हाथी इलाके में उत्पात मचा रहा है। हाथी अपने झुंड से बिछड़ा हुआ है जिसे वन विभाग की टीम भी जंगल की ओर खदेड़ने में नाकाम साबित हो रही है। हाथी ने अबतक कई घरों को निशाना बनाया है और घर में रखा धान भी खा गया है। वन विभाग के कर्मचारियों पर आरोप है कि वो ग्रामीणों की शिकायत को गंभीरता से नहीं लेते। जब गांव वाले उनसे मौके पर पहुंचने को कहते हैं तो वो पहले तो आनाकानी करते और जब आते हैं तो देर से पहुंचते हैं। ग्रामीण अब वन विभाग के आला अफसरों से रेंजर और बीट गार्ड की शिकायत का मन भी बना रहे हैं।

वन परिक्षेत्र अधिकारी खड़गवां से जब मीडियाकर्मियों ने हाथी के उत्पात को लेकर जब सवाल पूछा तो वो जवाब देने से करतराते रहे। अधिकारी का करना था कि वो दिन रात ड्यूटी पर लगे रहते हैं उसके बाद भी ग्रामीणों को उनसे शिकायत ही रहती है। वन विभाग अगर इस तरह से काम करता रहा तो ग्रामीणों को अपना घर छोड़ पलायन को मजबूर होना पड़ेगा।

झारखंड के कांग्रेसी सांसद के पास 200 करोड़ की नगदी पकड़ी गई, तो बाकी सभी कांग्रेस सांसदों के पास कितनी नकदी होगी?

इसलिए कांग्रेस नेता यहां जांच एजेंसी का कर रहे थे विरोध

रायपुर। झारखंड से कांग्रेस सांसद धीरज साहू से जुड़े व्यापारिक समूह के ठिकानों पर झारखंड, ओडिशा और पश्चिम बंगाल में 6 दिसंबर से जारी आयकर विभाग की छापेमारी में अब तक 200 करोड़ रुपये से अधिक का कैश बरामद हो चुका है। अभी बरामद रुपयों की गिनती चल ही रही है। ऐसे में यह जब्त राशि और बढ़ सकती है। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश महामंत्री एवं विधायक केदार कश्यप ने भाजपा कार्यालय एकात्म परिसर में आयोजित संवाददाता सम्मलेन को संबोधित करते हुए इस रेड में देश में कानूनी तरीके से जब्त की जानेवाली सबसे बड़ी नकदी होने का अनुमान लगाया जा रहा है। जब्त नोटों की संख्या इतनी ज्यादा कि उन्हें गिनने के लिए मंगवाई गई मशीनें भी खराब हो गई। कार्रवाई को इतना गोपनीय रखा गया था कि रेड में शामिल लोगों को मालूम नहीं था कि कहां जाना है। कश्यप ने सवाल करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ कांग्रेस के नेता ईडी, सीबीआई और

आईटी का विरोध कहीं इसलिए तो नहीं कर रहे थे कि कहीं उनके भी अवैध उगाही का पैसा उजागर न हो जाए। क्या जब्त किए गए अरबों रुपए में कहीं प्रदेश के कांग्रेसी नेताओं के पैसे तो नहीं है। श्री कश्यप ने सवाल किया कि छत्तीसगढ़ में कांग्रेस ने जो तीन परदेसिया सांसद छत्तीसगढ़ के बाहर के बनाए हैं क्या उसमें भी इसी प्रकार का भ्रष्टाचार हुआ है? पत्रकार वार्ता में प्रदेश प्रवक्ता केदार गुप्ता, प्रदेश मीडिया प्रभारी अमित चिमनानी, प्रदेश मीडिया सह प्रभारी अनुराग अग्रवाल मौजूद रहे।

कश्यप ने कहा कि एक तरफ घर्मांडिया गठबंधन है जहां भ्रष्टाचार, कमीशनखोरी, लूट-खसोट और दलाली की गारंटी है और दूसरी तरफ आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की गारंटी है जो भ्रष्टाचार को जड़ से खत्म करने के लिए प्रतिबद्ध है। श्री कश्यप ने कहा कि जनता से जो लूटा है, उसकी पाई-पाई लौटानी पड़ेगी, यह मोदी की गारंटी है। मोदी की गारंटी मतलब बेईमानों से पाई-पाई वसूलने की गारंटी। भाजपा प्रदेश महामंत्री एवं विधायक श्री कश्यप ने कहा कि अगर एक कांग्रेसी सांसद के पास 200 करोड़ की नगदी पकड़ी गई, तो बाकी सभी कांग्रेस सांसदों के पास कितनी नकदी होगी? इस हिसाब से तो गांधी परिवार विश्व का सबसे भ्रष्टाचारी परिवार है। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी, ऐसे कितने आर्टिस्ट है कांग्रेस में जनता से लूटे हुए पैसे का हिसाब-किताब हर रोज़ लिया जायेगा, ये मोदी की गारंटी है। कांग्रेस ने अपने नेताओं को करप्शन का एटीएम बना दिया है।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस की मोहब्बत की दुकान से निकला नोटों का पहाड़ और गिनती जारी है। मोहब्बत की दुकान के एक फ्रेंचाइजी के गल्ले में 200 करोड़ के नोट मिले हैं। खूब बिक्री हुई है लगता है। सारी मोहब्बत कुछ यूं बिक गई तभी पास में सिर्फ हिंदुत्व और सनातन से नफरत बची है। उन्होंने कहा कि जहां कांग्रेस का जनप्रतिनिधि होगा, वहां इस बात की गारंटी है कि वह भ्रष्टाचार अवश्य ही करेगा। ऐसे घोटाले और भ्रष्टाचार के सेंटर का नाम यदि गांधी करप्शन सेंटर% रख दिया जाए तो यह गलत नहीं होगा क्योंकि ऐसे सभी कामों की ट्रेनिंग उन्हीं के द्वारा दी जाती है।

भाजपा प्रदेश महामंत्री एवं विधायक श्री कश्यप ने कहा कि आईएनडीआई एलायंस यानी घर्मांडिया गठबंधन के नेता भ्रष्टाचार कर लूट खसोट करते हैं और जब ईडी, सीबीआई और आईटी जैसी जांच एजेंसी अपना काम करती हैं, तो सारे भ्रष्टाचारी नेता एक होकर जांच एजेंसियों पर आरोप लगाने लगते हैं।श्री कश्यप ने कहा कि भ्रष्टाचार की काली कमाई से कांग्रेस नेता अपनी जेब भर रहे हैं और यह सारा पैसा गांधी परिवार की तिजोरी तक जाता है। यह सारा पैसा जनता की गाढ़ी कमाई का है, जिससे कांग्रेस के नेता अपने घर भर रहे हैं। यह बहुत आश्चर्यजनक है कि खड़गे, सोनिया गाँधी और राह गांधी चुप्पी इन मामलों साधे बैठे हैं।

कश्यप ने कहा कि घर्मांडिया गठबंधन के नेता भारत की अर्थव्यवस्था, गरीबों की कमाई और नागरिकों अधिकारों को दीमक की तरह खा रहे हैं। कांग्रेस पार्टी, आप, टीएमसी सहित आईएनडीआई एलायंस के दल आज भ्रष्टाचार का पर्याय बन गए हैं। क्या कारण रहा कि चतरा से 2 बार लोकसभा का चुनाव हार चुके धीरज साहू को कांग्रेस ने तीसरी बार राज्य सभा सांसद बनाया।

प्रधानमंत्री 11 को विकसित भारत एडटेड 2047 आइडियास पोर्टल का शुभारंभ करेंगे

रायपुर। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी 11 दिसंबर को विकसित भारत एडटेड 2047 आइडियास पोर्टल का शुभारंभ करेंगे और वर्चुअल संबोधन देंगे। इस कार्यक्रम का वर्चुअल प्रसारण राजभवन में आयोजित किया गया है। प्रधानमंत्री के संबोधन के पश्चात राजभवन में राज्यपाल श्री विश्वभूषण हरिचंदन की अध्यक्षता में एक कार्यशाला आयोजित की जाएगी जिसमें राज्य के सभी शासकीय एवं निजी विश्वविद्यालयों के कुलपतिगण उपस्थित रहेंगे। इस संबंध में नीति आयोग नई दिल्ली द्वारा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग आयोजित कर कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी दी गई। बैठक में राज्यपाल के सचिव श्री अमृत खलखो, उप सचिव श्री दीपक अग्रवाल उपस्थित थे। 11 दिसंबर को होने वाली कार्यशाला में विकसित भारत, सशक्त भारतीय, सम्पन्न और टिकाऊ अर्थव्यवस्था, सुशासन एवं सुरक्षा, विश्व में भारत आदि विषयों पर चर्चा की जायेगी।

संक्षिप्त समाचार

छत्तीसगढ़ी कलाकार दिलीप षड़ंगी ने कांग्रेस से दिया इस्तीफा

रायपुर। छत्तीसगढ़ी कलाकार और कांग्रेस नेता दिलीप षड़ंगी ने कांग्रेस पार्टी छोड़ दी है। उन्होंने पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दिया है। साथ ही उन्होंने सांस्कृतिक प्रकोष्ठ के अध्यक्ष पद से भी इस्तीफा दे दिया है। दिलीप षड़ंगी ने पार्टी पर उपेक्षा का आरोप भी लगाया है। षड़ंगी ने पीसीसी चीफ दीपक बैज को लिखे अपने पत्र में कहा है कि 'मैं साढ़े पांच वर्ष पहले नौकरी छोड़कर कांग्रेस में कलाकारों की सेवा, एवं कलाकारों के माध्यम से कांग्रेस की सेवा करने हेतु कांग्रेस पार्टी में प्रवेश किया था। किन्तु लगातार पांच वर्षों तक मैं कांग्रेस के समर्थन में गाना बनाता रहा, गाता रहा, एवं कलाकारों के सम्मेलन हेतु लगातार प्रयास करता रहा। तद्पश्चन्द्र में माननीय मुख्यमंत्री महोदय, संस्कृति मंत्री महोदय, एवं कई वरिष्ठ सम्माननीय कांग्रेसी नेताओं से निवेदन करता रहा किन्तु केवल आश्वासन मिला। किसी प्रकार का सहयोग नहीं मिला जिस वजह से छत्तीसगढ़ के बहुत सारे कलाकार हमारी पार्टी से एवं हमारे सांस्कृतिक प्रकोष्ठ के दूर होते गए। जिसका खामियाजा भुगतना पड़ा। अतः इस तारतम्य में मैं अपने आपको समस्त दायित्वों सहित कांग्रेस के सांस्कृतिक प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष एवं कांग्रेस के प्राथमिक सदस्यता से त्यागपत्र दे रहा हूं। अतः मेरा त्याग पत्र स्वीकृत करें।'

नवनिर्वाचित विधायक मोतीलाल से चंद्रशेखर साहू मिले

रायपुर। पूर्व कृषि मंत्री चंद्रशेखर साहू सपरिवार रायपुर ग्रामीण के नवनिर्वाचित विधायक मोतीलाल साहू को उनके निवास अश्वनी नगर में मिलकर उन्हें गुलदस्ता भेट कर बधाई दी। नवनिर्वाचित विधायक साहू उनके बहन दामाद है, इस दौरान किसान नेता चंद्रिका साहू भी उपस्थित थे।

सड़क सुरक्षा तथा यातायात प्रबंधन संबंधी दी गई जानकारी

रायपुर। सरदार वल्लभभाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी हैदराबाद से वर्ष 2023 में प्रशिक्षण उपरांत छत्तीसगढ़ कैडर के 04 आईपीएस परिवीक्षाधीन अधिकारियों ने इंडक्शन कार्यक्रम के अंतर्गत राज्य नियंत्रण कक्ष/डॉयल 112, इंस्टीट्यूट ऑफ ड्रायविंग एण्ड ट्रैफिक रिसर्च सहित राज्य के सड़क सुरक्षा परिदृश्य, यातायात प्रबंधन एवं सड़क सुरक्षा के कार्यों की जानकारी प्राप्त की। वर्तमान में सुभाषचन्द्र बोस राज्य पुलिस अकादमी, चंदखुरी में प्रशिक्षणरत इन अधिकारियों को एआईजी ट्रैफिक एवं अध्यक्ष-अंतर्विभागीय लीड एजेंसी (सड़क सुरक्षा) श्री संजय शर्मा द्वारा प्रवर्तन, जनजागरूकता/यातायात शिक्षा आदि के बारे में अवगत कराया गया। साथ ही राज्य में सड़क दुर्घटनाओं के प्रमुख कारण, नियंत्रण हेतु प्रयास, अभियांत्रिकीय सुधार/प्रयास, आपातकालीन देखभाल, ड्रायविंग सिम्प्लेटर, ई-ट्रैक, यातायात कर्मियों एवं वाहन चालकों के प्रशिक्षण, ड्रायविंग लायसेसिंग, फिटनेस जांच के नवीन उपायों सहित सड़क दुर्घटनाओं के विश्लेषण तथा समीक्षा के संबंध में विस्तृत जानकारी दी गई।

स्वास्थ्य कर्मियों और प्रदाताओं पर हमलों को रोकने के लिए कड़े कदम उठाना जरुरी

रायपुर। नई दिल्ली में इंडियन मेडिकल एसोसिएशन और एसोसिएशन ऑफ हेल्थ केयर प्रोवाइडर्स इंडिया (एएचपीआई) के संयोजन में नेशनल हेल्थ समिट का आयोजन पिछले दिनों किया गया जिसमें स्वास्थ्य प्रदाताओं और स्वास्थ्य कर्मियों पर होने वाले हमलों को रोकने के लिए उठाये जाने वाले जरुरी कदमों पर व्यापक चर्चा हुई। एएचपीआई छत्तीसगढ़ चैप्टर के महासचिव अतुल सिंघानिया ने बताया कि छत्तीसगढ़ का प्रतिनिधित्व करते हुए इस हेल्थ समिट में एएचपीआई छत्तीसगढ़ अध्यक्ष डॉ. राकेश गुप्ता शामिल हुए। समिट में आईएमए के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. शरद अग्रवाल, महासचिव डॉ. अनिल कुमार नायक, आगामी चयनित राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. आर. वी. अशोकन, एएचपीआई के पैट्रन डॉ. एलेक्जेंडर थॉमस, राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. भाबातोष बिश्वास, डायरेक्टर जनरल डॉ. गिरिधर ज्ञानी समेत देश भर के स्वास्थ्य विशेषज्ञ शामिल हुए और इस विषय पर अपनी बात रखी।

पार्टी के अंदर के कुछ नेताओं ने मिलकर षड्यंत्र रचा: केरकेट्टा

रायपुर। कांग्रेस में जारी बयानबाजी के बीच अब एक और पूर्व विधायक ने पार्टी नेताओं के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। पाली तानाखार से पूर्व विधायक मोहित राम केरकेट्टा ने नेताओं पर बड़ा आरोप लगाया है। उनका आरोप है कि आदिवासी विधायकों को हारने का षडयंत्र किया गया है। पार्टी के अंदर के कुछ नेताओं ने मिलकर षड्यंत्र रचा है। केरकेट्टा ने कहा कि प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज को भी गुमराह किया गया। बैज को चुनाव लड़ाने का काम षड्यंत्रकारियों ने किया है। केरकेट्टा ने अपने विधानसभा क्षेत्र पालीतानाखार में पीसीसी महामंत्री प्रशांत मिश्रा द्वारा पार्टी विरोधी काम करने का आरोप भी लगाय है। वहीं बड़ी संख्या में सिटिंग विधायकों की टिकट काटने को भी नुकसान बताया है। पूर्व विधायक ने कहा कि पीसीसी में संगठनात्मक बदलाव की जरूरत है। बता दें कि इससे पहले भी कई विधायकों ने अपने ही पार्टी के नेताओं को टारगेट किया है। इन पूर्व विधायकों ने इशारों-इशारों में छत्तीसगढ़ के आला नेताओं को ही हार का जिम्मेदार बताया है। वहीं पूर्व मंत्री जयसिंह अग्रवाल ने तो यहां तक कह दिया है कि मंत्रियों को पावर नहीं दिया गया, एक ताकत ही सरकार चला रही थी।

भाजपा विधायक दल की बैठक आज, सीएम नाम की होगी घोषणा

रायपुर/दिल्ली। दिल्ली से रायपुर लौटे भाजपा प्रदेश अध्यक्ष अरुण साव ने कहा कि रविवार को भाजपा विधायक दल की बैठक होगी। साव ने कहा- छत्तीसगढ़ की जनता ने ऐतिहासिक जनमत दिया है। इसके लिए छत्तीसगढ़ की जनता का आभार व्यक्त करता हूं। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं ने जी जान से मेहनत की। उन सबको बधाई देता हूं। सीट के हिसाब से भी ऐतिहासिक जीत हुई है। इस जीत का श्रेय जनता को जाता है। हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी को जाता है। उनकी गारंटी ने ही भाजपा को छत्तीसगढ़ में जीत दिलाई है। प्रदेश के नेता, प्रभारी, सह प्रभारी ने भाजपा कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाया। केंद्र के सभी दिग्गज मंत्री लगातार छत्तीसगढ़ आए जिसका फायदा भाजपा को मिला।

अरुण साव ने बताया रायपुर में भाजपा विधायक दल की बैठक रविवार को होगी। इसके लिए तीन पर्यवेक्षकों की नियुक्ति हुई हैं। केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा, केंद्रीय मंत्री सर्वानंद सोनोवाल और भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव दुष्यंत कुमार गौतम विधायकों की बैठक लेंगे। प्रदेश प्रभारी ओम माथुर, सह प्रभारी मनसुख मांडविया और नितिन नबीन भी बैठक में शामिल होंगे।

छत्तीसगढ़ के नए मुख्यमंत्री के लिए अब ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ेगा। रविवार को छत्तीसगढ़ को नया सीएम मिल सकता है। छत्तीसगढ़ में सीएम नाम फाइनल करने के लिए भाजपा ने तीन पर्यवेक्षकों को नियुक्त किया है जो जल्द सीएम का नाम तय करेंगे। सीएम रेस में कई

नाम आगे चल रहे हैं। जिनमें प्रमुख रूप से भाजपा प्रदेश अध्यक्ष अरुण साव, पूर्व आईएएस ओपी चौधरी, पूर्व केंद्रीय मंत्री विष्णुदेव साय का नाम चर्चा में है। आदिवासी महिला सांसद रेणुका सिंह और गोमती साय का नाम भी शामिल हैं। लता उसेंडी भी सीएम रेस में है। शुक्रवार को पूर्व सीएम रमन सिंह ने विधायक दल की बैठक के बाद सीएम की घोषणा की बात कही थी। रमन सिंह ने लोकसभा चुनाव की सभी 11 सीटें भी भाजपा की झोली में आने का भी दावा किया।

छत्तीसगढ़ में सीएम पद के उम्मीदवार के लिए शुक्रवार को भाजपा ने पर्यवेक्षक नियुक्त कर दिए। केंद्रीय जनजातीय मंत्री अर्जुन मुंडा, केंद्रीय बंदरगाह जहाजरानी जलमार्ग और आयुष मंत्री सर्वानंद सोनोवाल और भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव दुष्यंत कुमार गौतम को पर्यवेक्षक बनाया है।

नए सीएम के नाम पर चर्चा के लिए भाजपा के पर्यवेक्षक के रायपुर पहुंचने के बाद विधायक दल की बैठक होगी। जिसमें दिल्ली भाजपा से तय नामों पर एक बार फिर चर्चा होगी। इसके बाद सीएम नाम पर मुहर लग जाएगी। बताया जा रहा है कि रविवार तक भाजपा छत्तीसगढ़ के नए सीएम का ऐलान कर सकती है।

छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव 2023 में 90 विधानसभा सीटों में भाजपा ने 54 सीटें जीती है जबकि सात 2018 से सत्ता में रही कांग्रेस को 35 सीटें मिली। 1 सीट गोंडवाना गणतंत्र पार्टी को मिली है। कयास लगाए जा रहे हैं कि बीजेपी किसी ओबीसी या आदिवासी मुख्यमंत्री को चुनेगी। छत्तीसगढ़ में ओबीसी आबादी 45 प्रतिशत है। ओबीसी सीएम नाम पर अरुण साव सबसे आगे चल रहे हैं। बात करें छत्तीसगढ़ में आदिवासी आबादी को यहां 32 फीसदी लोग आदिवासी है। बीजेपी ने इस बार अनुसूचित जनजाति (एसटी) के लिए आरक्षित 29 सीटों में से 17 सीटें जीतीं। सूरजपुर जिले की अनारक्षित प्रेमनगर सीट से भी पार्टी का एक आदिवासी उम्मीदवार जीता। विशेष रूप से, भाजपा ने 2018 में आदिवासियों के लिए आरक्षित केवल तीन सीटें जीती थीं। भाजपा ने आदिवासी बहुल सरगुजा संभाग की सभी सीटों पर जीत हासिल की। कांग्रेस ने 2018 में संभाग की सभी 14 सीटें जीती थीं।

हार के बाद पूर्व विधायक बृहस्पत सिंह का बयान फोटो शूट करवाती रही प्रभारी सैलजा

रायपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की करारी हार के बाद कांग्रेसी नेता एक-दूसरे पर हार का ठीकरा फोड़ रहे हैं। वहीं कांग्रेस के पूर्व विधायक बृहस्पत सिंह ने प्रदेश कांग्रेस प्रभारी कुमारी सैलजा और निवर्तमान उपमुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव पर जमकर निशाना साधा है। बृहस्पति सिंह ने प्रभारी सैलजा को बड़े नेताओं के हाथों बिकने का आरोप लगाया है। इसके साथ ही कांग्रेस नेता राहुल गांधी से उन्हें हटाने की मांग की है। इतना ही नहीं उन्होंने टीएस सिंहदेव पर भी तीखा प्रहार किया है। उन्होंने आरोप लगते हुए कहा कि भाजपा की जीतने का श्रेय टीएस सिंहदेव को जाता है। उन्होंने ये भी कहा कि भाजपा को उन्हें राज्यपाल बना देना चाहिए।

बृहस्पत सिंह ने कहा कि प्रदेश प्रभारी सैलजा टीएस सिंहदेव को प्रमोट करती रही। ऑब्कापुर में डिप्टी सीएम कार चला रहे थे और प्रभारी फोटो शूट करवा रही थीं। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रदेश प्रभारी टिकट वितरण के मामले में बिक चुकी थी। उन्होंने कहा कि वहीं पहले के प्रभारियों ने बहुत इमानदारी के साथ काम किया था। सैलजा यहां डैमेज कंट्रोल नहीं कर पाई।

शुक्रवार को रायपुर पहुंचे पूर्व एमएलए बृहस्पत सिंह ने कहा कि टिकट देने से कोई चुनाव नहीं जीतता, जब तक उस क्षेत्र की जनता और कार्यकर्ताओं का सहयोग ना मिले। कांग्रेस नेताओं का घमंड सिर चढ़कर बोल रहा था। ऐसा लग रहा था कि जिसको ये टिकट दे देंगे, वही चुनाव जीत जाएगा। उन्होंने कहा कि एक तरफ कांग्रेस पीएम मोदी को घेरने में लगे थे,तो दूसरी ओर टीएस सिंहदेव स्वयं मंच से बोल रहे थे कि मोदी बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। एक तरफ कांग्रेस नेता कहते रहे कि हमने सभी वादे पूरे किए हैं, तो दूसरी ओर सिंहदेव कहते थे कि केवल 12 वादे ही पूरे किए हैं। ऐसे में जनता कांग्रेस को क्यों वोट देंगे।

पूर्व विधायक बृहस्पति सिंह के बयान पर एक्शन कांग्रेस ने कारण बताओ नोटिस किया जारी

रायपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की करारी हार के बाद कांग्रेस के पूर्व विधायक बृहस्पति सिंह ने प्रदेश कांग्रेस प्रभारी कुमारी सैलजा और निवर्तमान डिप्टी सीएम टीएस सिंहदेव को लेकर कई गंभीर आरोप लगाए थे। इसपर पार्टी ने बृहस्पति सिंह को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। पार्टी ने तीन दिन के भीतर जवाब मांगा है। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस ने परिणाम आने से पहले ही कई कांग्रेसी नेताओं को कारण बताओ नोटिस जारी कर चुका है। इसके साथ ही कई नेताओं को पार्टी से बाहर का रास्ता भी दिखा दिया है। इस बार कांग्रेस के प्रभारी महामंत्री मलकीत सिंह गैदू ने पूर्व विधायक को नोटिस जारी किया है। दिग्गज नेताओं के ऊपर इस तरह के बयान पर पार्टी कार्रवाई कर सकती है।

कांग्रेस नेताओं के खिलाफ बयानबाजी करने वालों पर सख्त कार्यवाही की जरूरत: महंत

रायपुर। छत्तीसगढ़ कांग्रेस इलेक्शन कम्पेन कमेटी के चेयरमैन व विधानसभा अध्यक्ष व शक्ति के नव निर्वाचित विधायक डॉ. चरणदास महंत इन दिनों दिल्ली प्रवास पर है, विधानसभा चुनाव 2023 में मिले जनादेश का सम्मान करते हुए प्रदेश भर के मतदाताओं का आभार जताया, साथ ही डॉ. महंत ने कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव व प्रदेश प्रभारी व पूर्व केंद्रीय मंत्री कुमारी शैलजा के खिलाफ दिये गए बयानबाजी की तल्ख लहजे में निंदा करते हुए गहरी नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि इस तरह की बयानबाजी करने वालो के खिलाफ सख्त कार्यवाही किये जाने की जरूरत है।

डॉ. महंत ने कहा कि कांग्रेस पार्टी को तोड़ने- बांटने व कमजोर करने वाली की अब कांग्रेस में कोई जरूरत नही है ! इस तरह के लोगों के खिलाफ अनुशासन का डंडा चलाने की जरूरत पर बल देते हुए कहा कि राष्ट्रीय नेतृत्व कुमारी शैलजा व प्रदेश के सह प्रभारियों ने कांग्रेस को एकजुट रखा, बावजूद किसी को अपनी बात रखना है तो पार्टी फोरम में रखे, पार्टी के बाहर बात रखने वालों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जरूरत है। डॉ. महंत ने कहा कि पूर्व उप मुख्यमंत्री टीएस बाबा सहित अन्य कांग्रेस नेताओं के खिलाफ बयानबाजी करने वालों को बर्दाश्त नही किया जाएगा।

बृहस्पति सिंह को तत्काल पार्टी से निष्कासित किया जाए : कन्हैया

कांग्रेस नेता कन्हैया अग्रवाल और जागेश्वर राजपूत ने पूर्व विधायक बृहस्पति सिंह को कांग्रेस से तत्काल प्रभाव से निष्कासित करने की मांग करते हुए कहा कि कांग्रेस की प्रदेश प्रभारी राष्ट्रीय महासचिव कुमारी शैलजा और पूर्व उपमुख्यमंत्री श्री टी एस सिंहदेव के खिलाफ लगाए गए गंभीर आरोपों के बाद तत्काल कार्रवाई की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ में कांग्रेस को कमजोर करने का काम पूर्व विधायक बृहस्पति सिंह ने ही प्रारंभ किया था जब उन्होंने प्रदेश के वरिष्ठ मंत्री श्री टी एस सिंहदेव पर हत्या के हत्या का आरोप लगाया था , गंभीर आरोप लगाने के बावजूद बृहस्पति सिंह पर कार्यवाही नहीं किए जाने के कारण कांग्रेस में अनुशासनहीनता और असंतोष लगातार बढ़ा।

जय सिंह अग्रवाल ने छत्तीसगढ़ में हार का ठीकरा भूपेश बघेल पर फोड़ा

- पूर्व मंत्री ने कहा- मंत्रियों के अधिकार छीने, भ्रष्ट नौकरशाहों को नियुक्त किया, गांवों पर ज्यादा फोकस

कोरबा। कोरबा विधानसभा से तीन बार के विधायक और कांग्रेस सरकार में राजस्व मंत्री रहे जयसिंह अग्रवाल ने हार का पूरा ठीकरा भूपेश बघेल पर फोड़ा है। जयसिंह ने कहा कि इसबार का चुनाव पूरी तरह से केंद्रीकृत रहा। मंत्रियों के अधिकार छीन लिए गए। सिर्फ एक शक्ति ने पूरे चुनाव में काम किया। चुन चुनकर सुनियोजित षड्यंत्र के तहत ऐसे अधिकारियों को नियुक्त किया गया, जिन्होंने विकास कार्य को बाधित किया। इससे ना सिर्फ कोरबा जिले में बल्कि पूरे प्रदेश में कांग्रेस डैमेज हुई। सरकार की छवि खराब हुई। जिसका खामियाजा कोरबा ही नहीं पूरे प्रदेश में कांग्रेस को भुगतना पड़ा। सरकार चली गई और भाजपा को बड़ा जनादेश मिला।

जयसिंह ने कहा कि 2018 के चुनाव में कांग्रेस पार्टी ने जिस तरह से चुनाव लड़ा था। वो साल 2023 के चुनाव में नहीं दिखा। जय सिंह ने कहा साल 2018 के चुनाव के समय हम विपक्ष में थे। प्रदेश अध्यक्ष बघेल भूपेश बघेल थे। टीएस सिंहदेव के पास भी अहम जिम्मेदारी थी। तब हम एकजुट थे। जिसके कारण 2018 में बड़ा जनादेश मिला था। लेकिन हम उसका सम्मान नहीं कर पाए। सरकार बनने का बाद बीते 5 साल जो सरकार चलाने का तरीका था, वह एक ही स्थान पर केंद्रीकृत हो गया। मंत्रियों को जो अधिकार मिलने चाहिए थे। वह नहीं मिल पाए, सिर्फ एक स्थान से सेंट्रलाइज होकर कुछ चुनिंदा लोगों के साथ 5 साल तक काम किया गया। जिससे सरकार के कामकाज पर आरोप लगे। खींचतान का माहौल बना। इन बातों का नुकसान कांग्रेस को हुआ।

आगे जयसिंह ने कहा प्रदेश भर के शहरी क्षेत्र में कांग्रेस बुरी तरह से पिछड़ गई। सरकार ने किसानों पर ध्यान दिया, बेशक उनके काम भी हुए। लेकिन ऐसा लगता है कि, हमारे मुखिया को कहीं ना कहीं यह विश्वास था कि ग्रामीण क्षेत्र की सारी सीट जीत लेंगे तो शहरी क्षेत्र की ज्यादा जरूरत नहीं

पड़ेगी, लेकिन यह भी गलत साबित हुआ। शहरों की सीट भाजपा को मिल गई, शहरी क्षेत्र की सारी सीटों पर कांग्रेस को हार मिली।

कोरबा विधानसभा की हार पर चर्चा करते हुए जयसिंह ने कहा कोरबा विधानसभा में मैंने कई काम कराया। जो काम नहीं हुए, उसके लिए सार्वजनिक उपक्रमों से सहायता ली। एसईसीएल से सड़क के लिए 199 करोड़ रुपये सैंक्शन कराए।इसके बाद एनटीपीसी से करोड़ों का फंड विकास करने के लिए सैंक्शन कराया। लेकिन कलेक्टर ने इस फंड को रोक दिया, काम नहीं होने दिया। पूर्व सीएम ने नौकरशाहों पर कई आरोप लगाए। अग्रवाल ने कहा ऐसे अधिकारियों को चुन- चुनकर कोरबा भेजा गया जिन्होंने काम में रुकावट पैदा की। कई चालू कामों को रोक दिया गया। जितने भी अधिकारी यहां भेजे गए, एसपी अभिषेक मीणा, भोजराम पटेल, उदय किरण से लेकर कलेक्टर रानू साहू और संजीव झा ने माहौल खराब किया। सरकार के खिलाफ एंटी इनकबेंसी पैदा की। षड्यंत्र के तहत अपराध भी कराए गए और उन सब का खामियाजा कांग्रेस भुगत रही है।

जय सिंह अग्रवाल ने कहा मैंने तब सीएम भूपेश बघेल को पत्र भी लिखा था। जिसमें मैंने इस बात का जिक्र किया कि इस तरह के भ्रष्ट अधिकारियों को कोरबा से नहीं हटाया गया और यही कार्यशाली रही तो हम कोरबा की चारों सीट हार जाएंगे, पहले हम कोरबा की चार में से तीन सीट जीत लेते थे। लेकिन इस बार हम सिर्फ एक ही सीट जीते हैं।

पूर्व मंत्री जयसिंह यही नहीं रुके। उन्होंने कहा व्यवस्था इतनी केंद्रीयकृत हो गई थी कि छत्तीसगढ़ में सिर्फ एक टीम काम कर रही थी। डिप्टी कलेक्टर स्तर की एक अधिकारी मंत्रियों और बड़े-बड़े नेताओं को संचालित करने का कोशिश करती थी। विधायकों के लेटर पैड पर मंत्रियों की शिकायत करवाई जाती थी। जबकि विधायकों को पता ही नहीं होता था कि उनके लेटर पैड पर क्या लिखा गया है। इस तरह के कार्य किए गए, कई गलत काम हुए। इसपर पार्टी को मंथन करना चाहिए।विचार विमर्श किया जाना चाहिए। कभी भी व्यवस्था को ऐसे तानाशाही पूर्वक नेतृत्व करने वाले व्यक्ति को न सौंपा जाए, जिससे कि पार्टी बर्बादी के कगार पर पहुंच जाए। जिस तरह से सरकार का संचालन किया गया, उसका परिणाम आज हम सभी के सामने है।

छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव में मिली करारी हार के बाद कांग्रेस इससे उबरने का प्रयास कर रही है। चूक कहां हुई इस पर मंथन हो रहा है। शुक्रवार को दिल्ली में पार्टी प्रमुखों के साथ बैठक हुई। इधर कोरबा के टीपी नगर स्थित कांग्रेस कार्यालय में भी समीक्षा बैठक की गई जहां कार्यकर्ताओं ने अपनी पीड़ा पूर्व मंत्री जयसिंह अग्रवाल के सामने निकाली।

कांग्रेस और कैश पर्यायवाची शब्द

नीरज कुमार दुबे

कांग्रेस के नेताओं ने चौकीदार चोर है का नारा लगाया लेकिन यह नारा नहीं चला, कांग्रेस के नेताओं ने उद्योगपति गौतम अडाणी पर निशाना साधते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को घेरना चाहा और मोदानी नाम से अभियान चलाया लेकिन इस अभियान की हवा निकल गयी। जानते हैं क्यों? क्योंकि जनता जानती है कि कलियुग में उल्टा चोर कोतवाल को डांटे वाली कहावत ही चरितार्थ होती है। कांग्रेस के राज्यसभा सांसद धीरज प्रसाद साहू के परिसरों से नकदी के जो बंडल पर बंडल निकल रहे हैं वह इस बात की जरूरत पर भी बल दे रहे हैं कि चोर की दाढ़ी में तिनका वाली कहावत को बदला जाये क्योंकि चोर अब डकैत बन चुके हैं और तिनका अब बड़ी-बड़ी तिजोरियों का रूप ले चुका है। झारखंड के कांग्रेस सांसद के यहां से बरामद हो रही नकदी सिर्फ टैक्स की चोरी नहीं है, यह सिर्फ गरीबों के हक का पैसा नहीं है, यह मध्यमवर्गीय परिवारों के हक पर भी कुठाराघात है जो समय पर सारी ईएमआई, कर और अन्य प्रकार के भुगतान करते हैं और बजट में जरा-सी राहत पाने का इंतजार करते रहते हैं। देखा जाये तो मोदी सरकार जब भ्रष्टाचारियों के खिलाफ ईडी की छापेमारी करवाती है तो धर्माडिया गठबंधन के सारे नेता एकत्रित हो जाते हैं और आरोप लगाते हैं कि लोकतंत्र की हत्या की जा रही है। यही नहीं, ईडी के समन को तवज्जो नहीं देते हुए नेता चुनावी रैलियों के लिए निकल जाते हैं और कहते हैं कि मोदी सरकार हम पर अत्याचार कर रही है और हम ऐसे समन से डरने वाले नहीं हैं। लेकिन वक्त आ गया है कि भ्रष्ट राजनीतिज्ञों के मन में कानून का डर पैदा किया जाये। सवाल उठता है कि यह लूट और डकैती नहीं तो क्या है कि राजनीतिज्ञों के घर से सामान्य बैंक ब्रांचों से ज्यादा कैश बरामद हो रहा है, राजनीतिज्ञों के घर से सुनार की दुकान से ज्यादा सोना बरामद हो रहा है और राजनीतिज्ञों के घर से बिल्डरों की भांति जमीन-जायदाद के तमाम कागजात बरामद हो रहे हैं? यह सब देखकर आम आदमी के दिल से यही निकल रहा है कि देश को लूटने वालों से पाई-पाई वसूलनी ही चाहिए। वैसे, झारखंड में ऐसा नहीं है कि पहली बार किसी कांग्रेसी नेता के यहां से नकदी बरामद की गयी है। इससे पहले कांग्रेस के कुछ विधायक बड़ी मात्रा में नकदी के साथ पकड़े गये थे तब दिखाने के लिए कांग्रेस ने उन्हें पार्टी से निलंबित कर दिया था लेकिन जल्द ही पार्टी में उनकी बहाली भी हो गयी थी। अब झारखंड में कांग्रेस सांसद के यहां से बरामद नकदी दर्शा रही है कि कांग्रेस और कैश पर्यायवाची शब्द होते जा रहे हैं। बात सिर्फ झारखंड की भी नहीं है। अभी हाल ही में छत्तीसगढ़ में महादेव एप मामले के दौरान तत्कालीन मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को 500 करोड़ रुपए से ज्यादा नकद देने की बात भी सामने आई थी। सवाल उठता है कि जब राज्यों में कांग्रेस इतने बड़े घोटालों के आरोपों के घेरे में आती है तो जरा कल्पना कीजिये कि केंद्र में उसके सत्ता में रहने के दौरान घोटालों की राशि का दायरा क्या रहता रहा होगा? बहरहाल, देखा जाये तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सही ही कहा है कि देशवासी इन नोटों के ढेर को देखें और फिर इनके नेताओं के ईमानदारी के भाषणों को सुनें। आज कांग्रेस को शर्मसार होने की जरूरत है और अपने भ्रष्ट नेताओं को पार्टी से बाहर का रास्ता दिखाने की जरूरत है। कांग्रेस के नेता दूसरों के लिए ये सीएम या चालीस प्रतिशत कमीशन वाली सरकार या मोदानी जैसे अभियान चलाते हैं। इसलिए पार्टी को यह बताना चाहिए कि झारखंड में कांग्रेस सांसद से संबद्ध ठिकाने से

लोकसभा ने फिर से 2005 दोहरा दिया

अजय सेतिया

आखिरकार लोकसभा ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित करके महुआ मोइत्रा को लोकसभा से बर्खास्त कर दिया। सब कुछ 2005 की तरह दोहराया गया, तब भारतीय जनता पार्टी ने यह कहते हुए वाकआउट कर दिया था कि सांसदों को दी जा रही सजा उनके अपराध की तुलना में ज्यादा है। इस बार विपक्ष पूरी तरह कन्फ्यूज था कि वह महुआ मोइत्रा का बचाव करे या न करे, क्योंकि महुआ मोइत्रा एक इंटरव्यू में खुद अपना अपराध कबूल कर चुकी थी कि उसने लोकसभा की वेबसाईट का अपना लॉग-इन पासवर्ड उद्योगपति दर्शन हीरानन्दानी को दे रखा था। विपक्ष का पूरा जोर इस बात पर था कि महुआ मोइत्रा को अपना पक्ष रखने का मौका दिया जाए। लेकिन स्पीकर ने उसी तरह उन्हें मौका नहीं दिया जैसे 2005 में आरोपी दस सांसदों को नहीं दिया गया था। भाजपा के बहुमत को देखते हुए इंडी एलायंस के सभी सदस्यों ने वोटिंग से पहले वाकआउट कर दिया। वाकआउट करने और बाद में मीडिया के सामने कांग्रेस संसदीय दल की नेता सोनिया गांधी भी मौजूद थी, जिन्होंने 2005 में लोकसभा के दस सांसदों और राज्यसभा के एक सांसद की सदस्यता समाप्त करने को प्रतिष्ठा का सवाल बना लिया था।

2005 में जो कुछ हुआ, सदन और आचरण कमेटी ने वही दोहराया। फर्क सिर्फ इतना था कि तब स्पीकर सोमनाथ चटर्जी ने दस सांसदों के आचरण की जांच का काम पवन बंसल की रहनुमाई में बनाई गई विशेष कमेटी को सौंपा था, जबकि मौजूदा स्पीकर ने महुआ मोइत्रा के मामले में जांच का काम सदन की आचरण कमेटी को सौंपा था। 2005 में कोबरापोस्ट डॉट काम नाम की एक वेबसाइट ने सांसदों का स्टिंग आपरेशन किया था। कोबरापोस्ट डॉट काम के दो पत्रकारों ने सांसदों को अपने जाल में फंसाने के लिए उनसे मुलाकात की और उनकी दिलचस्पी वाले विषयों पर कुछ सवाल दिए, उन्होंने सांसदों को कुछ पैसे डोनेशन के रूप में भी दिए थे। यह सारी प्रक्रिया स्टिंग आपरेशन का हिस्सा थी, जो भी बातचीत हो रही थी, उसे गुप्त कैमरों से रिकार्ड कर लिया गया था।

कोबरापोस्ट के लोगों ने सांसदों को 15 हजार से लेकर 1,10, 000 रूपए तक दिये थे। कुछ सांसदों ने लिफाफा लेने से इंकार भी किया था, लेकिन उन्हें जबरदस्ती लिफाफा थमाया गया था। यानी सब कुछ उन्हें फंसाने के लिए प्रायोजित किया गया गेम था। इन सांसदों में से सिर्फ एक सांसद सत्ताधारी कांग्रेस का था, जबकि बाकी सारे सांसद विपक्षी दलों के थे, जिनमें सबसे ज्यादा लोकसभा के छह सांसद भाजपा के थे, भाजपा का ही सातवाँ सांसद राज्यसभा से था, लोकसभा के दो सांसद बसपा और एक सांसद राष्ट्रीय जनता दल का था। कोबरापोस्ट डॉट काम ने गुप्त कैमरों से रिकार्डिंग किए गए वीडियो ईंडिया टुडे को बेच दिए थे, जिसने इस स्टिंग आपरेशन को संसद सत्र के दौरान 12 दिसंबर 2005 को आजतक न्यूज चैनल पर चलाया था। क्योंकि संसद का शीतकालीन सत्र चल रहा था, इसलिए सदन में खूब हंगामा हुआ। इस पर उसी दिन लोकसभा स्पीकर सोमनाथ चटर्जी ने चंडीगढ़ के कांग्रेस सांसद पवन बंसल की अध्यक्षता में एक विशेष जांच कमेटी का गठन किया। राज्यसभा ने भी अपने एक सांसद पर फैसला करने के लिए वही तरीका अपनाया, दोनों कमेटियों को सिर्फ दस दिन में रिपोर्ट देने को कहा गया था।

इन दस दिनों के अंदर कमेटी ने कोबरापोस्ट डॉट काम के मालिक अनिरुद्ध बहल ने ईंडिया टुडे के संपादक और सभी दस सांसदों को भी तलब करके उनका पक्ष सुना। ईंडिया टुडे ने स्वीकार किया था कि उसने प्रसारित किए गए वीडियो कोबरापोस्ट से 48 लाख में खरीदे थे। आजतक ने वे सभी वीडियो संसदीय समिति को सौंप दिए थे, जो अब संसदीय रिकार्ड का हिस्सा है। सभी दस सांसद लोकसभा की विशेष कमेटी के सामने पेश हुए थे, जिन्होंने कोबरापोस्ट डॉट काम के मालिक अनिरुद्ध बहल से आमना सामना करवाने की मांग की थी, लेकिन बंसल कमेटी ने उनकी मांग अस्वीकार कर दी थी। कमेटी ने दी गई समय सीमा दस दिन में अपनी रिपोर्ट लोकसभा स्पीकर को सौंप दी थी, और अगले दिन 23 दिसंबर को रिपोर्ट सदन में रखी गई, आधा घंटा रिपोर्ट पर बहस हुई।

भाजपा के वाकआउट के दौरान सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास कर के लोकसभा के सभी दस सदस्यों की सदस्यता समाप्त कर दी गई थी। विपक्ष के नेता लाल कृष्ण आडवानी ने वाकआउट से पहले कहा था कि अपराध के मुकाबले सजा ज्यादा है । सोनिया गांधी ने बाद में पवन बंसल को रेल मंत्री बना दिया था, जिसे बाद में उनके भांजे पर रिश्वतखोरी के आरोप में मंत्रीमंडल से इस्तीफा देना पड़ा था। महुआ मोइत्रा के मामले में फर्क यह था कि उनके एक्स ब्वायफ्रेंड जय अनंत देहाद्राई ने भाजपा के सांसद निशिकांत दुबे से मिलकर उन्हें बताया था कि महुआ मोइत्रा किस तरह एक उद्योगपति दर्शन हीरानन्दानी के हाथों में खेल रही है। उन्होंने बाकायदा लिखकर दिया कि वह किस तरह विदेश यात्राओं की टिकट, होटलों के बिल और महंगे गिफ्ट लेकर दर्शन हीरानन्दानी के स्वार्थ वाले सवाल पूछ रही हैं। जबकि सांसद के रूप में उन्हें एक भी सवाल नहीं पूछे। इस पर निशिकांत दुबे ने जय अनंत हीरानन्दानी की चिट्ठी समेत लोकसभा स्पीकर को शिकायत भेजी। लोकसभा स्पीकर ओम बिड़ला ने सोमनाथ चटर्जी की तरह स्पेशल कमेटी बनाने के बजाए, सदन की आचरण कमेटी को मामला सौंपा। आचरण कमेटी ने वही प्रक्रिया अपनाई, जो पवन बंसल कमेटी ने अपनाई थी। दर्शन हीरानन्दानी ने हल्फिया बयान में उन सब आरोपों की पुष्टि की, जो जय अनंत देहाद्राई और निशीकांत दुबे ने लगाए थे। बल्कि अपने हल्फिया बयान में महुआ मोइत्रा की विदेश यात्राओं और होटलों के बिलों का खर्चा उठाने की पुष्टि की।

दर्शन ने यह भी कहा कि महुआ मोइत्रा ने लोकसभा की वेबसाईट का लॉग-इन और पासवर्ड भी उन्हें दे दिया था, जिस पर वह खुद ही उनकी तरफ से लोकसभा में पूछे जाने वाले सवाल अपलोड करते थे। जबकि किसी भी सांसद को जब लॉग-इन पासवर्ड दिया जाता है, तो उससे दस्तखत करवाए जाते हैं कि वह अपने लॉग-इन पासवर्ड को किसी के साथ शेयर नहीं करेगा। जय अनंत देहाद्राई और निशीकांत दुबे ने भी उसी तरह कमेटी के सामने पेश होकर अपनी गवाही दी, जैसे अनिरुद्ध बहल और आजतक के संपादक ने गवाही दी थी। 2005 में सिर्फ दस दिन में सांसदों को बर्खास्त करने की प्रक्रिया खत्म कर दी गई थी, जबकि महुआ मोइत्रा के मामले में दो महीने का समय लगा, क्योंकि उनके खिलाफ शिकायत सत्रावसान के दौरान मिली थी। आठ दिसंबर को जब आचरण कमेटी की रिपोर्ट सदन में रखी गई, और सांसदों को उसे पढ़ने के लिए सिर्फ दो घंटे का समय दिया गया तो इस पर विपक्ष ने कड़ा एतराज किया। लेकिन लोकसभा स्पीकर और सत्ताधारी दल के पास अपने बचाव के लिए 2005 का उदाहरण था।

जो कुछ तब कांग्रेस और मौजूदा इंडी एलायंस के दलों ने किया था, वही अब दोहराया जा रहा था। उस समय प्रणब मुखर्जी सदन के नेता थे, क्योंकि प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह लोकसभा के सदस्य नहीं थे। मनमोहन सिंह राज्यसभा में और प्रणब मुखर्जी लोकसभा में सदन के नेता थे। विपक्ष ने जब सांसदों को पक्ष रखने देने की मांग की थी, तो प्रणब मुखर्जी ने दलील दी थी कि उन्हें कमेटी के सामने अपना पक्ष रखने का मौका दिया गया था। इस बार कांग्रेस ने अपने वरिष्ठ वकील सांसद मनीष तिवारी को महुआ मोइत्रा के बचाव में उतारा था। लेकिन उनकी सारी दलीलों की काट 2005 में दस सांसदों की बर्खास्ती प्रक्रिया में मौजूद थी। कांग्रेस के नेता अधीर रंजन चौधरी ने महुआ मोइत्रा का बचाव करने के बजाए रिपोर्ट पढ़ने के लिए पर्याप्त समय नहीं दिए जाने का सवाल उठाया। कांग्रेस की तरफ से मनीष तिवारी की भी पहली दलील यही थी कि आधे घंटे में इतनी लंबी रिपोर्ट कैसे पढ़ी जा सकती है। महुआ मोइत्रा का बचाव करने के बजाए उनकी दूसरी दलील यह थी कि महुआ मोइत्रा को सदन में अपना पक्ष रखने का मौका दिया जाए।

तृणमूल कांग्रेस के सांसद सुदीप बंदोपाध्याय की भी यही मांग थी, लेकिन स्पीकर ने यह कहते हुए महुआ मोइत्रा को सदन में अपना पक्ष रखने का मौका नहीं दिया कि 2005 में लोकसभा स्पीकर सोमनाथ चटर्जी ने सदन में मौजूद दस सांसदों को अपना पक्ष रखने का मौका नहीं दिया था, क्योंकि आरोपी सांसद को कमेटी में अपना पक्ष रखने का मौका दिया गया था। स्पीकर ओम बिड़ला ने सुदीप बंधोपाध्याय को याद दिलाया कि 2005 में वह इसी सदन में मौजूद थे। उन्होंने मनीष तिवारी की इस दलील को भी ठुकरा दिया कि सदन इस समय अदालत की तरह काम कर रही है, इसलिए सभी राजनीतिक दलों की ओर से व्हिप जारी किया जाना गलत है। स्पीकर ने उन्हें टोकते हुए कहा कि सदन अदालत नहीं है, अदालत का काम कमेटी ने किया था, सदन कमेटी की रिपोर्ट पर विचार कर रहा है, यह अदालत नहीं है। मनीष तिवारी की सारी दलीलों का जवाब 2005 के घटनाक्रम में था। छवि यह बन रही है कि भारत के सांसद किसी के लिखे सवाल और भाषण पढ़ते हैं, इसलिए दोषी सांसद को बर्खास्त करके हमें दुनिया को संदेश देना चाहिए कि भारत की संसद ऐसे सांसदों को बाहर निकालने की हिम्मत रखती है, जो संसद की गरिमा को नुकसान पहुंचाते है।

भारतीय ज्ञान परंपरा....

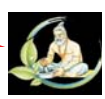

यागचूडामण्युपनिषद् (भाग-9)

गतांक से आगे...

निरंजन, निर्विकल्प, नामरहित, शुद्ध, बुद्ध, नित्य, अनादिनिधन (शाश्वत) एक तुरीय, भूत, भविष्य, वर्तमान में एक रस रहने वाले परब्रह्म से स्वयं प्रकाशरूपी पराशक्ति प्रकट हुई। आत्मा (परमात्मा) से आकाश प्रकट हुआ, आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथ्वी प्रकट हुई। सदाशिव, ईश्वर, रुद्र, विष्णु और ब्रह्मा ये पाँच देवता इन पाँच महाभूतों के पाँच स्वामी हैं। इसमें ब्रह्माजी उत्पत्ति करने वाले, विष्णु पालन करने वाले तथा रुद्र संहार करने वाले हैं। सतोगुणरूप विष्णु, रजोगुणरूप ब्रह्मा, तमोगुणरूप रुद्र हैं। देवताओं में पहले ब्रह्माजी की उत्पत्ति हुई। सृष्टि की उत्पत्ति के लिए ब्रह्मा, सृष्टि के पालन अर्थात् विकास करने के लिए विष्णु, सृष्टि के विनाश के लिए रुद्र, भोगों के लिए इन्द्र की उत्पत्ति सर्वप्रथम हुई। लोक, देव, तिर्यक, नर और स्थावर इन सबकी उत्पत्ति ब्रह्माजी के द्वारा हुई। उनमें मनुष्य आदि का शरीर पंचभूतों के संयोग से बनता है। ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय, ज्ञान के विषय, प्राण आदि पंच वायु, मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार (अपेक्षाकृत) स्थूल रचना होने से (इनके मूल कारण को) स्थूल प्रकृति कहा जाता है। कर्मेन्द्रिय, ज्ञानेन्द्रिय, ज्ञान के विषय (शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध), पंचवायु, मन और बुद्धि को सूक्ष्म (लिंग) शरीर कहा जाता है। कारण शरीर तीन गुणों से युक्त है। स्थूल, सूक्ष्म और कारण ये तीन शरीर सबके होते हैं। जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय चार अवस्थाएँ होती हैं, तैजस, प्राज्ञ, विश्व और आत्मा ये चार पुरुष इन सब (अवस्थाओं) के अधिपति हैं। विश्व स्थूल का नित्य भोग करने वाला है, तैजस एकान्त का भोग करने वाला है, प्राज्ञ आनन्द का भोगने वाला है और सबका साक्षी (आत्मा) इससे परे कहा जाता है।

क्रमशः..

वीर नारायण सिंह

रवि मिरी

वीर नारायण सिंह छत्तीसगढ़ राज्य के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, एक सच्चे देशभक्त व गरीबों के मसीहा थे। 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के समय उन्होने जेल से भागकर अंग्रेजों से लोहा लिया था जिसमें वे गिरफ्तार कर लिए गए थे। 10 दिसम्बर 1857 को उन्हें रायपुर के जय स्तम्भ चौक पर फाँसी दे दी गयी।

अंग्रेजो के खिलाफ 1857 की क्रांति की आग देश के अलग-अलग कोने में धधक उठी थी। इस आग की लपटे छत्तीसगढ़ में भी देखने को मिल रही था। सोनाखान के जमींदार नारायण सिंह ने अंग्रेजों को कड़ी बार धूल चटाया था। अंग्रेजों से लड़ने के लिए नारायण सिंह ने खुद की एक बड़ी सेना तैयार की थी। जिसमें करीब 900 की संख्या में ग्रामीण उनके साथ बंदूकधारी अंग्रेजी सेना से भिड़ गए थे।

1857 की क्रांति के समय अंग्रेजी सेना छत्तीसगढ़ में अपना कब्जा जमाना चाहती थी। तब नारायण सिंह के पिता रामराय सिंह ने अंग्रेजों के खिलाफ मोर्चा खोल दिया था। इसके बाद जब नारायण सिंह जमींदार बने उसी समय सोनाखान क्षेत्र में अकाल पड़ा। ये 1856 का समय था जब एक साल नहीं लगातार तीन साल तक लोगों को अकाल का सामना करना पड़ा। इससे इंसान तो इंसान जानवर भी दाने-दाने के लिए तरस गए। इतिहासकार बताते है कि सोनाखान इलाके में एक माखन नाम का व्यापारी था। जिसके पास अनाज का बड़ा भंडार था। इस अकाल के समय माखन ने किसानों को उधार में अनाज देने की मांग को ठुकरा दिया। तब ग्रामीणों ने नारायण सिंह से गुहार लगाई और जमींदार नारायण सिंह के नेतृत्व में ग्रामीणों ने व्यापारी माखन के अनाज भण्डार के ताले तोड़ दिये।

नारायण सिंह ने गोदामों से उतना ही अनाज निकाला जितना भूख से पीड़ित किसानों के लिये आवश्यक था। इस लूट की शिकायत व्यापारी माखन ने रायपुर के डिप्टी कमिश्नर से कर दी। उस समय के डिप्टी कमिश्नर इलियट ने सोनाखन के जमींदार नारायण सिंह के खिलाफ वारन्ट जारी कर दिया और नारायण सिंह को सम्बलपुर से 24 अक्टूबर 1856 में बन्दी बना लिया गया। कमिश्नर ने नारायण सिंह पर चोरी और डकैती का मामाला दर्ज किया था।

सोनाखान के किसान अपने नेता को जेल में में देखकर दुःखी थे, लेकिन उनके पास कोई विकल्प नहीं था पर उसी समय देश में अंग्रेजी शासन के खिलाफ विद्रोह शुरू हो गया। इस अवसर का फायदा उठाकर संबलपुर के राजा सुरेन्द्रसाय की मदद से किसानों ने नारायण सिंह को रायपुर जेल से भगाने की योजना बनाई और इस योजना में सफल हुये। अब अंग्रेज इस घटना से आग बबूला हो गए और नारायण सिंह की गिरफ्तारी के लिए एक बड़ी सेना भेज दी। नारायण सिंह ने सोनाखान में अंग्रेजों से लड़ने के लिए अपनी खुद की सेना बना ली थी। उन्होंने 900 जवानों के साथ अंग्रेजी सेना का मुंह तोड़ जवाब देने के लिए तैयार थे।

कितनी जायज है कांग्रेस प्रायोजित उत्तर-दक्षिण की जंग?

उमेश चतुर्वेदी

तेलंगाना के मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने से पहले रेवंत रेड्डी ने एक विवादित तुलना कर दी। उन्होंने कहा कि उनका डीएनए तेलंगाना का है। केसीआर की तरह उनका डीएनए बिहारी का नहीं है। असल में 10 साल तेलंगाना के मुख्यमंत्री रहे के. चंद्रशेखर राव बिहार में कुर्मी जाति से आते हैं जिनके पूर्वज तेलंगाना में बस गये थे। इसलिए रेवंत रेड्डी ने बिहारी का ताना मारकर एक बार फिर उत्तर दक्षिण का बंटवारा पैदा करने का प्रयास किया है।

रेवंत रेड्डी ने अपनी जीत पर जो कहा है बाकी तीन राज्यों में अपनी हार पर भी कांग्रेस यही कहने की कोशिश कर रही है कि उत्तर के लोगों की राजनीतिक समझ ही कम है इसलिए वो कांग्रेस को वोट नहीं दे रहे हैं। इसलिए कांग्रेस इको सिस्टम द्वारा तेलंगाना की जीत के बहाने यह स्थापित करने की कोशिश की जा रही है कि विंध्य पर्वत से उत्तरी इलाके के लोगों की सोच सांप्रदायिकता और जातिवाद के इर्द-गिर्द ही घूमती है। जबकि दक्षिण के लोग राजनीतिक रूप से कहीं ज्यादा सचेत, प्रगतिशील और परिपक्व हैं। कांग्रेस इसके जरिए यह जताने की कोशिश कर रही है कि उसके नेता राहुल गांधी की सोच वक्त से आगे की है। चूंकि दक्षिण के लोगों की सोच ज्यादा परिपक्व है, इसलिए वे राहुल की बातों पर भरोसा कर रहे हैं। कांग्रेस के अनुसार कर्नाटक और तेलंगाना की जीत इसकी ही परिचायक है। नैरेटिव के बहाने उत्तर बनाम दक्षिण की जंग करने-कराने का अपने यहां लंबा इतिहास रहा है। उत्तर में अपेक्षाकृत गोरी और साफ चमड़ी वाले लोगों को लेकर कहा जाता रहा है कि विंध्य के उत्तर वाले लोग विदेशी धरती से आए आर्य लोगों की संतान है। माना जाता रहा कि विंध्य के दक्षिण वाले लोग बुनियादी रूप से भारत के ही लोग हैं। हालांकि

दयानंद सरस्वती जैसे लोग इस वैचारिकी का विरोध करते रहे हैं। आज के दौर के आक्रामक राजनेता सुब्रमण्यम स्वामी हों या फिर मानवशास्त्री, सबका मानना है कि चाहे उत्तर के लोग हों या दक्षिण के नागरिक, वे बुनियादी रूप से एक ही हैं।

उत्तर और दक्षिण का विभाजन आठवीं सदी तक भी तेज था। शंकराचार्य ने पूरब, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण में शंकराचार्य पीठ स्थापित करके एक तरह से देश की इस विभाजनकारी सोच पर लगाम लगाने की कोशिश की थी। भारत सरकार अधिनियम के तहत जब 1937 में राज्यों में चुनाव हुए, तब से ईवी रामास्वामी पेरियार की अगुआई में शुरू हुआ हिंदी विरोध भी उत्तर बनाम दक्षिण की ही जंग का विस्तार है। आजादी के बाद जब राजनीतिक कारणों से चक्रवर्ती राजगोपालाचारी को सरदार पटेल ने राष्ट्रपति नहीं बनने दिया, तब भी उत्तर बनाम दक्षिण की वैचारिक जंग को हवा दी गई। संविधान सभा की मंजूरी के बावजूद हिंदी अगर व्यवहारिक रूप से राजभाषा नहीं बन पाई, तो इसके पीछे भी उत्तर बनाम दक्षिण वाली सोच भी कहीं न कहीं रही है।

उत्तर के राज्यों की गरीबी और जन पलायन और दक्षिण के आर्थिक उत्थान के पैमाने पर भी उत्तर और दक्षिण के बीच की जंग चलती रही है। वैसे भी देश को बांटने और किसी क्षेत्र विशेष के लोगों को हंसी का पात्र बनाने की परंपरा देश में लंबे समय से है। हिंदी की मुंबइया फिल्मों ने इस सोच को बढ़ावा ही दिया है। उत्तर भारत में निजी स्कूल पहले खुलते थे तो स्कूल मालिक बड़े-बड़े पोस्टर लगाते थे कि अंग्रेजी पढ़ाने के लिए दक्षिण भारतीय अध्यापक नियुक्त किए जा रहे हैं। यानी अंग्रेजी जानना सिर्फ दक्षिण के लोगों का विशेषाधिकार रहा। भले ही अंग्रेजी पढ़ाने वाले बेहतर अध्यापक स्थानीय स्तर पर क्यों ना मौजूद हों।

लेकिन सोच के स्तर पर उत्तर और दक्षिण के राज्यों को बांटने की मौजूदा कोशिश बाकी कोशिशों से अलग है। स्वाधीनता आंदोलन की कोख से निकली कांग्रेस ने खुलकर कभी इस तरह की विभाजनकारी सोच को हवा नहीं दी। कांग्रेस की संस्कृति और राजनीतिक परंपरा भारत को जोड़ने की रही है, तोड़ने की नहीं। उसकी अखिल भारतीय पहचान और उसकी यह सोच ही रही कि ताजिंदगी कांग्रेसवाद के विरोधी रहे समाजवादी नेता मधु लिमये ने अपने आखिरी लेख में कांग्रेस को देश की एकता का प्रतीक बताया था। लेकिन लगता है कि कांग्रेस के आज के कर्णधार और उनके सलाहकारों को कांग्रेस की इस प्रकृति की जानकारी नहीं हैं।

एक बारगी मान भी लें कि कांग्रेस का नैरेटिव सही है। जिसके मुताबिक दक्षिण के लोग उत्तर के मुकाबले राजनीतिक रूप से परिपक्व हैं। तो हमें यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि भारतीय इतिहास के काला अध्याय के रूप में स्थापित इंदिरा गांधी का आपातकाल काला नहीं, इतिहास का सुनहरा अध्याय था। इसकी वजह यह है कि आपातकाल के बाद हुए आम चुनावों में कांग्रेस को 154 लोकसभा सीटें मिली थीं। जिनमें से 89 सीटें दक्षिण भारत के चार राज्यों में मिलीं। उत्तर भारत में कच्छ से कोलकाता तक कांग्रेस का सूपड़ा साफ हो गया था। सिर्फ राजस्थान में नागौर और मध्य प्रदेश की छिंदवाड़ा सीट पर उसे जीत मिली थी।

हर चुनाव सत्ताधारी राजनीतिक दल की नीतियों के संदर्भ में एक तरह से लोकमत संग्रह भी होता है। तो क्या यह मान लिया जाना चाहिए कि 1977 में दक्षिण में मिले कांग्रेस को अपार समर्थन का मतलब आपातकाल को लेकर कांग्रेस को दक्षिण का समर्थन था? निश्चित तौर पर कांग्रेस भी इस तथ्य को स्वीकार नहीं करेगी। अगर वह इसे स्वीकार नहीं करती तो फिर सवाल यह है कि आखिर वह उत्तर बनाम दक्षिण को लेकर ऐसा नैरेटिव क्यों फैला रही है? वह क्यों सोच के नाम पर दक्षिण बनाम उत्तर की जंग कराना चाहती है? क्या ऐसी सोच के विस्तार के बाद देश में नए तरह के अलगाववाद की आशंका नहीं पैदा होती? तमिलनाडु में तो कांग्रेस 1971 के विधानसभा चुनावों से जो गायब हुई तो अब तक गायब ही है। अगर वह कभी दिखती है तो उसे द्रविड़ मुनेत्र कषगम् की कभी बैसाखी की जरूरत पड़ती है तो कभी अन्नाद्रमुक की। तो क्या यह मान लिया जाए कि कांग्रेस को न चुनने वाला तमिल मानस संकुचित है और वह विकास और मुद्दों पर ध्यान नहीं देता। केरल में दो विधानसभा चुनावों से कांग्रेस सत्ता से दूर है। यानी केरल के लोगों की सोच छोटी है। इसी तरह आंध्र प्रदेश की सत्ता से भी कांग्रेस दो चुनावों से दूर है। यानी वहां के भी लोगों की सोच छोटी है।

आज के दौर की राजनीति की बुनियाद नैरेटिव बन गया है। हर राजनीतिक दल अपने हिसाब से अपने फायदे को राजनीति के लिए नैरेटिव गढ़ सकता है। लेकिन इस प्रक्रिया में उसे देखना होगा कि उससे देश का मानस ना बंटे। लगातार बढ़ती सड़क और रेल के साथ ही संचार सुविधाओं ने देश के एक इलाके के प्रति बरते जाने वाले संकुचित व्यवहार को लगातार कम किया है। राजनीतिक दलों को चाहिए कि वह भी इसी प्रक्रिया को बढ़ावा दे, विभाजन की सोच को लगाम लगाएं, क्योंकि विभाजनकारी सोच गहरे तक पैठ गई तो आखिरकार उसका खामियाजा समूचे देश और देश के रूप में भारत के समाज को भुगतना पड़ेगा। स्वाधीनता आंदोलन की पार्टी रही कांग्रेस को इस तथ्य को संजीदगी से समझना होगा।

आज का इतिहास

1983 राउल अल्फोंसिन सैन्य लोकतंत्र के पतन के बाद पद संभालने वाले अर्जेंटीना के पहले लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित राष्ट्रपति बने।

1988 बचावकर्मियों के मुताबिक, अर्मेनिया में आए विनाशकारी भूकंप से लगभग 45,000 लोग मारे गए हैं और लगभग 50,000 बेघर हुए हैं।

1989 मंगोलिया में पहले खुले लोकतंत्र समर्थक प्रदर्शन के दौरान, पत्रकार रसखिआगिन एल्बेगदोरज ने मोंगोलियन डेमोक्रेटिक यूनियन के गठन की घोषणा की, जो चार महीने बाद कायमुनिस्ट शासन को समाप्त करने में सहायक होगी।

1996 दक्षिणी अफ्रीका के विख्यात संघर्षकर्ता और राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला ने एक नये संविधान पर हस्ताक्षर किये।

2002 पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर को कूटनीति का उपयोग करके 1970 के दशक में मध्य पूर्व संकट को हल करने में उनकी मदद के लिए नोबेल शांति पुरस्कार के साथ प्रस्तुत किया गया है।

2005 अबूजा से पोर्ट हरकोर्ट जाने वाले सोसोलिसो एयरलाइंस फ्लाइट 1145 के दुर्घटनाग्रस्त होने से लगभग 103 लोगों की मौत हो गई और 7 अन्य घायल हो गए।

2007 क्रिस्टीना फर्नांडीज ने अर्जेंटीना की पहली निर्वाचित महिला राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली।

2007 रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने पार्टी की बैठक में घोषणा की कि वह मार्च 2008 के राष्ट्रपति चुनाव में अपने उत्तराधिकारी के रूप में दिमित्री मेदवेदेव का समर्थन करेंगे।

2009 रूस द्वारा अंतरमहाद्वीपीय मिसाइल आरएसएम -56 बुलवा का एक असफल प्रक्षेपण कल उत्तरी नॉर्वे के ऊपर दिखाई देने वाले रहस्यमयी सर्पिल प्रकाश का कारण बताया जा रहा है।

2010 सोमाली समुद्री डाकू तंजानिया और मोजाम्बिक के बीच सीमा के 80 नॉटिकल मील पूर्व में एक लाइबेरियाई जहाज को अपहृत करते हैं, अभी तक के सबसे शानदार हमले में।

2011 एक नागरिक की मौत हो गई है और कम से कम 20 अन्य घायल हो गए हैं, जो गाजा शहर में एक आतंकवादी आधार पर एक इजरायली हवाई हमले के बाद घायल हुए हैं, फिलिस्तीनी कहते हैं।

2013 मादक पदार्थ मारिजुआना के विकास, बिक्री तथा उपयोग को वैध बनाने वाला उरूगवे पहला देश बना।

जनता के मन की बात कांग्रेस नहीं समझ रही

अजय सेतिया

पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव नतीजों के 30 घंटे बाद 4 दिसंबर को शाम साढ़े पांच बजे कांग्रेस ने सवा मिनट का एक वीडियो जारी किया। इस वीडियो का शीर्षक है- देश में कांग्रेस की लहर आगे लिखा है कि कांग्रेस आज भी देश में नंबर वन है, उसे 4 राज्यों में भाजपा से ज्यादा वोट मिले हैं। वीडियो पर मल्लिकार्जुन खड़गे का कोई फोटो नहीं है, लेकिन राहुल गांधी के दो फोटो हैं। वीडियो में कांग्रेस की एंकर ने बताया कि इन चुनावों में कांग्रेस को 4 करोड़ 90 लाख वोट मिले, जबकि भाजपा को 4 करोड़ 81 लाख वोट मिले। अगर कांग्रेस इन चुनाव नतीजों को देश में कांग्रेस की लहर मानती है तो कांग्रेस को जरूर इस पर जश्न मनाना चाहिए था, लेकिन नतीजों के बाद कांग्रेस के दफ्तर में सन्नाटा था। जश्न भाजपा के दफ्तर में मनाया जा रहा था।

नतीजे देश के सामने हैं। भाजपा ने कांग्रेस से दो राज्य राजस्थान और छत्तीसगढ़ छीन लिए, वहीं कांग्रेस भाजपा शासित मध्यप्रदेश उससे नहीं छीन पाई। कांग्रेस की थोड़ी बहुत इज्जत तेलंगाना से बची है, जहां उसने भारत राष्ट्र समिति से सत्ता छीन ली। तेलंगाना में भाजपा की सीटें भी एक से बढ़ कर आठ हो गईं। तेलंगाना में कांग्रेस की जीत का महत्व है, क्योंकि वहां लोकसभा की 17 सीटें हैं, कांग्रेस वहां पिछली बार सिर्फ 3 सीटें जीत पाई थी, जबकि भाजपा 4 जीत गई थी। लेकिन कांग्रेस 65 लोकसभा सीटों वाले तीन प्रदेश मध्यप्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ हारी है। तीनों राज्यों में करारी हार के बाद तेलंगाना में कांग्रेस को मिले वोटों को जोड़कर कांग्रेस देश में अपनी लहर बता रही है और भाजपा पर हावी होने का दावा कर रही है। भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में न तो वोटों का महत्व होता है, न वोट प्रतिशत का, लोकतंत्र में सीटों का महत्व होता है। तीन राज्यों में कांग्रेस को 170 सीटें मिली हैं, और भाजपा को 332 सीटें।

नतीजों के एक दिन बाद संसद के शीतकालीन सत्र का पहला दिन था, सोनिया गांधी से एक पत्रकार ने पूछा कि क्या वह चुनाव नतीजों पर कोई टिप्पणी करना चाहेंगी। सोनिया गांधी मुहं फेर कर कार में बैठकर चली गईं। यह फर्क है सोनिया गांधी की परिपक्वता में और राहुल गांधी और उनकी टीम के सदस्यों की अपरिपक्वता में। सोनिया गांधी अगर राहुल की टीम की ओर से निकाले गए देश में कांग्रेस की लहर के नतीजे से सहमत होती, तो वह जरुर पत्रकार के सामने वही तर्क रखती, जो कांग्रेस के आधिकारिक यूट्यूब चेनल पर राहुल गांधी की तस्वीर के साथ परोसा गया है। मल्लिकार्जुन खड़गे कांग्रेस के अध्यक्ष जरुर बन गए हैं, लेकिन कांग्रेस दफ्तर, कांग्रेस की आधिकारिक वेबसाइट, कांग्रेस के एक्स अकाउंट, फेसबुक अकाउंट और कांग्रेस के यूट्यूब चैनल पर राहुल गांधी की टीम का कब्जा बना हुआ है, जो इसी तरह के हास्यास्पद तर्क देकर कांग्रेस की छवि को और खराब कर रहे हैं। कांग्रेस के यूट्यूब चैनल पर हर दसवां वीडियो मल्लिकार्जुन खड़गे का होता है, बाकी नौ वीडियो राहुल गांधी के होते हैं। राहुल गांधी की टीम के सबसे बड़े बुद्धिजीवी जयराम रमेश हैं। उन्होंने कहा है कि 2003 में भी भारतीय जनता पार्टी इन तीनों राज्यों में जीत गई थी, लेकिन 2004 में लोकसभा चुनाव हार गई। कांग्रेस इस खाम ख्याली में है कि देश की जनता 2024 में भाजपा को 2004 जैसा झटका देगी। राहुल गांधी और कांग्रेस की अपरिपक्व टीम जनता के मन की बात पढ़ना ही नहीं चाहती। मोदी ने एक विश्वसनीय राष्ट्रीय नेता की छवि बनाई है, जो देश की सांस्कृतिक विरासत को बढावा देने के साथ, जाति-धर्म से ऊपर उठकर गरीबों के उत्थान की योजनाएं बनाने, उन्हें जमीन पर लागू करने और देश को विकास की उंचाईयों पर ले जाने की कोशिश में जुटा है। भ्रष्टाचार के खिलाफ उनकी मुहिम को विपक्षी दल जितना बदले की राजनीति बताते हैं, उतने ही वे जनता के दिलो दिमाग से उतर रहे हैं, क्योंकि ईडी सीबीआई के छापों में धन के अंबार दिख रहे हैं। वह धन कहां से आया? यह सब मोदी तो उनके घरों में नहीं रखवा रहे। मोदी युग में सफाई अभियान की नए तरह की राजनीति हो रही है, इससे पहले भ्रष्टाचारी राजनीतिज्ञों के खिलाफ इतने बड़े पैमाने पर कभी अभियान नहीं चला। जिसे देश की जनता पसंद कर रही है। विपक्ष के नेता उसे समझ ही नहीं रहे, वे ईडी सीबीआई पर हमले करके अपनी ही छवि खराब कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चार दिसंबर को संसद सत्र शुरू होने से पहले संसद की दहलीज पर पत्रकारों के सामने कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों को भी अपनी छवि सुधारने का मन्त्र भी दिया। उन्होंने कहा कि देश की जनता उनकी नकारात्मक राजनीति को पसंद नहीं करती। विपक्ष को सबक लेकर अपनी स्थिति में सुधार करना चाहिए। कोई भी राजनीतिज्ञ अपनी विरोधी पार्टी या विरोधी नेता को उसकी कमियाँ नहीं बताता, बल्कि उनकी कमियों का फायदा ही उठाता है। मोदी भी राहुल गांधी की नकारात्मक राजनीति का फायदा ही उठा रहे है, लेकिन फिर भी उन्होंने सीख दी है। लेकिन राहुल गांधी और उनकी टीम न तो मोदी युग को समझ रहे हैं, न अपनी गलतियों से कुछ सीख रही हैं। मोदी-शाह की जोड़ी की सोच और काम करने की शैली वाजपेयी-आडवानी से बिलकुल भिन्न है। तब भाजपा ऊंची जातियों का प्रतिनिधित्व करने वाली पार्टी समझी जाती थी। भाजपा कभी अपने बूते पर लोकसभा में बहुमत हासिल नहीं कर सकी थी।

हिंदी बेल्ट के तीन राज्यों में प्रभाव के बावजूद भाजपा का अन्य हिन्दी भाषी राज्यों उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और हरियाणा में प्रभाव इतना नहीं था, जितना अब है। उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखंड, हरियाणा और दिल्ली की 151 सीटों में से भाजपा सिर्फ 18 सीटें जीती थीं। गुजरात और महाराष्ट्र में भी भाजपा उतनी मजबूत नहीं थी, जितनी अब है। गुजरात में भाजपा उस समय 26 में से सिर्फ 14 सीटें जीती थीं। महाराष्ट्र की 48 सीटों में से में 11 खुद और 11 उसकी सहयोगी शिवसेना जीती थी। मोदी युग की भाजपा ऊंची जातियों की नहीं, ओबीसी, दलितों और आदिवासियों की नुमाइंदगी करती है। मोदी खुद ओबीसी हैं, और उनकी सरकार में 27 ओबीसी, 12 दलित और 8 आदिवासी मंत्री हैं। 2019 में उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी का चुनावी गठबंधन हुआ था। समाजवादी पार्टी यादवों (ओबीसी) का और बसपा दलितों का प्रतिनिधित्व करती है। दोनों मुस्लिम समुदाय का भी प्रतिनिधित्व करते हैं, लेकिन यादव, दलित, मुस्लिम मिल कर भी 15 सीटें ही जीत पाए। ऐसा इसलिए हुआ कि गैर यादव ओबीसी तो पूरा ही भारतीय जनता पार्टी से जुड़ चुका है, यादव भी भारी मात्रा में जुड़े हैं। इसी तरह गैर जाटव दलित भी भाजपा से जुड़ चुका है। भाजपा ने इन सभी वर्गों को सत्ता में भागीदारी देने का काम भी किया है। इसलिए राहुल गांधी का जातीय जनगणना का कार्ड मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में नहीं चला। इसलिए आज की तुलना 2004 से करना राजनीतिक अपरिपक्वता और खुद की आखों में धूल झोंकना है। आज केंद्र सरकार के अलावा देश के 58 फीसदी भूभाग पर भाजपा की राज्य सरकारें है, जिनमें देश की 57 प्रतिशत आबादी रहती है। मोदी जब प्रधानमंत्री बने थे, तो भाजपा की सिर्फ पांच राज्यों राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात और गोवा में सरकार थी, इस समय इन सब के साथ हरियाणा, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, असम, त्रिपुरा और महाराष्ट्र समेत 12 राज्यों में अपनी सरकारें हैं।

कांग्रेस जातिगणना के मुद्दे को उभार नहीं पाई

हिलाल अहमद

चार राज्यों के विधानसभा चुनाव नतीजों को देखने के दो नजरिए हो सकते हैं। पहला, हम मानकर चलें कि लोकसभा चुनाव से पहले का यह सेमीफाइनल था। ऐसे में बीजेपी के लिए अब कोई मुश्किल नहीं होगी और वह आसानी से 2024 का चुनाव जीत जाएगी। इस नजरिए की कुछ परेशानियां हैं। एक तो यही कि यह नजरिया केवल सीट देख रहा है, वोट शेयर नहीं। दूसरी, जो बीजेपी का अपना प्रफेशनलिज्म है, यह उसकी कोई निशानदेही नहीं कर पाता। तीसरी, यह नहीं भूलना चाहिए कि कांग्रेस का चुनाव प्रचार काफी आक्रामक रहा। तेलंगाना सहित कांग्रेस ने अपने आपको दक्षिण के राज्यों में जिस तरह से उभारा है, मेनस्ट्रीम मीडिया उसकी भी सरल व्याख्या दे रहा है। इसलिए इन चुनावों को एक अलग नजरिए से, भारतीय लोकतंत्र की व्यापकता के संदर्भ में देखना चाहिए। इस संदर्भ में यह चुनाव चार संकेत दे रहा है। पहला, भारतीय लोकतांत्रिक मूल्यों में लोगों की सक्रिय भागीदारी। इन चुनावों में मतदान प्रतिशत बढ़ा है। मतलब चुनाव में भागीदारी बढ़ी है, लोगों का विश्वास बढ़ा है। इसका दूसरा पक्ष यह है कि पिछले पंद्रह-बीस सालों में हमने बहुत अलग ट्रेंड देखे हैं, अलग तरह की प्रक्रियाएं देखी हैं। हमारा मतदाता जानता है कि विधानसभा, नगरपालिका और लोकसभा इलेक्शन में क्या अंतर होता है। यही वजह है कि वह तीनों चुनावों में अलग-अलग तरीके से अपने मताधिकार का उपयोग करता है। मतलब यह कि इन चुनावों में राजनीतिक परिपक्रता और चुनावी व्यवस्था में विश्वास बहुत स्पष्ट रूप से साबित हुआ है। दूसरा संकेत यह है कि राज्य का जो मॉडल राजनीतिक दलों ने स्वीकार किया है, उसे मैं कहता हूं खैरती राज्य या चैरिटेबल स्टेट। यह परिकल्पना दो बातों पर टिकी है। राज्य यह कह रहा है कि आर्थिक क्षेत्र में हमारा कोई हस्तक्षेप नहीं है और बाजार की आर्थिक शक्तियां स्वतंत्र हैं। लेकिन जो राजनीतिक जिंदगी है लोगों की, उसमें राज्य कहता है कि क्योंकि आपकी समस्याएं हैं, इसलिए हम आपको एक बार की कोई सुविधा दे देंगे, कोई योजना दे देंगे। इसी को मैं कहता हूं खैरती राज्य। तमाम राजनीतिक दल इस पर एक मत हैं, पूरे चुनाव प्रचार में यह मॉडल बराबर देखने को मिला। बीजेपी की कामयाबी के पीछे इस मॉडल का बहुत बड़ा हाथ है क्योंकि बाकी राजनीतिक दलों की तुलना में प्रधानमंत्री मोदी के भाषण काफी सशक्त थे। उन्होंने एक ओर तो यह कहा कि दूसरे राजनीतिक दल जिस तरह की योजनाओं को आगे बढ़ा रहे हैं, वे योजनाएं रेवड़ी संस्कृति से जुड़ी लगती हैं। लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि बीजेपी केवल रेवड़ियां नहीं बांट रही या योजनाएं नहीं दे रही हैं, वह आधारभूत ढांचे का भी विकास कर रही है। इस तरह से खैरती राज्य की परिकल्पना बहुत मुखर रूप से बीजेपी के पक्ष में गई, और उसे जिस तरह का जनादेश मिला, वह सर्वविदित है। तीसरा जो संकेत मिलता है इन चुनावों से, वह है चुनाव के केंद्र में रहने वाला राजनीतिक विमर्श। 2014 में जब बीजेपी सत्ता में आई, तभी से हमने देखा कि वही विमर्श तय करती है। बीजेपी का हिंदुत्व में लिप्त जो विकासवाद था, वह बड़े सशक्त रूप में सामने आया और तमाम राजनीतिक दलों ने उसको स्वीकार कर लिया। इस बार दिलचस्प बात यह है कि बीजेपी जीत तो गई, लेकिन इसमें एक समस्या आ गई। समस्या यह कि जैसे ही जाति जनगणना की बात कांग्रेस और दूसरे दलों ने की, बीजेपी को भी उभरते राजनीतिक विमर्श के साथ तालमेल बिठाने की जरूरत महसूस हुई। निस्संदेह कांग्रेस इस तर्क को ज्यादा विकसित नहीं कर पाई है, लेकिन आने वाले समय में यह भारतीय लोकतंत्र के व्यापक संदर्भों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला है। जो बात होती थी कि कोई वैकल्पिक विमर्श नहीं है, मुझे लगता है कि इस चुनाव में उसकी सुगबुगाहट देखने को मिली है। अंतिम जो संकेत इन चुनावों से निकलकर आया है, वह है उत्तर और दक्षिण में दिखता दिलचस्प अंतर। उत्तर भारत में बीजेपी का वर्चस्व फिर से स्थापित होता दिख रहा है। यह बीजेपी के लिए फायदे की चीज है क्योंकि हिंदी, हिंदू, हिंदुस्तान की जो बात उत्तर के राज्यों में आसानी से की जा सकती है, दक्षिण या पूर्वोत्तर राज्यों में उसको थोड़ा अलग तरीके से कहना पड़ेगा। जब उत्तर के राज्यों में यह बात साबित हो जाती है, तो कई चीजें बीजेपी के पक्ष में चली जाती हैं। जैसे अब काफी अच्छी तरह से डबल इंजन की सरकार का नारा दे सकती है।

चुनावों के दौरान जरूरी मुद्दों पर क्यों नहीं होती बहस?

विश्वनाथ सचदेव

चुनाव के 'सेमीफाइनल' का नतीजा सामने है। राजनीति के पंडित हिसाब लगाने में लगे हैं। कुछ इसे भाजपा के राजनीतिक कौशल का परिणाम बता रहे हैं, कुछ विपक्ष की गलत रीति-नीति को दोषी ठहरा रहे हैं। विश्लेषण तो हर चुनाव परिणाम का होना चाहिए। इस बात पर भी विचार होना चाहिए कि हमारे यहां जिस तरह का चुनाव-प्रचार होता है या फिर मतदाता को रिझाने की जिस तरह से कोशिशें होती हैं, वह जनतांत्रिक मूल्यों की दृष्टि से कितनी सही हैं? इन चुनावों के प्रचार के दौरान न विपक्ष यह पूछ रहा था और न ही सत्तारूढ़ पक्ष यह बताना जरूरी समझ रहा था कि वैश्विक गरीबी सूचकांक के अनुसार हमारी सोलह प्रतिशत आबादी के गरीब होने के कारण क्या हैं? इस बात को नहीं भूलाना चाहिए कि वैश्विक भूख सूचकांक की 123 देशों की सूची में भारत का स्थान 107 वां है। चुनाव-प्रचार के दौरान इसकी चर्चा कहीं सुनाई नहीं दी। गरीबी की तरह ही बेरोजगारी का मुद्दा भी कुल मिलाकर अनसुना ही रहा। विपक्ष के भाषणों में यह शब्द कभी-कभी सुनाई दे जाता था, पर इसे उस ताकत से नहीं उठाया गया जितनी ताकत से उठाया जाना चाहिए था। चुनाव-परिणामों का विश्लेषण करने वालों का कहना है कि इस बार महिला-मतदाताओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रही। महिलाओं ने मतदान में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया, यह सही है। चुनाव-परिणामों पर भी इसका असर पड़ा है पर विधायिका में महिलाओं को तीस प्रतिशत भागीदारी देने और उसका समर्थन करने वालों में से किसी भी राजनीतिक दल ने इन चुनावों में एक तिहाई उम्मीदवार खड़े करना जरूरी नहीं समझा। देश में आईआईटी और आईआईएम खोले जाने की बातें भी हुईं, पर यह बात किसी ने भी नहीं उठाई कि देश में एक लाख से कहीं अधिक स्कूलों में सिर्फ एक अध्यापक क्यों है? यह सवाल हमारे राजनेताओं के जहन में क्यों नहीं आता कि हर साल एक लाख से अधिक भारतीय देश छोड़कर क्यों चले जाते हैं? प्राप्त आंकड़ों के अनुसार पिछले ही साल यानी 2022 में 25 हजार भारतीयों ने नागरिकता छोड़ी थी। आखिर क्यों? यह सब वे नहीं हैं जिन्हें गलत काम करके देश से भागने दिया गया है। ऐसे लोग तो गिनती के हैं। सवाल तो उन लाखों का है जो देश की परिस्थितियों के कारण 'बेहतर जिंदगी' के लिए देश छोड़कर जाने के लिए बाध्य हो जाते हैं। यह और ऐसे मुद्दे हमारे चुनावों का हिस्सा क्यों नहीं बनते? यह संभव है कि जो मुद्दे उठाए गए वे भी उठने लायक हों, पर जो नहीं उठाए गए वे तो इस बात का उत्तर मांग रहे हैं कि जाति, धर्म, भाषा आदि को वोट मांगने का आधार क्यों बनाया जाता है? यह सवाल मतदाताओं को अपने प्रतिनिधियों से पूछना होगा कि वे यह क्यों मान लेते हैं कि मतदाता उनकी मुट्ठी में है?

परिणामों का राजनीति पर दूरगामी असर

प्रो. बद्री नारायण

चार राज्यों के चुनाव नतीजे भारतीय राजनीति पर दूरगामी असर डालेंगे। कांग्रेस के पुनरुभार की संभावनाएं इन परिणामों से क्षीण हुई हैं क्योंकि अगर कोई दल उत्तर भारत में प्रभावी नहीं है, तो फिर वह राष्ट्रीय राजनीति में प्रभावी नहीं हो सकता। कर्नाटक और हिमाचल प्रदेश में पराजय के बाद भाजपा पर जो बादल छाये हुए थे, अब वे छंट जायेंगे तथा लोकसभा चुनाव के लिए भाजपा का आधार और मजबूत होगा। तीन उत्तर भारतीय राज्यों में भाजपा की जीत आश्चर्यजनक है। कोई यह नहीं मान रहा था कि छत्तीसगढ़ में भाजपा जीतेगी। मध्य प्रदेश के लिए भी लगभग यही आकलन था। राजस्थान में भी कांटे की टक्कर का अनुमान था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चुनाव अभियान में स्थानीय नेताओं को परे रखते हुए स्वयं को पूरी तरह झोंक दिया था। उन्होंने एक राज्य की राजनीति की जगह कई राज्यों की राजनीति को स्थापित कर दिया है। इससे कई नेताओं में यह आशा और आकांक्षा पैदा हुई कि वे भी मुख्यमंत्री बन सकते हैं। ऐसे में उन्होंने मेहनत में कोई कसर बाकी नहीं रखी। अगर इन चुनाव में भाजपा हार जाती, तो मोदी की छवि पर नकारात्मक असर होता। लेकिन उन्होंने जोखिम उठाया और जीत हासिल की। एक सक्षम राजनेता हमेशा जोखिम लेता है। ये परिणाम मोदी ब्रांड और उनकी छवि को और मजबूत करते हैं।

इन चुनाव में लाभार्थी की राजनीति यानी सामाजिक कल्याण की राजनीति दोनों पार्टियों ने की। इस राजनीति में भाजपा इसलिए आगे निकल गयी क्योंकि मध्य प्रदेश में डबल इंजिन की सरकार थी। राजस्थान और छत्तीसगढ़ की कांग्रेस सरकारों ने अपनी सामाजिक योजनाओं को अच्छे से लागू करने की पूरी कोशिश की। लेकिन भाजपा केवल योजना भर लागू नहीं करती, बल्कि लाभार्थी के साथ व्यक्तिगत संबंध भी जोड़ती है। मामा, भांजा, बहन आदि जैसे भावनात्मक संबोधन भारतीय

मानस को आकर्षित करते हैं। भाजपा नेता पर्व-त्योहारों में लाभार्थियों के यहां जाते हैं। कांग्रेस ऐसा नहीं करती। उसे लगता है कि हमने योजनाओं को जनता तक पहुंचा दिया है और लोग उससे संतुष्ट होकर उसे वोट देंगे ही।

कांग्रेस जाति जनगणना और पुरानी पेंशन योजना के अपने वादों पर काफी भरोसा कर रही थी। जाति जनगणना का मुद्दा कारगर नहीं हुआ। कांग्रेस यह नहीं समझ सकी कि यह नव-उदारवाद का दौर है, जिसका दूसरा चरण चल रहा है। पहले चरण में पहचान (आइडेंटिटी) का असर था, पर यह चरण पहचान के अवसान और आंकाक्षाओं के उदय का समय है। इसमें व्यक्ति के अंदर अनेक आकांक्षाएं होती हैं। व्यक्ति नौकरी भी चाहता है, सामाजिक परिवेश में सम्मान की अपेक्षा भी करता है तथा अच्छी जीवन शैली की चाहत भी रखता है। यह उपभोक्ता मन व्यक्ति को किसी 'अन्य' के विरुद्ध आक्रामक रूप से लामबंद नहीं होने देता। इस तरह के सूक्ष्म मुद्दों ने भी चुनाव में एक भूमिका निभायी है। लोगों ने यह भी समझा कि यह लड़ाई अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) की अन्य पिछड़ा वर्ग से ही है, सवर्ण से नहीं। भाजपा अब पहले की तरह 'ब्राह्मण-बनिया पार्टी' नहीं है, बल्कि वह ओबीसी के नेतृत्व वाली पार्टी है। भाजपा ने विभिन्न जातिगत पहचान को अपने यहां स्थान दिया है। यदि इन परिणामों से जातिगत आरक्षण की राजनीति रुकती है या कमजोर होती है, तो सामाजिक संघर्ष से लामबंदी की राजनीति भी कमजोर होगी। वंचित समुदायों में आज आकांक्षा, आवश्यकता और भागीदारी की क्षमता आ चुकी है। इनका विकास केवल आरक्षण देकर नहीं हो सकता है, उसके लिए अनेक प्रयासों की जरूरत है। भाजपा ने एक बड़ा घेरा खींचा हुआ है, जिसमें जाति भी है, धर्म भी है, विकास भी है, मोदी की छवि भी है, मीडिया भी है। अगर इनमें से किसी एक तत्व पर आश्रित होकर कोई राजनीति करेगा, तो सफल नहीं हो सकता है। संघर्ष की राजनीति के कमजोर होने से आकांक्षा की, आशा की राजनीति का उभार होगा। उसमें कोई शत्रु नहीं होगा। यह बहिष्करण से नहीं, समायोजन और समावेश की निरंतरता से बनता है। मुझे लगता है कि यह दौर उसी दिशा में अग्रसर है। जहां तक इन राज्यों में आदिवासी समुदायों की स्थिति का प्रश्न है, तो इन समुदायों के सम्मान की आकांक्षा को तो भाजपा ने बढ़ाया ही है। आदिवासी नायकों के सम्मान से लेकर संग्रहालय बनाने और अवकाश घोषित करने आदि जैसी कई तरह की पहलें हुई हैं। इससे समुदायों में आकांक्षा भी बढ़ी। इसका निश्चित प्रभाव परिणामों में दिखाई देता है। दूसरी बात यह है कि भाजपा सरकारों के आने से बहुत पहले से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आदिवासी क्षेत्रों में सक्रिय है। उनके विद्यालय हैं, अस्पताल हैं, अन्य गतिविधियां हैं। आदिवासी क्षेत्रों में पहले या तो नक्सलाइट थे या फिर गांधीवादी कार्यकर्ता। विभिन्न कारणों और कारकों से इनकी उपस्थिति लगातार घटती गयी है, जबकि संघ से संबंधित संगठनों और कार्यक्रमों का दायरा बढ़ता गया है। इसका लाभ भी भाजपा को मिलना स्वाभाविक है। प्रधानमंत्री मोदी ने जनजातीय गौरव कार्यक्रम के माध्यम से गौरव बोध की राजनीति को आगे बढ़ाया है। एक समय में आदिवासी क्षेत्र कांग्रेस का मजबूत गढ़ हुआ करता था। लेकिन समय के साथ वह प्रभाव घटता चला गया। ऐसा कोई संकेत भी नहीं है कि कांग्रेस जनजातीय समुदायों के बीच काम कर रही है या इस बारे में उसके पास कोई रणनीति या कार्यक्रम है।

क्या वाकई सनातन का श्राप कांग्रेस को विधानसभा चुनावों में ले डूबा है?

डॉ. आशीष वशिष्ठ

पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव नतीजे घोषित हो चुके हैं। हिंदी पट्टी के तीन राज्यों- मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में अपनी हार से बौखलाई कांग्रेस और इंडिया गठबंधन फिर से एक बार क्षुद्र राजनीति पर उतर आया है। रस्मी तौर पर हर बार की तरह इस बार भी विपक्ष ने अपनी हार, नाकामियों और कमियों का ठिकरा ईवीएम के सिर फोड़ा है। लेकिन इस बार विरोध सिर्फ यहीं तक सीमित नहीं है, बल्कि द्रमुक सांसद सेंथिल कुमार ने लोकसभा में बयान देकर जनादेश को 'उत्तर बनाम दक्षिण' करने की मंशा जाहिर की है। उन्होंने कहा कि भाजपा हिंदी पट्टी के 'गौमूत्र' वाले राज्यों में ही चुनाव जीतती है।

यह भी कोई नई बात नहीं है कि डीएमके के किसी नेता ने इस तरह का बयान कोई पहली बार दिया है, इससे पहले भी उसके नेता विभाजनकारी बयान देते रहे हैं। डीएमके सांसद का यह विवादित बयान कोई अनायास नहीं आया है, यह सोची समझी रणनीति का हिस्सा है। द्रमुक के नेताओं ने ही 'सनातन' के समूल नाश की बात कही थी और उसकी तुलना एड्स और कोढ़ जैसी बीमारियों से की थी। क्या ऐसी गालियां देना राजनीति के लिए जरूरी है? चाहे हिंदी भाषा की बात हो, सनातन संस्कृति की बात हो या फिर उत्तर-दक्षिण विवाद की बात हो, वे इसे लेकर विवादित बयान देते रहे हैं। द्रमुक विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' का ही घटक-दल है। विरोध के बाद सांसद को माफी मांगनी पड़ी, लेकिन ऐसा भाजपा-विरोधी देश की 'विविधता में एकता' संस्कृति का अपमान और उल्लंघन है। हालांकि इस कथन को लोकसभा की कार्यवाही के रिकॉर्ड से बाहर कर दिया गया है, लेकिन यह अपमान कौन सहेगा?

इसमें कोई दो राय नहीं है कि राजस्थान, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में कांग्रेस की करारी हार के पीछे सनातन का विरोध, सनातन के विरोध पर चुप्पी और मुस्लिम तुष्टिकरण बड़ी वजह है। एक तरफ जहां इस हार लेकर कांग्रेस में रोना-धोना मचा है, वहीं नैरेटिव का खेल भी जारी है। यानि कांग्रेस हार से सबक लेने के लिए तैयार नहीं है। कांग्रेस के ही नेता आचार्य प्रमोद कृष्णम ने पार्टी को आईना दिखाते हुए कहा कि सनातन का श्राप कांग्रेस को ले डूबा। पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को मिली हार के बाद लेफ्ट लिबरल गैंग और कांग्रेस समर्थक पत्रकारों-विश्लेषकों ने तरह-तरह के कुतर्क रचने शुरू कर दिए हैं। इंडिया टुडे के पत्रकार शिव अरूर ने कांग्रेस समर्थक पत्रकारों-विश्लेषकों की परतें उघाड़ कर रख दी है। इसी वीडियो को शेयर करते हुए पीएम मोदी ने कांग्रेस पर तंज कसते हुए लिखा, 'वे अपने अहंकार, झूठ, निराशावाद और अज्ञानता से खुश रहें। लेकिन उनके विभाजनकारी एजेंडे से सावधान रहें। 70 साल पुरानी आदत इतनी आसानी से नहीं जा सकती।' पीएम मोदी ने कटाक्ष करते हुए कहा कि 'ऐसे लोगों की बुद्धिमत्ता है कि उन्हें आगे कई और मेल्टडाउन्स के लिए तैयार रहना होगा।'

दरअसल कांग्रेस ने 70 सालों से यही अपना चाल, चेहरा और चरित्र बना लिया है। वह इस बात को समझ ही नहीं पाई सनातन संस्कृति के दम पर भारत हमेशा से धर्म परायण देश रहा है और यहां जातिवाद कभी नहीं रहा। कांग्रेस के तुष्टिकरण की पराकाष्ठा देखिए कि

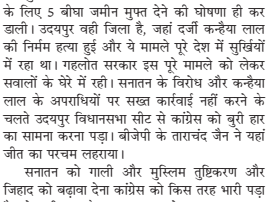

उदयपुर में कांग्रेस के प्रत्याशी गौरव वल्लभ ने कन्हैयालाल के लिए 5 बीघा जमीन मुफ्त देने की घोषणा ही कर डाली। उदयपुर वही जिला है, जहां दर्जी कन्हैया लाल की निर्मम हत्या हुई और ये मामले पूरे देश में सुर्खियों में रहा था। गहलोत सरकार इस पूरे मामले को लेकर सवालों के घेरे में रही। सनातन के विरोध और कन्हैया लाल के अपराधियों पर सख्त कार्रवाई नहीं करने के चलते उदयपुर विधानसभा सीट से कांग्रेस को बुरी हार का सामना करना पड़ा। बीजेपी के ताराचंद जैन ने यहां जीत का परचम लहराया।

सनातन को गाली और मुस्लिम तुष्टिकरण और जिहाद को बढ़ावा देना कांग्रेस को किस तरह भारी पड़ा है उसे छत्तीसगढ़ के एक उदाहरण से समझा जा सकता है। छत्तीसगढ़ के 24 वर्षीय युवा भुवनेश्वर साहू को बेमेतरा के बिरनपुर में जिहादियों की भीड़ ने मार दिया था और उसके परिवार को कांग्रेस सरकार में न्याय नहीं मिला। उनके पिता ईश्वर साहू नितांत गरीब थे, उनको भाजपा ने 'साजा' सीट से टिकट दिया। भुवनेश्वर के पिता ईश्वर साहू ने 19600 मतों से 40 साल से कांग्रेस से विधायक मंत्री रविन्द्र चौबे को हरा दिया। रविन्द्र चौबे छत्तीसगढ़ में बघेल सरकार में कृषि मंत्री थे और सात बार विधायक रह चुके हैं। वोटबैंक के डर से और मुस्लिम तुष्टिकरण में कांग्रेस ने अपराधियों पर कार्रवाई नहीं की। ऐसे नतीजे कांग्रेस को हर बार बताते आएंगे कि आखिर क्यों जनता का समर्थन उसे नहीं मिलता।

इंडिया गठबंधन के घटक दल समाजवादी पार्टी के नेता स्वामी प्रसाद मौर्य ने कई बार तुलसीदास और रामचरितमानस के लिए विवादित शब्दावली का इस्तेमाल किया है। उन्होंने यहां तक कहा है कि हिन्दू नाम का कोई धर्म ही नहीं है, ये ब्राह्मण धर्म है। उन्होंने हिन्दू धर्म को धोखा बता दिया। इसी तरह, बिहार के शिक्षा मंत्री चंद्रशेखर यादव ने विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में छात्रों के मन में रामचरितमानस को लेकर ज़हर भरा। स्वामी प्रसाद मौर्य और चंद्रशेखर यादव के अलावा उदयनिधि स्टालिन, ए. राजा, प्रियांक खडगे आदि सनातन को भला-बुरा कहने और कोसने वालों की लंबी कतार है।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि सनातन धर्म दुनिया का सबसे पुराना धर्म है। सनातन धर्म पर अनर्गल बयानबाजी और टिप्पणियां न सिर्फ सनातन धर्म के खिलाफ हैं, बल्कि भारत के खिलाफ भी हैं। सनातन के अपमान से करोड़ों देशवासियों की भावनाएं आहत होती हैं। वास्तव में बात बस इतनी-सी है कि सनातन धर्म को लेकर जो-जो बातें कही गईं, इस्लाम या ईसाई के लिए मुंह तक खोल देने पर ईशनिंदा का आरोप लग जाता है।

मुंबई में 26/11 आतंकी हमले की साजिश कांग्रेस ने हिंदू आतंकवाद का नैरेटिव सेट करने के लिए रची थी। कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह और महेश भट्ट ने यह साबित करने की पूरी कोशिश की थी कि मुंबई आतंकी हमला हिंदू आतंकवाद के कारण हुआ। पाकिस्तानी आतंकवादी अजमल कसाब हाथ में कलावा और आई कार्ड समीर चौधरी का लेकर भारत में घुसा था। अगर वह जिंदा पकड़ा नहीं जाता तो कांग्रेस हिंदू आतंकवाद को साबित करने में सफल हो जाती। यही नहीं एक कांग्रेस समर्थक पत्रकार अजीज़ बर्नी ने एक किताब प्रकाशित की- 26/11, आरएसएस की साजिश। इस किताब का लोकार्पण कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह और बॉलीवुड डायरेक्टर महेश भट्ट ने किया था।

जहां तक ईवीएम का प्रश्न है, तो उससे जुड़े विवाद सर्वोच्च अदालत तक जा चुके हैं। चुनाव आयोग ने भी सर्वदलीय निमंत्रण दिया था और मशीन में गड़बड़ी निकालने की चुनौती दी थी। उसे विपक्ष ने स्वीकार क्यों नहीं किया? अब भी संशय में डूबा विपक्ष या उनका कोई भी प्रतिनिधि उचित मंच में ईवीएम को चुनौती दे सकता है। सवाल है कि क्या ऐसी विभाजक राजनीति और सनातन को गाली देकर विपक्ष 2024 का आम चुनाव जीता सकता है? क्या सनातन को गाली देना और विभाजनकारी मानसिकता ही विपक्ष का नया राजनीतिक एजेंडा है? क्या देश में गौ, गंगा, गायत्री, गीता का अपमान बर्दाश्त किया जा सकता है? लोकतंत्र में जनादेश ही अंतिम निर्णय है। वह जनता का निर्णायक रुख है। इंडिया गठबंधन और खासकर कांग्रेस को विधानसभा चुनाव में मिली हार के कारणों पर विचार करना चाहिए और जो जनादेश देश की जनता ने सुनाया है, उसे विनम्रतापूर्वक स्वीकार करना चाहिए।

ब्यूटी एक्सपर्ट के मुताबिक अट्रैक्टिव लोग, एवरेज लुक्स से कमतर लोगों से करीब 3-4 पर्सेंट ज्यादा सैलरी पाते हैं। बेटर-लुकिंग पीपल प्रॉडक्ट्स बेचने और नए कस्टमर्स को अट्रैक्ट करने के मामले में आगे होते हैं। हालांकि वह यह भी सजेस्ट करते हैं कि अगर आपके लुक्स खास नहीं हैं, तो आप ऐसा पेशा कतई मत चुनिए, जहां लुक्स मैटर करते हों।

कैरियर में कारगर गुड लुक्स

बेहतर होगा कि आप अपनी स्ट्रेंथ को जानकर, उसके मुताबिक प्रफेशन सिलेक्ट करें। वहीं, एक स्टडी में यह भी बताया गया है कि ओवरवेट लोगों को भी अपॉइंटमेंट के दौरान डिस्क्रिमिनेशन को झेलना पड़ता है। खासतौर पर ओवरवेट महिलाओं को। यही नहीं, जॉब के मामले में अच्छी हाइट वाली महिलाओं को प्रिफरेंस दी जाती है।

फायदा ही फायदा

बेशक, आपको रोजना लाइफ में सब जगह खूबसूरत लोगों को नोटिस किया जाता है। बेशक, उनका काम भी दूसरों की कंपेयर में ज्यादा दिखाई देगा। फिर आगे चलकर प्रमोशन और सैलरी हाइक में भी इसका असर दिखता है। हालांकि एक्सपर्ट्स का कहना है कि गुड लुक्स का असर फैशन, ग्लैमर और हॉस्पिटैलिटी जैसे इंडस्ट्रीज में ही ज्यादा होता है। आईटी जैसे फील्ड्स में आपके स्टनिंग लुक्स से कंपनी को क्या मिलेगा! इसलिए यह भी आप पर कोई खास मेहरबानी सिर्फ इस वजह से नहीं करेगी कि आप दिखने में बहुत सुंदर हैं। सोशियॉलजिस्ट का माना है कि इंटरनैशनल लेवल पर ऐसी स्टडीज सही हो सकती है, लेकिन हमारे देश में ब्यूटिफुल होने का मतलब वर्कप्लेस में प्रजेंटेबल होना ही है। वैसे भी, सॉफ्ट स्किल्स में हम वेस्टर्न कंट्रीज जितने काबिल नहीं हैं। ऐसे में, इन क्रीलिटीज में बेहतर एम्प्लॉयीज को आगे बढ़ने में लुक्स की वजह से समझौता करना पड़े, ऐसा हर जगह नहीं हो सकता।

रहें अट्रैक्टीव

भले ही, आपको ऑफिस में बस कंप्यूटर पर स्विट-पिट करनी हो, लेकिन स्मार्ट दिखने से कॉम्प्रोमाइज न करें। आप ग्लैमरस प्रोफेशन में नहीं हैं, तो क्या हुआ। स्मार्ट दिखने में कोई बुराई नहीं है। अपना वर्क प्रोफाइल ड्रेस सेंस के हिसाब से ही रखें। स्मार्ट दिखें, स्टाइलिश नहीं। वर्कप्लेस में हाईजीन का पूरा खयाल रखें। वेल-ग्रुम्ड दिखना अच्छी बात है। अपने सॉफ्ट स्किल्स पर मेहनत करें। वर्कप्लेस में यही चीजें आपका अट्रैक्शन बढ़ाती हैं। आप क्या कहते हैं। इससे कहीं ज्यादा महत्व यह रखता है कि आप कैसे कहते हैं। इसलिए अपने बातें करने के अंदाज को इंप्रूव करें। पॉश्चर और जेस्चर का मतलब है कि अगर आपको ऑफिस में बात करने का सलीका नहीं है और अगर आपकी बॉडी लैंग्वेज लंगूर-टाइप है, तो सारी ब्यूटी का कबाड़ा हो जाता है। इसलिए ब्यूटी के साथ-साथ आप अपनी बॉडी लैंग्वेज भी ध्यान दें। उठना-बैठना और हाव-भाव में बेहतरीन अंदाज आपको भीड़ से अलग कर देते हैं। इन क्रीटीज को आप प्रफेशनल हेल्प लेकर सीख भी सकते हैं। अपने कॉन्फिडेंस लेवल पर वर्क करें। कॉन्फिडेंस ?सी लिटी है, जो सौन्दर्य को और बढ़ा देती है।

बदले ब्यूटी रूल्स

हालांकि लुक्स के बेस पर भेदभाव थोड़ा कॉम्प्लिकेटेड मसला जरूर है। लेकिन इस बारे में यह भी ध्यान देने वाली बात है कि समय के साथ ब्यूटी के स्टैंडर्ड्स बदले हैं। अब ब्यूटिफुल होने के मायने केवल यह नहीं हैं कि आपके फेशियल फीचर्स बढ़िया हों, बल्कि आपकी पूरी पर्सनैलिटी ज्यादा मायने रखती है।

ऐसे में, अगर आप नेचरली एवरेज पर्सनैलिटी वाले हों, तब भी कुछ बातों को ध्यान में रखकर अट्रैक्टिव बन सकते हैं। और फिर अट्रैक्शन तो आपके अंदाज में होता है। फिर चाहे वह बातें करने में, उठने-बैठने में और बिहेवियर किसी में भी हो।

सही कैरियर का चुनाव कैसे करें

कैरियर किसी भी इंसान के जीवन का एक ऐसा महत्वपूर्ण विषय है जिसका सही तरह से चुनाव करना बहुत ही जरूरी होता है! सही करियर का चुनाव आपके जीवन की दशा और दिशा दोनों ही तय करता है, करियर को चुनने में हुयी लापरवाही या कोई गलत निर्णय अथवा किसी दबाव में लिया हुआ निर्णय आपके लिए घातक सिद्ध होता है ! इन्ही बातों को ध्यान में रखते हुए आज हम आपको इस आर्टिकल में बताने जा रहे हैं, की सही कैरियर का चुनाव कैसे करें ?

कभी भी कैरियर का चुनाव करते वक्त ये अवश्य ध्यान रखें की आप कंफ्यूज न हो, आप अपनी रूचि, अपने इंटरेस्ट और अपनी काबिलियत को भली भांति पहचान सकते हैं, इन बातों का ध्यान रखते हुए हमेशा सही कैरियर का चुनाव करें! कभी भी भेड़ चाल ना चलें अर्थात यदि आपके दोस्त मेडिकल में जा रहे हैं तो ये जरुरी नहीं की आप भी मेडिकल सेलेक्ट करें, आपकी रूचि जिस स्ट्रीम में है आप हमेशा वही चुने! इसके साथ साथ बेहतर संस्थान का सेलेक्शन भी बहुत महत्वपूर्ण है! अगर आपने अभी 12वीं पास की है और आप कैरियर चुनना चाह रहे हैं तो निम्नलिखित तीन बिंदु आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण है! इनका अवश्य ख्याल रखें!

कुछ मुख्य बिंदु जिन पर आपको विचार करना चाहिए !

(1) लक्ष्य पहले से सुनिश्चित कीजिए

आपको क्या बनना है, इसकी सोच आपको पहले से ही सुनिश्चित कर लेनी चाहिए। जब लक्ष्य सुनिश्चित होता है, तो आप सही दिशा में आगे बढ़कर प्रयास करते हैं, वहीं भ्रम आपको दिशाहीन कर देता है। इस समय देश में जिस तरह से नए-नए संस्थान खुल रहे हैं तथा वहां पढ़ने वालों की तादाद बढ़ रही है, उसके मुताबिक शिक्षा का स्तर नहीं बढ़ा है इसलिए हर साल महाविद्यालयों से हजारों की तादाद में तकनीकी या गैर तकनीकी स्ट्रातकों के निकलने के बाद भी नौकरियां नहीं मिलती हैं। जहां तक सही कोर्स चुनने का सवाल है, तो छात्रों को सबसे ज्यादा शीघ्र नौकरी मिलने वाले क्षेत्रों का ध्यान रखना होगा।

(2) अपने करियर की योजना बनाएं

आज हर क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा बढ़ गई है। व्यावसायिक विषयों में सीमित प्रवेश संख्या होती है, प्रतिस्पर्धियों की संख्या ज्यादा है। आप में भले ही बहुत प्रतिभा या क्षमता हो, मेरिट हो, लेकिन मुमकिन है कि पसंद के कोर्स या कॉलेज में दाखिला न मिले। इसके लिए जरूरी है कि एक अलग योजना तैयार रहे। विकल्पों के लिए करियर काउंसलर, शिक्षकों, पुराने छात्रों या किसी की भी मदद ली जा सकती है।

(3) सही विषय का करें चुनाव

12वीं के बाद कोई खास कोर्स चुनना एक विद्यार्थी की रुचि और विकल्पों पर निर्भर करता है। अगर आप कलाकार या रचनाशील हैं तो विज्ञापन, फैशन, डिजाइन जैसे कोर्सेज चुन सकते हैं। अगर आपका दिमाग विश्लेषक है तो आपके लिए इंजीनियरिंग या टेक्नोलॉजी के क्षेत्र बेहतर होंगे। यहां बहुत सारे विशेषज्ञ कोर्सेज भी हैं जिन्हें करने के बाद करियर में ऊंची उड़ान भर सकते हैं। ऐसे में छात्र जब भी किसी खास कोर्स या प्रोग्राम में दाखिला कराने जाएं तो एक बात स्पष्ट रखें कि उस प्रोग्राम को चुनने के पीछे करने का उनका मकसद क्या है? फिर भी अगर भ्रम बना रहे तो अपना प्रोफाइलिंग टेस्ट कराएं। इससे आपको अपनी शक्ति का पता लग सकेगा और आप उसके मुताबिक कोर्स सिलेक्ट कर सकेंगे। कोर्स का सिलेक्शन करते समय इन खास बातों का ध्यान रखना जरूरी है।

(4) सही संस्थान का चुनाव

आजकल किसी भी संस्थानों में प्रवेश के लिए अमूमन प्रवेश परीक्षा आवश्यक होती है लेकिन इसके बावजूद भी किसी भी सरकारी अथवा प्राइवेट संस्थान में प्रवेश लेने से पहले निम्न बिंदुओं पर जरूर विचार कर लें-

संस्थान के मान्यता की समुचित जानकारी।
फीस स्ट्रक्चर।
फैकल्टी की गुणवत्ता।
प्रोफेसर, लेक्चरर और असिस्टेंट प्रोफेसर का अनुपात।
पाठ्यक्रम विविधता।
प्लेसमेंट या नौकरी मिलने का प्रतिशत।
मूलभूत सुविधाएं।

इसके बाद आप जिस भी फिल्ड में जा रहे हैं उस फिल्ड से अपना एक रोल मॉडल अवश्य चुने, उसके बाड़े में ज्यादा जानकारी जुटाएं इससे आपको हर वक्त सही निर्णय लेने में मदद मिलेगी, साथ ही सोशल नेटवर्क का बेहतरीन तरीके से इस्तेमाल करें! क्योंकि सही नेटवर्किंग किसी भी कैरीयर की सफलता के लिए बहुत जरुरी है! हम उम्मीद करते हैं की आपको हमारा ये आर्टिकल बहुत पसंद आया होगा तथा इससे आपको सही मार्गदर्शन मिलेगा! यदि आपके मन में कोई संदेह है या आप हमसे किसी प्रकार का प्रश्न पूछना चाहते हैं तो हमे कमेंट के माध्यम से संपर्क कर सकते हैं अथवा हमारे सोशल चैनल से हमसे जुड़ सकते हैं.

12वीं के बाद अपना करियर कैसे चुनें?

सही करियर का चुनाव आपको बुलंदियों पर पहुंचा देता है। अपने करियर को लेकर छात्रों के मन में कई सवाल आते हैं। करियर के लिए बड़े ध्यान से आगे बढ़ना होता है जिससे छात्र को बाद में उस कोर्स में कोई परेशानी न आए। एडवांस में ही अपने करियर के बारे में रिसर्च कर लेना भी आगे के लिए फायदेमंद रहता है। इस ब्लॉग में जानिए कि अपना करियर कैसे चुनें।

करियर के उद्देश्य को आकार दें

रुचियों के अनुसार विषय चुनें
खुद को समझें
करियर विकल्प तलाशें
सही डिग्री चुनें
करियर काउंसलर से लें सुझाव

करियर चुनते समय जरूरी है कि पहले उसके लिए आत्मनिरीक्षण कर लिया जाए। आप क्या चाहते हैं ये जानने के बाद सोच को पूरी तरह से विकसित करना थोड़ा और आसान हो जाता है। अपना करियर कैसे चुनें का जवाब जानना तब और आसान हो जाता है जब आत्मनिरीक्षण के समय हम कुछ सवालों के जवाब जान लेते हैं। आपको कुछ सवालों के जवाब जरूर देने चाहिए जैसे मेरी मेरे करियर से क्या अपेक्षा है? मेरी रुचि क्या हैं? वो एक्टिविटीज क्या हैं जिन्हें करना हमें अच्छा लगता है और जिन्हें करियर भी बनाया जा सकता है? आदि। इन सवालों के जवाब देने के बाद जरूर आपके पास कुछ विकल्प तो होंगे ही जिनके साथ अपना करियर कैसे चुनें का जवाब जानना थोड़ा तो आसान हो ही जाएगा।

रुचियों के अनुसार विषय चुनें

किसी एक करियर को चुनने से पहले ये जरूरी है कि आप खुद को पहचान लें। अपनी पसंद नापसंद को पहचान कर उन पर पकड़ बनाना भी जरूरी होता है। आपको अपनी स्किल्स और रुचियों का विश्लेषण करना होगा। ऐसा इसलिए क्योंकि आप अपने जीवन को एक दिशा में आगे बढ़ाने जा रहे हैं, इसलिए जरूरी है कि आप उस दिशा पर पूरे आनंद के साथ बढ़ें। अपनी कमजोरियों और ताकत पर मजबूत पकड़ के साथ आप अपना करियर कैसे चुनें का जवाब आसानी से दे पाएंगे।

खुद को समझें

करियर चुनते समय अपने व्यक्तित्व की खासियतों को जरूर ही ध्यान रखा जाना चाहिए। जल्दी में बिना सोचे समझे लिए गए निर्णय के बाद आपके लिए किसी खास करियर के साथ तालमेल बिठाना थोड़ा कठिन हो सकता है। उदाहरण के लिए अगर आप किसी कलात्मक काम को पसंद करते हैं तो फिर कॉर्पोरेट जॉब आपके लिए थोड़ी कठिन हो सकती है। इसलिए जरूरी है कि अपने व्यक्तित्व को समझा जाए और क्या करना है और क्या नहीं को भी जान लिया जाए। आप ऑनलाइन मौजूद कई सारे व्यक्तित्व परीक्षण देकर खुद को बेहतर तरीके से समझ पाएंगे और अपना करियर कैसे चुनें का जवाब भी पा लेंगे।

करियर विकल्प तलाशें

अपने लिए एक आदर्श नौकरी तलाशते हुए एक बड़ा कदम ये होगा कि आप ज्यादा से ज्यादा करियर विकल्पों को तलाशें। आज के समय में तो बेहिसाब करियर विकल्पों मौजूद हैं। इस वक्त ट्रेंड में शामिल करियर विकल्प हैं आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस, इंजीनियरिंग मैनेजमेंट, शू डिजाइनिंग, फैशन डिजाइनिंग आदि। अपनी रुचियों वाले फील्ड में रिसर्च करके आप अपना करियर कैसे चुनें का जवाब ढूंढ सकते हैं। इस दौरान आप उन विकल्पों के बारे में भी जान लेंगे जिनमें विस्तार या गिरावट हो रही है। एक बार आप अपने लिए करियर का चुनाव कर लेंगे तो इसके लिए जरूरी शिक्षा पाने के बारे में भी सोचना होता है। ऐसे कई करियर विकल्प हैं जिनमें काम करने के लिए कोई खास डिग्री या सर्टिफिकेट चाहिए होता है।

आदतें बदलें खुशियों को गले लगाएं

कुछ आदतें ऐसी होती हैं, जो दूसरों के साथ-साथ खुद को भी दुखी करती हैं। उन आदतों को अगर सुधार लें तो जीवन खुशहाल बन सकता है। आइए, जानते हैं वे आदतें कौन सी हैं और उन्हें कैसे सुधार सकते हैं।

1. लक्ष्य को टालते रहना

अपने लक्ष्य को टालते रहना, उन्हीं आदतों में से एक है। इब्बास के मनोवैज्ञानिक ओम प्रकाश के मुताबिक ऐसे लोगों को परिणाम की चिंता नहीं होती, लेकिन जब नतीजा सामने आ जाता है, तो उससे घबराने लगते हैं।

कैसे सुधारें: इस स्थिति से बचने के लिए खुद को लक्ष्य पर केंद्रित रखना चाहिए। लक्ष्य छोटा हो या बड़ा, उसके लिए एक समय सीमा तय करें और उसी अवधि में उसे हासिल करें।

2. दूसरों को दोष देना और बहाने बनाना

दूसरों को दोष देने की आदत तो आम है। हम में से अधिकांश इस आदत के शिकार हैं। किसी गलती को छुपाने की यह एक मनोवैज्ञानिक आदत है। इससे कुछ समय के लिए तो खतरा टल जाता है, पर बाद में वह और भी बड़ा बनकर सामने आता है। दरअसल, ऐसे लोग अपनी कमियों को देख ही नहीं पाते और इसीलिए उन्हें दूर भी नहीं कर पाते। ऐसे में वे बार-बार उन गलतियों को दोहराते हैं और मजाक का पात्र बन जाते हैं।

कैसे सुधारें: जिम्मेदार बनें और अपनी गलतियों की जिम्मेदारी लें। इससे आपकी जवाबदेही के साथ-साथ कार्यकुशलता भी बढ़ेगी। अपनी की गई गलती से आप बहुत कुछ सीख सकते हैं।

3. परिवर्तन को स्वीकारते नहीं

कुछ लोग आसानी से परिवर्तन को स्वीकार नहीं करते। उन्हें बात-बात पर खीझ आने लगती है और हर बार को नकारात्मक नजरिये से देखने लगते हैं। ऐसे लोग अपने साथ दूसरों को भी परेशान करते हैं।

कैसे सुधारें: सबसे पहले इस बात को समझें कि परिवर्तन प्रकृति का नियम है। बदलाव छोटी हो या बड़ी, उसमें सहज रहने वाला व्यक्ति ही समझदार माना जाता है। लेकिन उससे लड़ने वाला व्यक्ति खुद को कष्ट पहुंचाता है और आखिर में हार जाता है।

4. आत्मसम्मान को ताक पर रखना

किसी से हिसाब बराबर करने में कभी-कभी लोग अपने आत्मसम्मान को भी ताक पर रख देते हैं और बाद में पछताते हैं। जीत हासिल करने के लिए या किसी को हराने के लिए खुद को अपनी ही नजरों में दोषी बना लेना जिन्दगी भर का दुख दे जाता है।

कैसे सुधारें: कभी-कभी चीजों को नजरअंदाज कर देना चाहिए। हर बात को अपनी इज्जत का सवाल नहीं बनाना चाहिए।

5. दूसरों की आलोचना

ऑफिस में सहकर्मी का, घर में पड़ोसी का और कॉलेज में अपने दोस्तों की आलोचना कई बार आपको पीड़ा दे जाती है। इससे आपकी विश्वसनीयता पर तो सवाल उठता ही है, कई बार आप विवादों में घिर जाते हैं।

कैसे सुधारें: अच्छे श्रोता बनें। गॉसिप या आलोचना करना एक तरह की कमजोरी है। इससे बाहर निकलने के लिए सबसे अच्छा रास्ता यही है कि आप श्रोता बने रहें। लोगों की बातें सुनें और खुद में सुधार लाएं।

● जय कुमार सिंह

राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय
प्रमुख समाचार

अकबरुद्दीन को प्रोटेम स्पीकर बनाने पर भाजपा का विरोध

हैदराबाद। तेलंगाना भारतीय जनता पार्टी के प्रमुख और केंद्रीय मंत्री जी किशन रेड्डी ने शनिवार को विधानसभा के अस्थायी अध्यक्ष के रूप में ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन के अकबरुद्दीन ओवैसी की नियुक्ति पर कड़ी आपत्ति जताई और दावा किया कि यह वरिष्ठ विधायकों का अपमान है। यह कहते हुए कि यह वरिष्ठ विधायकों को इस पद पर नियुक्त करने की परंपरा के खिलाफ है, रेड्डी ने कहा कि वह इस मुद्दे को राज्यपाल के सामने उठाएंगे। जी किशन रेड्डी ने कहा कि हमने आठ सीटें जीती हैं और राज्य में 14 प्रतिशत वोट शेयर तक पहुंच गए हैं... एक वरिष्ठ नेता को प्रोटेम स्पीकर नियुक्त करने की एक परंपरा है। हालाँकि, कांग्रेस ने एआईएमआईएम के साथ अपने समझौते के कारण अकबरुद्दीन औवेसी को इस पद पर नियुक्त किया है। हमें इस पर आपत्ति है। हमारी मांग है कि विधानसभा अध्यक्ष का चुनाव इस प्रोटेम स्पीकर से नहीं होना चाहिए।

भाजपा सात दिन से सीएम तय नहीं कर पा रही : गहलोत

जयपुर। राजस्थान के निवर्तमान मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने विधानसभा चुनाव के नतीजे घोषित होने के एक हफ्ते बाद भी राज्य के अगले मुख्यमंत्री का नाम बताने में विफल रहने पर शनिवार को भारतीय जनता पार्टी पर कटाक्ष किया। उन्होंने कहा कि अगर कांग्रेस ने इतने समय तक मुख्यमंत्री नहीं चुना होता तो वे (बीजेपी) खूब चिल्लाते। गोगामेडी मामले में, मुझे एक दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करना पड़ा जिसमें कहा गया था कि इस मामले में एनआईए की जांच पर कोई आपत्ति नहीं है। नये मुख्यमंत्री को यह करना चाहिए था। गहलोत ने आरोप लगाते हुए कहा कि बीजेपी में अनुशासन नहीं है। उन्होंने कहा कि अब लगभग सात दिनों से, वे (भाजपा) तीन राज्यों में सीएम चेहरों की घोषणा नहीं कर पाए हैं। अगर हमने भी ऐसा किया होता, तो न जाने वे हमारे खिलाफ क्या आरोप लगाते और लोगों को गुमराह करते। उन्होंने चुनावों का ध्रुवीकरण किया... हम नई सरकार के साथ सहयोग करेंगे।

सिब्बल के बयान पर हिमंत बिस्वा सरमा का पलटवार

गुवाहाटी। असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई के दौरान असम को म्यांमार का हिस्सा कहने पर वकील कपिल सिब्बल पर पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि जिन्हें असम के इतिहास की जानकारी नहीं, उन्हें नहीं बोलना चाहिए। असम कभी भी म्यांमार का हिस्सा नहीं था। थोड़ी देर के लिए झड़पें हुईं। बस यही रिश्ता था। अन्यथा, मैंने ऐसा कोई डेटा नहीं देखा है जिसमें कहा गया हो कि असम म्यांमार का हिस्सा था। इसके बाद, असम के कैबिनेट मंत्री पीयूष हजारिका ने सिब्बल पर राज्य के इतिहास को खराब करने का आरोप लगाते हुए उनकी आलोचना की। उन्होंने कहा कि कपिल सिब्बल को ठीक से जानकारी नहीं दी गई है और वे वामपंथी उदारवादी दृष्टिकोण रखते हैं जो ऐसे सिद्धांतों को गढ़कर उत्तर पूर्व को अलग-थलग कर देता है। असम के इतिहास में किसी भी समय हम म्यांमार का हिस्सा नहीं थे। महाभारत काल से लेकर उससे भी पहले से हम दृढ़तापूर्वक भारतवर्ष का अभिन्न अंग रहे हैं।

भोपाल में 11 दिसंबर को होगी भाजपा विधायक दल की बैठक

भोपाल। मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव के बाद बीजेपी में मुख्यमंत्री पद के लिए मंथन चल रहा है, लेकिन अब जल्द ही मुख्यमंत्री पद को लेकर सस्पेंस खत्म हो जाएगा। क्योंकि, विधायक दल की बैठक की तारीख और समय तय हो चुका है। मध्य प्रदेश में सोमवार यानी 11 दिसंबर को विधायक दल की बैठक बुलाई गई है। सभी विधायकों को इस बारे में आधिकारिक रूप से सूचित किया गया है। विधायक दल की बैठक की अध्यता केंद्रीय नेतृत्व द्वारा चुने गए पर्यवेक्षकों के द्वारा किया जाएगा। जिसमें मुख्यमंत्री के चेहरा कौन होगा इस पर विचार किया जाएगा। बता दें कि, मध्य प्रदेश में केंद्रीय नेतृत्व ने 8 दिसंबर को पर्यवेक्षकों के नाम का ऐलान कर दिया है। मध्य प्रदेश में हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर, ओबीसी मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष के लक्ष्मण और पार्टी की राष्ट्रीय सचिव आशा लाकड़ा को पर्यवेक्षक नियुक्त किया गया है।

बसपा ने सांसद दानिश अली को पार्टी से किया निलंबित

नई दिल्ली। मायावती के नेतृत्व वाली बहुजन समाज पार्टी ने अपने सांसद दानिश अली को पार्टी विरोधी गतिविधियों के लिए निलंबित कर दिया है। इस निर्णय की जानकारी शनिवार को पार्टी की एक विज्ञप्ति के माध्यम से दी गई। पार्टी के राष्ट्रीय सचिव सतीश चंद्र मिश्रा द्वारा हस्ताक्षरित पत्र में कहा गया है, आपको कई बार मौखिक रूप से कहा गया था कि आपको पार्टी की नीतियों, विचारधारा और अनुशासन के खिलाफ कोई बयान या कार्रवाई नहीं करनी चाहिए, लेकिन इसके बावजूद आप लगातार पार्टी के खिलाफ काम कर रहे हैं। पत्र में कहा गया है, यहां आपको यह जानकारी देना भी उचित होगा कि 2018 तक आप देवेगौड़ा की जनता पार्टी के सदस्य के रूप में काम कर रहे थे, और कर्नाटक में 2018 का आम चुनाव बहुजन समाज पार्टी और जनता पार्टी के साथ गठबंधन में लड़ा गया था। और इसमें गठबंधन आप देवेगौड़ा की पार्टी की ओर से बहुत सक्रिय थे। कर्नाटक में उक्त चुनाव के नतीजे घोषित होने के बाद देवेगौड़ा के अनुरोध पर आपको बसपा के उम्मीदवार के रूप में अमरोहा से टिकट दिया गया था।

प्रधानमंत्री ने वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की टिप्पणी दोहराई

भारत में लालफीताशाही कम हुई : मोदी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार सुबह वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से फिनटेक से जुड़े हुए ग्लोबल थॉट लीडरशिप प्लेटफॉर्म-इन्फिनिटी फोरम के दूसरे संस्करण को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि चालू वित्त वर्ष के पहले छह महीनों में भारत की 7.7 प्रतिशत की सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) वृद्धि देश की मजबूत होती अर्थव्यवस्था और पिछले 10 वर्षों में किए गए परिवर्तनकारी सुधारों का प्रतिबिंब है।

पीएम मोदी ने ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज और वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम के एक बयान को दोहराया। उन्होंने कहा कि अल्बनीज ने इस साल की शुरुआत में कहा था कि भारत ग्लोबल साउथ को नेतृत्व देने के लिए मजबूत स्थिति में है। वहीं, कुछ हफ्ते पहले वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम का कहना था कि भारत में लालफीताशाही कम हुई है और निवेश के लिए बेहतर माहौल है।

बता दें, इन्फिनिटी फोरम का दूसरा संस्करण वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट 2024 के पूर्ववर्ती कार्यक्रम के रूप में भारत सरकार के तत्वाधान में अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण और गिफ्ट सिटी द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया। यह फोरम ऐसा मंच है कि जहां दुनिया भर से प्रगतिशील विचार, गंभीर समस्याएं, नई टेक्नोलॉजी की तलाश की जाती हैं, उनपर चर्चा की जाती है और समाधानों व अवसरों में विकसित की जाती है।

मोदी ने यहां आयोजित 'इनफिनिटी फोरम 2.0' सम्मेलन को वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से संबोधित करते हुए कहा कि उनकी सरकार 'गुजरात इंटरनेशनल फाइनेंस टेक- सिटी' (गिफ्ट सिटी) को नए युग की वैश्विक वित्तीय और प्रौद्योगिकी सेवाओं का वैश्विक केंद्र बनाना चाहती है। उन्होंने कहा कि चालू वित्त वर्ष के पहले छह महीनों में भारत ने 7.7 फीसदी की जीडीपी वृद्धि हासिल की है। आज पूरी दुनिया की उम्मीदें भारत पर टिकी हैं और यह सिर्फ अपने आप नहीं हुआ। यह भारत की मजबूत होती अर्थव्यवस्था और पिछले 10 वर्षों में किए गए परिवर्तनकारी सुधारों का भी प्रतिबिंब है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत आज दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ते वित्तीय प्रौद्योगिकी (फिनटेक) बाजारों में से एक है और 'गिफ्ट' अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र

(आईएफएससी) इसके केंद्र के रूप में उभर रहा है। उन्होंने विशेषज्ञों से हरित ऋण के लिए एक बाजार तंत्र विकसित करने पर अपने विचार साझा करने का आग्रह किया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी ने गुजरात के पारंपरिक गरबा नृत्य को यूनेस्को की 'मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची' में शामिल करने पर प्रदेश की जनता को बधाई दी।

मोदी की गारंटी पर पूरे देश को भरोसा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विकसित भारत संकल्प यात्रा के लाभार्थियों से बातचीत की। उन्होंने कहा मोदी की गारंटी वाली गाड़ी को लेकर जो उत्साह गांव-गांव में दिख रहा है, हिंदुस्तान के कोने-कोने में दिख रहा है, चाहे उत्तर हो, दक्षिण हो, पूरब हो, पश्चिम हो। बहुत ही छोटा गांव या बड़ा गांव हो, लोग गाड़ी को खड़ी करके सारी जानकारियां लेते हैं। ये अपनेआप में अद्भुत है। उन्होंने कहा कि देश भर के गांवों में करोड़ों परिवारों को हमारी सरकार की किसी न किसी योजना का जरूर लाभ मिला है। और जब ये लाभ मिलता है तो एक विश्वास बढ़ता है। जिंदगी जीने की एक नई ताकत आ जाती है।

मोदी ने कहा कि पहले जो भीख मांगने की मन: स्थिति रहती थी अब वो गई। सरकार ने लाभार्थियों की पहचान की और फिर उन तक लाभ पहुंचाने की कदम उठाए। तब ही आज लोग कहते हैं- मोदी की गारंटी यानी, गारंटी पूरी होने की गारंटी। उन्होंने कहा कि विकसित भारत संकल्प यात्रा ऐसे लोगों तक पहुंचने का बहुत बड़ा माध्यम बनी है, जो अब तक सरकार की योजनाओं से नहीं जुड़ पाए। यह बहुत बड़ी बात है कि इतने कम समय में अब तक सवा करोड़ से अधिक लोग मोदी की गारंटी वाली गाड़ी तक पहुंचे हैं और उसका स्वागत किया है, उससे जुड़ने की कोशिश की है और उसे सफल बनाने का काम किया है। प्रधानमंत्री ने कहा कि सरकार की लगातार कोशिश है कि जब मोदी की गारंटी वाली गाड़ी पहुंचे तो गांव का हर एक व्यक्ति उस गाड़ी तक जरूर पहुंचना चाहिए, तब ही हम हर लाभार्थी तक पहुंच पाएंगे, क्योंकि हमें देश को आगे बढ़ाना है। उन्होंने कगा कि मोदी की गारंटी वाली गाड़ी पहुंचने के बाद लगभग एक लाभ नए लाभार्थियों ने उज्ज्वला योजना के तहत मुफ्त गैस कनेक्शन के लिए आवेदन किया है। इस यात्रा के दौरान मौके पर ही 35 लाख से अधिक आयुष्मान कार्ड भी दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि ये यात्रा देश के कोने-कोने तक पहुंच रही है...और लोगों के दिलों में खुशी और उत्साह का संचार कर रही है।

मोदी ने कहा कि ओडिशा में लोग अद्भुत पारंपरिक आदिवासी नृत्य के साथ विकसित भारत संकल्प यात्रा का स्वागत कर रहे हैं...मैंने पश्चिम खासी हिल्स क्षेत्रों में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों के मनमोहक वीडियो देखे...मैं इन सब से मंत्रमुग्ध हो गया हूं। उन्होंने कहा कि मेरे परिवारजन तक पहुंचने का आपके सेवक का यह प्रयास है। मैं आपके गांव तक आ रहा हूं, गाड़ी के माध्यम से आ रहा हूं। इसलिए कि आपके सुख-दुख का साथी बनूं, आपके आशा-आकांक्षाओं को समझूं। उसको पूरा करने के लिए सरकार की पूरी शक्ति लगाऊं। उन्होंने कहा कि देश का हर गरीब मेरे लिए वीआईपी है, देश की हर माता-बहन-बेटी मेरे लिए वीआईपी है, देश का हर किसान मेरे लिए वीआईपी है, देश का हर युवा मेरे लिए वीआईपी है। नरेंद्र मोदी ने कहा कि देश में हाल में हुए विधानसभा चुनावों के परिणामों की आज भी बहुत चर्चा हो रही है। इन चुनाव नतीजों ने साफ कर दिया है कि मोदी की गारंटी में ही दम है। मैं सभी मतदाताओं का आभारी हूं, जिन्होंने मोदी की गारंटी पर भरोसा किया। उन्होंने कहा कि अगर विपक्षी दलों ने राजनीति स्वार्थ के बजाये सेवाभाव को सर्वोपरि रखा होता, सेवाभाव को ही अपना काम समझा होता, तो देश की बहुत बड़ी आबादी अभाव में, मुसीबतों

ये मोहब्बत की कौन सी दुकान है

कांग्रेस सांसद धीरज साहू के ठिकानों पर छापेमारी को लेकर भाजपा ने कसा तंज

रांची। झारखंड और ओडिशा में बौध डिस्टिलरीज के परिसरों पर आयकर विभाग की छापेमारी चौथे दिन भी जारी है जिसकी चर्चा पूरे देश में हो रही है। छापेमारी में ढाई सौ करोड़ से ज्यादा रुपये बरामद हुए हैं। हालांकि आयकर विभाग की ओर से कोई बयान सामने नहीं आया है। नोटों की गिनती अभी भी जारी है। बताया जा रहा है कि बलदेव साहू इंफा प्राइवेट लिमिटेड कंपनी, बौध डिस्टिलरीज की एक समूह कंपनी है, जो झारखंड से कांग्रेस के राज्यसभा सांसद धीरज साहू से जुड़ी हुई है। मामले को लेकर राजनीतिक बयानबाजी का दौर जारी है। बीजेपी नेता रविशंकर प्रसाद ने कहा है कि राहुल गांधी से पूछना चाहिए कि ये मोहब्बत की कौन सी दुकान है। कांग्रेस के एक सांसद से जुड़े परिसर से 200 करोड़ रुपये मिले हैं। भ्रष्टाचार की मूर्ति है कांग्रेस पार्टी... गौर हो कि कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी अपनी रैली में कहते नजर आते हैं कि नफरत को खत्म करके मोहब्बत की दुकान खोलनी है। उनके इसी बयान पर बीजेपी ने तंज कसा है।

नोटों से भरे कुल 156 बैग मिले

यहां चर्चा कर दें कि कांग्रेस सांसद धीरज साहू अभी सुर्खियों में हैं। इसकी वजह है, उनसे जुड़ी कंपनियों व उनके आवास पर आईटी का छापा और उनके घर उन 30 अलमारियों का मिलना जिनमें केवल और केवल नोटों की गड्डियां भरी हुईं मिलीं। इतना ही नहीं नोटों से भरे कुल 156 बैग भी मिले हैं। धीरज साहू के पास से बेहिसाब संपत्ति मिली है। नकद इतने ज्यादा हैं कि मशीनें भी इसे नहीं गिन पा रहीं हैं।

बाबूलाल मरांडी ने की ये मांग

इस बीच बीजेपी की झारखंड इकाई के अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने कांग्रेस के राज्यसभा सांसद धीरज प्रसाद साहू के परिसर से बेहिसाब नकदी की बरामदगी को लेकर उनकी गिरफ्तारी की मांग की है। मरांडी ने मांग की कि साहू के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज हो और उन्हें गिरफ्तार करना चाहिए। इस बात पर जोर देते हुए कि इतनी बड़ी नकदी की बरामदगी हैरान कर देने वाली है, उन्होंने मामले में गहन जांच की मांग की है। साथ ही आरोप लगाया कि इस राशि का कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व के साथ-साथ झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के साथ भी संबंध है।

खेल
प्रमुख समाचार

भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच टी20 मैच आज

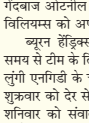

डरबन। रविवार को किंग्समीड में भारत के साथ शुरू होने वाली तीन मैचों की टी20 सीरीज के लिए दक्षिण अफ्रीका के पास कई अपरिचित चेहरे हैं, लेकिन कप्तान एडेन मार्कराम ने कहा कि वह अगले साल के विश्व कप से पहले अपनी आक्रामक शैली लागू करेंगे। कई प्रमुख खिलाड़ियों को आराम देने के बाद, मेजबान ने श्रृंखला के लिए बल्लेबाज मैथ्यू ब्रीट्ज़के और डोनोवन फरेरा, और तेज गेंदबाज ओटनील बार्टमैन, नांद्रे बर्गर और लिज़ाद विलियम्स को अपनी टीम में शामिल किया है।

ब्यूरन हेंड्रिक्स, जिन्होंने दो साल से अधिक समय से टीम के लिए नहीं खेला है, को भी नियमित लुंगी एनगिडी के चोट के कारण बाहर होने के बाद शुक्रवार को देर से शामिल किया गया। मार्कराम ने शनिवार को संवाददाताओं से कहा, हमने (घरेलू क्रिकेट में) नए चेहरों के खिलाफ काफी खेला है, लेकिन मुझे लगता है कि आप उनके साथ सीरीज में जाने से पहले उन्हें गहराई से जानना चाहेंगे। उन्होंने कहा, लेकिन हमने साथ में कुछ अच्छे दिन बिताए हैं, जिससे हम यह समझ पाए हैं कि उन्हें किस चीज़ से प्रेरणा मिलती है। मुझे लगता है कि आजकल क्रिकेट की यही प्रकृति है, श्रृंखलाएं तेजी से आती हैं और ऐसे चरण भी होंगे जहां नए लोग आएंगे और उन्हें जल्दी से अपने पैर जमाने होंगे। टी20 विश्व कप 4-30 जून तक वेस्टइंडीज और संयुक्त राज्य अमेरिका में आयोजित किया जाएगा और अब और तब के बीच सबसे छोटे प्रारूप में दक्षिण अफ्रीका के लिए केवल कुछ ही अवसर हैं, क्योंकि उसके अधिकांश खिलाड़ी घरेलू टी20 लीग में शामिल हैं। मार्कराम ने कहा, बीच में बहुत सारा क्रिकेट होता है लेकिन एक टीम के रूप में हमारे लिए बहुत अधिक क्रिकेट नहीं होता है। उन्होंने कहा, जब तक लोग इस बात को समझते हैं कि हम एक टीम के रूप में खेलने की कोशिश करना चाहते हैं और विभिन्न लीगों और टूर्नामेंटों में खेलते समय उन्हें अपने करीब रख सकते हैं।

आर्थिक/वाणिज्य/विज्ञान/
प्रमुख समाचार

जीडीपी ग्रोथ पिछले 10 वर्षों के परिवर्तनकारी सुधारों का प्रतिबिंब

नईदिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को कहा कि चालू वित्त वर्ष के पहले छह महीनों में भारत की 7.7 प्रतिशत की सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) वृद्धि देश की मजबूत होती अर्थव्यवस्था और पिछले 10 वर्षों में किए गए परिवर्तनकारी सुधारों का प्रतिबिंब है। मोदी ने यहां आयोजित 'इनफिनिटी फोरम 2.0' सम्मेलन को वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से संबोधित करते हुए कहा कि उनकी सरकार 'गुजरात इंटरनेशनल फाइनेंस टेक-सिटी' (गिफ्ट सिटी) को नए युग की वैश्विक वित्तीय और प्रौद्योगिकी सेवाओं का वैश्विक केंद्र बनाना चाहती है। मोदी ने अपने संबोधन में कहा, चालू वित्त वर्ष के पहले छह महीनों में भारत ने 7.7 फीसदी की जीडीपी वृद्धि हासिल की हैऔर पूरी दुनिया की उम्मीदें भारत पर टिकी हैं और यह सिर्फ अपने आप नहीं हुआ। यह भारत की मजबूत होती अर्थव्यवस्था और पिछले 10 वर्षों में किए गए परिवर्तनकारी सुधारों का भी प्रतिबिंब है।

इंडीग्रिड ने इंस्टीट्यूशनल प्लेसमेंट से जुटाए 670 करोड़

नईदिल्ली। बिजली क्षेत्र की बुनियादी ढांचा निवेश ट्रस्ट इंडीग्रिड ने संस्थागत नियोजन (आईपी) के जरिये 670 करोड़ रुपये जुटाए हैं। कंपनी ने एक बयान में कहा कि भारत के पहले सार्वजनिक रूप से सूचीबद्ध बिजली क्षेत्र के बुनियादी ढांचा निवेश ट्रस्ट (इनविट) ने सेबी द्वारा निर्धारित संस्थागत नियोजन प्रक्रिया के माध्यम से सफलतापूर्वक 670 करोड़ रुपये जुटाए हैं। बयान के अनुसार, पांच दिसंबर को शुरू हुई आईपी में मौजूदा और नए भारतीय और वैश्विक संस्थागत निवेशकों, दोनों की ओर से मजबूत मांग देखी गई। इंडीग्रिड ने सितंबर, 2023 में तरजीही निर्गम के जरिए 400 करोड़ रुपये से अधिक जुटाए थे। हाल ही में संपन्न संस्थागत नियोजन के साथ कंपनी ने चालू वित्त वर्ष में सफलतापूर्वक 1,070 करोड़ रुपये का इक्विटी कोष जुटाया है।

सरकार के लिए ब्याज छूट योजना के वास्तविक लाभार्थियों की पहचान करना महत्वपूर्ण

नईदिल्ली। सरकार के लिए विभिन्न निर्यात क्षेत्रों को प्रदान की गई ब्याज छूट योजना के वास्तविक लाभार्थियों की पहचान करना महत्वपूर्ण है। शोध संस्थान जीटीआरआई ने शनिवार को यह बात कही। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने खेप भेजने के पहले और बाद में रुपया निर्यात ऋण की सुविधा अगले साल 30 जून तक देने के लिए शुक्रवार को ब्याज समरूपता या सब्सिडी योजना के तहत 2,500 करोड़ रुपये के अतिरिक्त आवंटन को मंजूरी दे दी। यह योजना एक अप्रैल, 2015 को शुरू की गई थी और इसकी अवधि 31 मार्च, 2020 तक ही रखी गई थी। वैश्विक व्यापार अनुसंधान पहल (जीटीआरआई) ने कहा, योजना का अभी तक कोई विस्तृत अध्ययन नहीं किया गया है। सरकार के लिए वास्तविक लाभार्थियों की पहचान करना महत्वपूर्ण है।

भारत को प्रति व्यक्ति उच्च कार्बन उत्सर्जन वाले देशों के साथ नहीं जोड़ा जा सकता

नईदिल्ली। यूरोपीय संसद के एक वरिष्ठ अधिकारी ने शनिवार को कहा कि भारत का प्रतिव्यक्ति कार्बन उत्सर्जन बेहद कम है, ऐसे में इसे चीन और अमेरिका जैसे देशों से जोड़ना पूरी तरह से अस्वीकार्य है। यूरोपीय संसद के सदस्य पीटर लीसे ने यहां संयुक्त राष्ट्र जलवायु शिखर सम्मेलन में मीडिया से बातचीत में कहा, जब जर्मनी में लोगों के पास दो कार हैं, तो भारतीय लोगों के पास भी एक कार तो होनी ही चाहिए। प्रति व्यक्ति उत्सर्जन कम होने के बावजूद जलवायु शिखर सम्मेलन में भारत को अमेरिका जैसे प्रमुख उत्सर्जकों के साथ जोड़ने के ठोस प्रयास किए गए हैं। लीसे ने कहा, हर किसी के लिए यह स्वीकार करना बहुत महत्वपूर्ण है कि संयुक्त अरब अमीरात, चीन और अमेरिका का प्रति व्यक्ति उत्सर्जन वे भारत से बहुत अलग हैं।

तीज-त्योहार और शादियों का बाजार भी देश की अर्थव्यवस्था को करता है मजबूत

प्रहलाद सबनानी

भारतीय सनातन संस्कृति के अनुसार, पवित्र शादियों में विभिन्न आध्यात्मिक, धार्मिक एवं सांसारिक संस्कार संपन्न कराने के लिए समाज के गणमान्य नागरिकों, रिश्तेदारों व परिजनों को साथ लेकर विभिन्न प्रकार के भव्य आयोजन संपन्न किए जाते हैं। इन आयोजनों में विभिन्न कार्यक्रम होते हैं एवं आजकल तो ऐसे शुभ अवसरों पर किए जा रहे भारी व्यय से देश की अर्थव्यवस्था को बल मिलता दिखाई दे रहा है।

कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स के अनुसार, देश में बीते नवंबर से लेकर आगामी लगभग चार माह के दौरान 38 लाख से अधिक शादियों के आयोजन होने जा रहे हैं। इन चार माह में लगभग 4.75 लाख करोड़ की राशि व्यय होने की संभावना व्यक्त की जा रही है, जबकि पिछले वर्ष की इसी अवधि में 35 लाख शादियों पर 3.75 लाख करोड़ रुपये की राशि खर्च हुई थी। शादी के विभिन्न कार्यक्रमों में विभिन्न मदों पर होने वाले खर्च के अनुमानों के अनुसार, इस वर्ष नए कपड़े और नए आभूषण खरीदने की मद पर एक लाख करोड़ रुपये से अधिक की राशि खर्च होने वाली है।

इसके अलावा, मेहमानों की खातिरदारी पर 60 हजार करोड़ रुपये से अधिक की राशि खर्च होने जा रही है और शादी समारोह से जुड़े कार्यक्रमों पर भी इतनी ही राशि खर्च होने जा रही है। विश्व का कोई भी देश शादियों के मौसम में इतनी भारी-भरकम राशि खर्च नहीं करता। आज तो बगैर विवाह के लिव इन रिलेशन नामक रिवाज ही चल पड़ा है। विकसित देशों के युवा इस प्रकार के रिवाजों के चलते बच्चे भी पैदा नहीं कर रहे हैं और कुछ समय पश्चात ही आपस में रिश्तों को तलाक का रूप दे देते हैं। यदि इस बीच

किसी जोड़े को बच्चा हो भी जाता है, तो उसे सिंगल पेरेंट के रिवाज के तहत केवल मां के पास ही रहना होता है। इन्हीं कारणों के चलते आज विश्व के कई देशों में बुजुर्गों की संख्या बढ़ती जा रही है, जिसका सीधा प्रभाव इन देशों की अर्थव्यवस्थाओं पर पड़ता है।

कुल मिलाकर देखें, तो यह सनातन संस्कृति के संस्कार ही हैं, जो भारत में आज भी कुटुंब व्यवस्था को जीवित रखे हुए हैं। अन्यथा, विकसित देशों में चूंकि संयुक्त परिवार का चलन नहीं के बराबर है अत: बुजुर्गों की देखभाल इन देशों की सरकार को सामाजिक लाभ योजना के अंतर्गत करनी होती है, जिस पर होने वाला खर्च इतना अधिक हो गया है कि इन देशों की बजट व्यवस्था ही भारी दबाव में आ गई है। इसके ठीक विपरीत, भारत में विभिन्न त्योहार भी बड़े ही उत्साह से मनाए जाते हैं। इसके चलते इस वर्ष दीपावली एवं धनतेरस के त्योहारी मौसम में देश में 3.75 लाख करोड़ रुपये का व्यापार हुआ है। केवल करवाचौथ के दिन 15,000 करोड़ रुपये का व्यापार संपन्न हुआ था। देश में त्योहारी मौसम में बीते अक्टूबर में 23 लाख वाहनों की बिक्री हुई है। आने वाले शादियों के मौसम में भी वाहनों की जबरदस्त बिक्री होने की संभावना है। इन वजहों से भारत में तेजी से गरीबी एवं बेरोजगारी भी कम हो रही है। आज भारत में उच्च निवल संपत्ति वाले नागरिकों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। अत: समस्त मेहमानों सहित अब विदेश में जाकर शादी की रस्में संपन्न करने का प्रचलन भारत में बहुत बढ़ गया है। इसी वजह से, अपने प्रधानमंत्री को देश के नागरिकों से विदेश में जाकर शादी की रस्में पूर्ण नहीं करने की अपील करनी पड़ी, क्योंकि इससे शादी की रस्मों पर होने वाले व्यय का लाभ उस देश को मिल जाता है, जबकि भारत में ही पर्याप्त मात्रा में पर्यटन स्थल उपलब्ध हैं। इससे शादी पर होने वाले खर्च का लाभ भारतीय अर्थव्यवस्था को मिलेगा और देश का पैसा भी देश में ही बना रहेगा। आज भारतीय नागरिकों द्वारा सनातन संस्कृति के संस्कारों के पालन की बदौलत भारतीय अर्थव्यवस्था को लाभ मिलता दिखाई दे रहा है और विभिन्न अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थान भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास की दर को लगातार बढ़ाते जा रहे हैं। हाल ही में अंतरराष्ट्रीय मौद्रिक संघ ने वर्ष 2024 के लिए भारत में सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि दर के अनुमान को बढ़ाकर 6.3 फीसदी कर दिया है।

कही-सुनी

रवि भोई

छत्तीसगढ़ में आदिवासी मुख्यमंत्री का फार्मूला

कहा जा रहा है कि छत्तीसगढ़ में किसी आदिवासी नेता को मुख्यमंत्री बनाया जा सकता है। वैसे अभी भी

सर्वमान्य नेता के तौर पर डॉ रमन सिंह की चर्चा ज्यादा है, लेकिन दिल्ली के नेता पुराने चेहरों को कमान सौंपने के पक्ष में नहीं हैं। इस कारण पेंच फंस रहा है। कहा जा रहा है कि छत्तीसगढ़ में डॉ रमन सिंह मुख्यमंत्री बनेंगे या उनकी सहमति से किसी नेता को मुख्यमंत्री बनाया जाएगा। ऐसे में विष्णुदेव साय के नाम पर सहमति बनने की संभावना ज्यादा व्यक्त की जा रही है। विष्णुदेव साय कई बार प्रदेश भाजपा अध्यक्ष और केंद्र में मंत्री रह चुके हैं। वे साफ़ सुथरी छवि के साथ सहज और सरल भी हैं। मुख्यमंत्री की दौड़ में आदिवासी नेता रामविचार नेताम और रेणुका सिंह भी हैं, लेकिन इनके नाम पर आम सहमति बन पाने की संभावना कम नजर आ रही है। माना जा रहा है कि भाजपा 2024 के लोकसभा और ओडिशा एवं झारखंड विधानसभा चुनाव को मद्देनजर रखते हुए छत्तीसगढ़ में आदिवासी चेहरा का दांव खेलना चाहती है। माना जा रहा है कि आदिवासी मुख्यमंत्री बनाए जाने की स्थिति में किसी ओबीसी नेता को उपमुख्यमंत्री बनाया जा सकता है। इसके लिए अरुण साव का नाम सबसे ज्यादा चर्चा में है। अरुण साव अभी प्रदेश भाजपा अध्यक्ष हैं और साहू समाज से आते हैं। बताते हैं इस बार साहू समाज ने दिल खोलकर भाजपा का साथ दिया है। बताया जा रहा है कि रविवार या सोमवार को छत्तीसगढ़ के नए मुख्यमंत्री के नाम पर मुहर लग जाएगी।

ओपी चौधरी तो मंत्री बनेंगे ही ?

कहा जा रहा है कि ब्यूरोक्रेट से राजनेता बने ओपी चौधरी भले मुख्यमंत्री न बने मंत्री तो जरूर बनेंगे ? चुनावी सभा में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा चौधरी को बड़े आदमी बनाने के फार्मूले के बाद यह धारणा प्रबल हो गई है। केदार कश्यप, लता उसेंडी, विजय शर्मा, गजेंद्र यादव के भी मंत्री बनने की चर्चा है। माना जा रहा है इस बार भाजपा सरकार के मंत्रिमंडल में आदिवासी और अन्य पिछड़ा वर्ग का प्रतिनिधित्व ज्यादा होगा। इस बार अनुसूचित जाति वर्ग से एक ही नेता को मंत्री बनाए जाने की संभावना है। पुन्नूलाल मोहले या दयालदास बघेल का नंबर फिर लग सकता है। अग्रवाल-जैन समुदाय से एक ही मंत्री बनाए जाने की चर्चा है। इस वर्ग से किसी एक को विधानसभा अध्यक्ष भी बनाया जा सकता है। खबर है कि कैबिनेट में दो महिलाएं भी हो सकती हैं।

सुबोध सिंह के पीएस सीएम बनने की चर्चा

1997 बैच के आईएएस सुबोध सिंह के पीएस सीएम बनने की चर्चा है। सुबोध सिंह अभी नेशनल टेस्टिंग एजेंसी के महानिदेशक हैं। वे 2019 से केंद्र सरकार में प्रतिनियुक्ति पर हैं। सुबोध सिंह छत्तीसगढ़ में भूपेश बघेल की सरकार बनने के कुछ महीने बाद ही दिल्ली चले गए थे। ऋचा शर्मा, सोनमणि बोरा ,रजतकुमार, मुकेश बंसल जैसे छत्तीसगढ़ कैडर के अफसर अब वापस आ जाएंगे। निहारिका बारीक़ को अब अच्छी पोस्टिंग मिलने की संभावना है। भाजपा सरकार में सुब्रत साहू पर गाज गिर सकती है। भूपेश बघेल की सरकार में सुब्रत साहू पावरफुल अफसर थे। माना जा रहा है कि नई सरकार एसीएस रेणु पिल्लै को भी मुख्यधारा में नहीं रखेगी। नई सरकार में आईएएस अफसरों में कई बदलाव की चर्चा है। कई कलेक्टर और एसपी भी फील्ड से मंत्रालय में आएंगे।

डीजीपी के बदले जाने की सुगबुगाहट

विधानसभा चुनाव के वक्त भाजपा के नेताओं ने चुनाव आयोग से डीजीपी अशोक जुनेजा की शिकायत की थी। इस कारण राज्य में सरकार के बदलाव के साथ ही डीजीपी के बदले जाने की सुगबुगाहट भी शुरू हो गई है। वैसे तो अशोक जुनेजा 60 साल के हो गए हैं, पर तकनीकी कारणों से वे डीजीपी के पद पर बने हैं। माना जा रहा है कि तकनीकी पेंच नहीं फंसा तो भाजपा सरकार अशोक जुनेजा की जगह किसी दूसरे अफसर को डीजीपी के पद पर बैठा सकती है। वैसे तो अशोक जुनेजा के बाद 1990 बैच के आईपीएस राजेश मिश्रा सबसे वरिष्ठ हैं। राजेश मिश्रा भूपेश सरकार में लूप लाइन में ही रहे, लेकिन वे जनवरी 2024 में रिटायर हो जाएंगे। सरकार चाहे तो सेवाविस्तार के साथ जिम्मेदारी सौंप सकती है। इनके बाद 1992 बैच के आईपीएस अरुण देव गौतम और पवन देव हैं। कहा जा रहा है कि पवनदेव के खिलाफ एक जांच का निपटारा न होने के कारण मामला फंस सकता है, ऐसे में नए डीजीपी के लिए अरुण देव गौतम का पलड़ा भारी रह सकता है।

हार के बाद निशाने पर भूपेश और सिंहदेव

राज्य में कांग्रेस की पराजय के बाद नेताओं और कार्यकर्ताओं का गुस्सा फूटने लगा है। बृहस्पत सिंह जैसे कुछ लोग खुले आम टीएस सिंहदेव को निशाने पर ले रहे हैं, तो अमरजीत भगत जैसे लोग परोक्ष रूप से अपने प्रतिद्वंद्वियों को निशाने पर ले रहे हैं। भूपेश बघेल से छत्तीस का आंकड़ा रखने वाले एक पूर्व मंत्री हार का ठीकरा कामचलाऊ मुख्यमंत्री पर फोड़ रहे हैं। चुनाव में हार सिंहदेव के लिए नीम का काढ़ा जैसा हो गया है। वे 94 वोटों से हार को न तो पचा पा रहे हैं और न ही उगल पा रहे हैं। यह हार रविंद्र चौबे के लिए सदमा जैसा है। एक गैर राजनीतिक व्यक्ति ने उन जैसे अनुभवी और चतुर राजनीतिक खिलाड़ी को पटखनी दे दी। 2023 का चुनाव परिणाम कांग्रेस -भाजपा के कई नेताओं को बड़ा सबक सीखा गया और घमंड को चूर-चूर कर दिया।

एससी सीटों में दांवपेंच से बची कांग्रेस

कहते हैं कांग्रेस अनुसूचित जाति बहुल विधानसभा सीटों में आखिरी क्षण में खेला करने में कामयाब रही, नहीं तो कांग्रेस को 35 सीटें भी नहीं मिलती। खबर है कि कांग्रेस सराईपाली से सारंगढ़ होते जांजगीर-चांपा और बिलासपुर जिले के एससी सीटों में घुसी और दांव चला, उसे कामयाबी मिली। इन इलाकों के एससी सीटों में रणनीतिक दांवपेंच से कांग्रेस के वोट न तो बसपा के प्रत्याशी ज्यादा काट सके और न ही जोगी कांग्रेस के उम्मीदवार। खबर है कि दूसरे चरण में एससी वोटरों को साधने के कारण ही चंद्रपुर और कसडोल जैसे विधानसभा क्षेत्र कांग्रेस के कब्जे में आ गए । बताते हैं एससी सीटों में भाजपा का मिशन फेल हो गया।

कौन बनेगा नेता प्रतिपक्ष ?

भूपेश बघेल नेता प्रतिपक्ष बनेंगे या डॉ चरणदास महंत, यह सवाल लोगों के जेहन में तैर रहा है। कांग्रेस के विधायकों में ये दो लोग ही काफी अनुभवी हैं। 2003 में मुख्यमंत्री की कुर्सी से उतरने के बाद अजीत जोगी नेता प्रतिपक्ष बनना चाहते थे, पर हाईकमान ने महेंद्र कर्मा को नेता प्रतिपक्ष बना दिया। भूपेश बघेल निवर्तमान मुख्यमंत्री हैं। वैसे मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री की कुर्सी से उतरने के बाद कमलनाथ काफी दिनों तक नेता प्रतिपक्ष की भूमिका निभाते रहे। डॉ चरणदास महंत पांच साल तक विधानसभा अध्यक्ष थे। विधानसभा अध्यक्ष रहने के बाद धरमलाल कौशिक नेता प्रतिपक्ष बने थे। यह अलग बात है कि कौशिक पांच साल नेता प्रतिपक्ष नहीं रहे। पार्टी ने उन्हें बदल दिया था।

इतिहास की पुनरावृति

कहते हैं इतिहास की पुनरावृति होती है। छत्तीसगढ़ में 2023 का चुनाव परिणाम 2003 जैसा ही रहा। 2003 में भी हर किसी की जुबान पर कांग्रेस की सरकार बनने की बात निकलती थी। अजीत जोगी के नेतृत्व में कांग्रेस 37 सीटों में निपट गई। 2023 में भी कांग्रेस की सरकार बनने की बात होती रही। एक्जिट पोल में भी यहां कांग्रेस की सरकार की संभावना व्यक्त की गई थी, लेकिन 54 सीटों के साथ भाजपा की सरकार बन गई। वास्तविकता का आंकलन करने की जगह कांग्रेस 75 पार के नारे लगाने में जुटी रही। 2003 में भी 70 पार के ख्वाब में कांग्रेस की नाव डूब गई थी। तब अजीत जोगी के ऊपर सीबीआई तलवार लहरा रही थी। इस बार ईडी का भूत भूपेश बघेल को डरा रहा था।

हार के बाद कांग्रेसी खोल रहे फटे ढोल की पोल

रायपुर। छत्तीसगढ़ प्रदेश भाजपा प्रवक्ता केदारनाथ गुप्ता ने जारी बयान में कहा है कि भूपेश बघेल सरकार के चुनाव हारते ही अब कांग्रेस के दिग्गज नेता अपनी सरकार के फटे हुए ढोल की पोल खोल रहे हैं। अपनी पार्टी पर आरोप लगा रहे हैं। आईएएस, आईपीएस ऑफिसरों के नाम लेकर आरोप लगा रहे हैं। मंत्री रहे जयसिंह अग्रवाल ने नाम लेकर कहा है कि किन अफसरों ने जनता का दोहन किया, भ्रष्टाचार किया। वहीं काम किया, जहां भ्रष्टाचार करने का आसान अवसर हो। विनय जायसवाल अपने सह प्रभारी पर पैसे के लेनदेन का आरोप लगा रहे हैं तो बृहस्पत सिंह बता रहे हैं कि प्रदेश प्रभारी ने क्या-क्या किया। गंभीर प्रकार की जो शिकायतें सामने आ रही हैं, वह जनता के लिए पहले से ही चिंतन का गंभीर विषय थीं। कांग्रेस की सरकार ने लूट खसोट का कैसा तरीका अपनाया, यह कांग्रेस के नेता ही बयां रहे हैं। यह पार्टी डूब चुकी है। अब जनता को इस पार्टी से हमेशा के लिए संभल कर रहना चाहिए। भाजपा प्रदेश प्रवक्ता केदारनाथ गुप्ता ने कहा कि कांग्रेस के पूत के पांव पालने में ही दिखने लगे थे। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार बनते ही भूपेश बघेल की सरपरस्ती में माफिया राज के अंकुर फूटे और देखते ही देखते छत्तीसगढ़ विकास की पटरी से उतरकर हर तरह के माफिया की गिरफ्त

में आ गया। पांच साल में कांग्रेस ने छत्तीसगढ़ को उसके जन्म के पूर्व की स्थिति में पहुंचा दिया। कांग्रेस को उसके कर्मों का फल जनता ने दे दिया है। भाजपा को छत्तीसगढ़ के निर्माण और विकास के बाद अब पुनर्निर्माण का जनादेश मिला है क्योंकि कांग्रेस के कुशासन में छत्तीसगढ़ का विकास अवरुद्ध हो गया था तो भ्रष्टाचार कैसे फल फूल रहा था, यह कांग्रेस के नेता ही खुलकर कबूल कर रहे हैं।

'छत्तीसगढ़ को 10 जनपथ का एटीएम बनाकर रख दिया था, इसलिए होती थी पैसों की डिमांड'

रायपुर। छत्तीसगढ़ में बीजेपी की सरकार बनने के बाद कांग्रेस में अंतरकलह खुलकर सामने आ रही है. पार्टी के नेता आलाकमान और प्रदेश के वरिष्ठ नेताओं पर हार का ठीकरा फोड़ रहे है. जिसे लेकर अब पूर्व सीएम रमन सिंह का बयान सामने आया है. उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स (पूर्व ट्वीटर) पर बैक टू बैक पोस्ट कर कांग्रेस पर आरोपों की झड़ी लगा दी. उन्होंने पूर्व मंत्री जयसिंह अग्रवाल और पूर्व विधायक विनय जायसवाल का वीडियो भी सोशल मीडिया में शेयर किया है.

पूर्व सीएम रमन सिंह ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स में कांग्रेस पर तंज कसते हुए लिखा '5 साल कांग्रेस की सरकार ने छत्तीसगढ़ में क्या किया? आपसी खींचतान में विकास को बाधित किया, तानाशाही ढ़ंग से सारी शक्तियों को केन्द्रित कर लिया, जनादेश का अपमान किया, कलेक्टर-एसपी को ढ्क्क की नीलामी जैसे पोस्टिंग मिली, भ्रष्ट अधिकारीयों को संरक्षण मिला, गुंडों को बसाकर अपराध को बढ़ावा दिया.

पूर्व सीएम ने पूर्व मंत्री जयसिंह अग्रवाल का एक वीडियो शेयर करते लिखा 'यह पीड़ा स्वयं पूर्व मंत्री बता रहे हैं कि कांग्रेस ने छत्तीसगढ़ को किस दुर्दशा में छोड़ा है, खैर जनता ने अपना काम कर दिया है और अब छत्तीसगढ़ में फैले इस कुशासन को जड़ से उखाड़ने का काम भाजपा की सरकार करने जा रही है. पूर्व सीएम रमन सिंह ने पूर्व विधायक विनय जायसवाल के रुपए लेने के आरोप पर कहा कि पैसों की डिमांड इसलिए होती थी क्योंकि छत्तीसगढ़ को कांग्रेस ने 10 जनपथ का झरू बनाकर रख दिया था. मैं हमेशा से कहता रहा हूँ कि इस सरकार ने सिर्फ प्रदेश की तिजोरी पर डाका डाला है और अब तो यह कांग्रेसी नेता खुद बताने लगे हैं कि आखिर कैसे दिल्ली से खाली थैले लेकर इनके नेता छत्तीसगढ़ आते थे और झोली भर-भरकर छत्तीसगढ़ का पैसा लूटकर ले जाते थे.

छत्तीसगढ़/राजधानी
प्रमुख समाचार

स्वास्थ्य कर्मियों और प्रदाताओं पर होने वाले हमलों को रोकने के लिए कड़े कदम उठाना जरुरी

रायपुर। नई दिल्ली में इंडियन मेडिकल एसोसिएशन और एसोसिएशन ऑफ़ हेल्थ केयर प्रोवाइडर्स इंडिया (एएचपीआई) के संयोजन में नेशनल हेल्थ समिट का आयोजन पिछले दिनों किया गया जिसमें स्वास्थ्य प्रदाताओं और स्वास्थ्य कर्मियों पर होने वाले हमलों को रोकने के लिए उठाये जाने वाले जरुरी कदमों पर व्यापक चर्चा हुई। एएचपीआई छत्तीसगढ़ चैप्टर के महासचिव अतुल सिंघानिया ने बताया कि छत्तीसगढ़ का प्रतिनिधित्व करते हुए इस हेल्थ समिट में एएचपीआई छत्तीसगढ़ अध्यक्ष डॉ. राकेश गुप्ता शामिल हुए। समिट में आईएमए के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. शरद अग्रवाल, महासचिव डॉ. अनिल कुमार नायक, आगामी चयनित राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. आर. वी. अशोकन, एएचपीआई के पैट्रन डॉ. एलेक्जेंडर थॉमस, राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. भाबातोश बिश्वास, डायरेक्टर जनरल डॉ. गिरिधर ज्ञानी समेत देश भर के स्वास्थ्य विशेषज्ञ शामिल हुए और इस विषय पर अपनी बात रखी। डॉ. राकेश गुप्ता ने कहा कि स्वास्थ्य कर्मियों पर होने वाले हमले एक बेहद गंभीर विषय है। हमारे देश में एक मजबूत स्वास्थ्य सुविधा का ढांचा बनाने के लिए इस ज्वलंत विषय का समाधान बहुत जरूरी है। डॉ. गुप्ता ने कहा कि पूरे प्रस्ताव को दिल्ली डिक्लेरेशन का नाम दिया गया है। गहन विचार विमर्श के बाद एएचपीआई और आईएमए का केंद्रीय नेतृत्व इस प्रस्ताव को केंद्र शासन को सौंपेगा।

हॉकर की सड़क दुर्घटना में मौत, भारती श्रमजीवी पत्रकार संघ

रायपुर। राजधानी रायपुर के टिकरापारा इलाके में बीते दिनों हॉकर का काम करने वाले नाबालिग प्रियांशु निर्मलकर की कार की चपेट में आने मौत हो गई थी. मृतक के परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी. जिसके कारण वह अखबार बांटकर अपनी पढ़ाई का खर्च निकालता था. जिसे देखते हुए शनिवार को भारती श्रमजीवी पत्रकार संघ के सदस्यों ने प्रियांशु निर्मलकर के परिजनों से मुलाकात कर उन्हें सांत्वना दी और संगठन के तरफ से इस दुख की घड़ी में उन्हें सहायता राशि प्रदान की है. भारती श्रमजीवी पत्रकार संघ के सदस्यों ने प्रियांशु निर्मलकर के परिवार को आश्वस्त किया की आगे भी हर संभव सहायता के लिए संगठन उनके साथ खड़ा रहेगा। इस दुखद घटना के लिए परिवार को कानूनी सहायता भी मुहैया कराएगा। आपको बता दे की दुर्घटना में मरने वाला प्रियांशु निर्मलकर नूतन स्कूल में आठवीं कक्षा में पढ़ता था, जो हॉकर का काम कर के परिवार की आय में सहायता करता था और उसकी एक छोटी बहन हैं जो छठवीं क्लास में पढ़ती है, प्रियांशु के पिता नगर निगम की कचरा गाड़ी में सफाई कर्मचारी हैं, और उनकी मां घरों का काम कर के जीवन यापन करती हैं.

महामाया मंदिर से निकली राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के लिए अक्षत कलश यात्रा

रायपुर। रायपुर के अति प्राचीन महामाया मंदिर से श्री राम मंदिर प्रांत प्रतिष्ठा गृह संपर्क अभियान समिति द्वारा 14 नगरों के लिए अयोध्या से आया हुआ अक्षत कलश वितरण का कार्यक्रम शनिवार को किया गया। जिसका विभिन्न नगरों में भव्य स्वागत किया गया एवं शोभा यात्रा निकाली गई। इस अवसर पर अपने उद्बोधन में घनश्याम चौधरी प्रांत सह मंत्री विश्व हिंदू परिषद ने कहा कि अयोध्या में राम जन्मभूमि में भव्य राम मंदिर के निर्माण के लिए संघर्ष 500 से अधिक वर्षों तक किया गया लाखों लोगों ने प्राणों की आहुति प्रदान की आज हमारा सौभाग्य है कि हमें भव्य मंदिर में रामलला के विराजने का उत्सव मनाना है। इसके लिए समस्त हिंदू समाज का आवाहन करते हुए उन्होंने कहा की अयोध्या से आया हुआ अक्षत,राम का चित्र एवं तीर्थ क्षेत्र का पत्रक लेकर रायपुर के सभी हिंदू घरों में 1 से 15 जनवरी के मध्य सभी कार्यकर्ता जावे एवं उन्हें 22 जनवरी 2024 को निकट के मंदिर में इकट्ठा होकर 11ः00 से 1ः00 के मध्य प्राण प्रतिष्ठा समारोह में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त करें एवं सायं काल में प्रत्येक घर में दीप उत्सव कर इस ऐतिहासिक दिन को यादगार बनाएं।

25 दिसंबर को खाते में आएगी दो साल के धान बोनस की एकमुश्त रकम !

रायपुर। विधानसभा चुनाव में भाजपा की शानदार जीत के बाद अब प्रदेश के किसानों को 25 दिसंबर का इंतजार है। चुनावी घोषणा पत्र में भाजपा ने साल 2017 और 2018 के दौरान धान का बोनस के वादे को सरकार बनते ही पूरा करने का भरोसा दिया था। सत्तारूढ़ होने के बाद भाजपा से अब किसान दो साल के बोनस को लेकर उत्साहित हैं। प्रति क्विंटल 300 रुपए के अनुसार किसानों को बोनस दिया जाएगा। इस बात को आज प्रदेश के दिग्गज नेता और सीएम पद के दावेदार विष्णुदेव साय ने आज फिर से दोहराया है। विष्णुदेव साय ने कहा कि भाजपा की सरकार की पहली प्राथमिकता है कि पीएम आवास के हितग्राहियों को उनके लिए घर की व्यवस्था करना और किसानों को उनके बकाया बोनस की राशि को देना। बता दें कि भाजपा 25 दिसंबर को पूर्व पीएम अटल बिहारी वाजपेयी के जन्मदिन को सुशासन दिवस के रूप में मनाती है। बता दें कि बीजेपी के संकल्प पत्र में एकमुश्त 25 दिसंबर को राशि देने का वादा किया गया है। दो साल के बोनस के अलावा धान बेचने वाले किसानों को भाजपा ने 3100 रुपए प्रति क्विंटल के अनुसार भुगतान करने का भी वादा किया है। नई सरकार के शपथ के साथ ही किसानों को एकमुश्त प्रति क्विंटल के अनुसार उक्त रकम प्रदान की जाएगी।

कांग्रेस सांसद के ठिकानों से मिला 300 करोड़, ओपी चौधरी बोले- अपने लोगों को एटीएण बनाकर रखती है कांग्रेस

रायपुर। कांग्रेस से राज्यसभा सांसद धीरज साहू के पास से तीन सौ करोड़ से अधिक का कैश बरामद होने के मामले में भाजपा के प्रदेश महामंत्री ओपी चौधरी ने तीखी प्रतिक्रिया दी है। ओपी चौधरी ने कहा है कि कांग्रेस के लोग देश को लूटने का काम कर रहे हैं। कांग्रेस गांधी परिवार और घमंडिया गठबंधन के लोग भ्रष्टाचार के कारण ही एक होने का प्रयास कर रहे हैं ये खुद ही अपने लोगों से भ्रष्टाचार कराते हैं। ओपी ने कहा कि कि कांग्रेस अपने नेताओं को खुद एटीएम बनाकर रखते हैं। जिसके कारण धीरज साहू जैसे प्रकरण सामने आ रहे हैं। अभी तक 300 करोड का आंकडा पार हो चुका है। ऐसे लोगों को पार्टी से निष्काषित करना चाहिए कठोर कार्रवाई करना चाहिए। कांग्रेस संगठन और गांधी परिवार में नैतिकता होती तो इस मसले पर जवाब देते लेकिन वे क्या जवाब देंगे।

रायपुर जिले के किसानों से रू-ब-रू हुए मोदी, बोले

किसान रथों के माध्यम से किसानों को दी जाएगी कृषि विकास योजनाओं की जानकारी

15 दिसंबर से 26 जनवरी तक चलेगा विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम

रायपुर। इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्र रायपुर द्वारा आज यहां कृषि विभाग के सहयोग से विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम के तहत प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से जिले के किसानों का संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस ऑनलाईन कार्यक्रम के माध्यम से

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी रायपुर जिले के किसानों को संबोधित किया। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि विकसित भारत संकल्प यात्रा के अंतर्गत 15 दिसम्बर 2023 से 26 जनवरी 2024 तक विभिन्न किसान रथों के माध्यम से किसानों की बेहतरी के लिए भारत सरकार द्वारा संचालित योजनाओं, कार्यक्रमों तथा उपलब्धियों की जानकारी किसानों तक पहुंचाई जाएगी।

इस अवसर पर रायपुर सांसद सुनील सोनी ने भी कार्यक्रम में उपस्थित किसान भाईयों एवं बहनों को संबोधित किया। कार्यक्रम में धरसींवा विधायक अनुज शर्मा, कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरीश चंदेल, कलेक्टर डॉ. सर्वेश्वर भूरे, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री अबिनास मिश्रा, कृषि विश्वविद्यालय के निदेशक विस्तार सेवाएं डॉ. अजय वर्मा सहित कृषि विश्वविद्यालय एवं कृषि विभाग के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी और बड़ी संख्या में किसान भाई बहन उपस्थित थे।

रायपुर व नांदेड़ के बीच आज खेला जाएगा फाइनल मैच

रायपुर। 15 वीं सिक्ख प्रीमियर लगेज 2023 आल इंडिया क्रिकेट टूर्नामेंट के अंतर्गत शनिवार को सेमीफाइनल मैच खेले गए। पहले खेले गए सेमीफाइनल मैच में खालसा वारियर्स नांदेड़ ने चंडीगड़ सिंग को 4 विकेट से पराजित कर फाइनल में प्रवेश किया। वहीं दूसरा सेमीफाइनल शहीद भाई तारु सिंग फाउंडेशन रायपुर व सिंग ए पंजाब के बीच खेला गया जिसमें रायपुर की टीम 59 रन से जीतकर फाइनल में पहुंचने वाली दूसरी टीम बनी। फाइनल मैच रविवार को सुबह 11 बजे से एसईआरएसए क्रिकेट ग्राउंड डब्ल्यूआरएस में खेला जायेगा इसके मुख्य अतिथि समाजसेवी बलदेव सिंह भाटिया होंगे। पहले सेमीफाइनल मैच में चंडीगड़ सिंग की टीम 17 ओवर खेलकर केवल 75 रन ही बना पायी। अकेले जसक्रीत सिंग

मेहरा ने 35 रन की संघर्षपूर्ण पारी खेली। खालसा वारियर्स की ओर से गेंदबाजी करते हुए तेजपाल सिंग ने 4 ओवर में 16 रन देकर 3 विकेट व रोमी ने भी 4 ओवर में 16 रन देकर 3 विकेट लिए। खालसा वारियर्स नांदेड़ की टीम ने भी जीत के लिए 76 रन बनाते तक 17.2 ओवर खेलकर 6 विकेट खो दिए। चरणजीत सिंग ने 31 व तेजपाल सिंग ने 24 रन का स्कोर किया।

आर.एन.आई.रजि. क्र. CHHHIN/2021/80529, स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक- शशांक शर्मा द्वारा मिशन मीडिया प्रा. लि., प्रेस कॉम्प्लेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) 492001 से मुद्रित एवं 29/1110, सेवती स्मृति, आजाद चौक, रायपुर (छ.ग.) 492001 से प्रकाशित। संपादक-शशांक शर्मा, मो. 94255-20531.